औषधप्रकाश

वैध माधव दास जी

(1909 Print)

RESTORATION OF THIS RARE OLD BOOK IS DONE

BY

P N Sarin

Other compilations by

P N Sarin

1. Survey, Engineering Materials, Seismic, Termite & Pest Control
2. Right start, foundation, DPC, stone & Brickwork
3. Plaster, Finishes. Roof, Floor, Stairs
4. Steel, Reinforcement, Shuttering, Timber, Woodwork, Glazing
5. Electric Supply, Light, Air-Conditioning
6. Water supply, Sewage
7. Maintenance of Building
8. Domestic Pest Control
9. Numerals & Mensuration
10. Units of Measurements & Conversion Factor
11. Indian, British & US Units Of Measurements
12. Terms related to Business, Legal, Sports & Games
13. Abbreviation, Acronyms, Quotes
14. Sign, Symbols & Acronyms
15. Kitchen, Cooking and Upkeep
16. Cleaning and Laundry Work
17. Food Adulteration
18. Household tips (काम की बातें)
19. Gems, Astrology & Astronomy
20. Health Hygiene, Homoeopathy एवं घरेलू उपचार
21. Safety & Precautions
22. Time (समय)
23. Carom Rules (Official)
24. Dictionary of Computer Terms
25. Computer Basic Terms and Upkeep
26. Dictionary of Units of Measurements
27. Indian currency, RBI rules, how to detect Fake Currency

Antiquarian collection

28. बृहज्जातक - पण्डित महीधर शर्मा (1884)
29. लघुपाराशरी - पण्डित मदन मोहन पाठक
30. लग्नजातक एवम राशिमाला
31. औषधप्रकाश – वैध माधव दास जी (1909 Print)
32. सर्वतोभद्रचक्रम - पण्डितए मीठालाल जी व्यास (१९४० Print)
33. समुद्रशास्त्र (हस्तरेखा शास्त्र)
34. Tezi Mandi (तेज़ी मंदी), Indian & Western Astrology (extracts)

Well building hath three conditions: Commoditie, Firmenes, and Delight".

English poet Sir Henry Wotton (1568–1639)

CONVERSION TABLES

MASS/WEIGHT

खण्डी	मन	पसेरी	सेर	पाँव	छटाक	तोला	माशा	रत्ती	चावल	खसखस	CGS
1	20	160	800								7.442 quintal
	1	8	40								37.209 kg
		1	5	20	80	400	4800				4.651 kg
			1	4	16	80	960				933.1 gram
				1	4	20	240				233 gram
					1	5	60	480			58 gram
						1	12	96	768		11.63 gram
							1	8	64	512	0.9692 gram
								1	8	64	0.121 gram
									1	8	0.015 gram
			1.072	4.292	17.24	85.982	969.2	8000	64000	512000	1 kilogram

1 tola =180 grain. टंक = 4 माशा, कर्ष = 16 माशा

CAPACITY

Seer	Pali	Maund	Gallons	Litres
सेर	पाली	मन	गैलन	लीटर
1	1/5	1/40	0. 245	1.1137
5	1	1/8	1.256	5.7098
40	8	1	9.81	44.5963

LENGTH

जौं	इँच	अंगुल	फुट	बालिश्त या बित्ता	गज़	मील	कोस	CGS unit
3	¾	1						19.05 millimetre
4	1		1/12					25.4 millimetre
36	9	12	3/4	1	¼			228.6 millimetre
48	12	16	1	1-1/3	1/3			305 millimetre
144	36	48	3	4	1			914.4 millimetre
					1760	1	½	1.61 kilometre

भारतीय कालमान गणना

त्रुटि या विपल	निमेष	असु या प्राण	पल	यान या प्रहर	मुहूर्त	घटी	दिन या रात	अहोरात्र	सैकण्ड	मिनट	घन्टा
1	2								0.4		
10	20	1							4		
60	120	6	1						24		
150	300	15	2½						60		
3600	7200	360	60			1			1440	24	
7200	14400	720	120		1	2			2880	48	
9000	18000	900	150	1/3	1¼	2½			3600	60	1
27000		2700	450	1	3¾	7½		1/8	10800	180	3
			1800	4	15	30	1	½	43200	720	12
				8	30	60		1	86400	1440	24

One lunar months = 29 days, 31 ghati, 50 pal, 7 vipal.

श्रीः ।

औषधप्रकाश ।

(व्याधिहरण).

जिसमें

स्वामीदादूपंथीवैद्यमाधवदासजीने अपनी अजमाई
हुई, गुरुसे शीखी हुई, वाग्भटादि
ग्रन्थोंसे अजमाई हुई व यूनानी
हिकमतभी लिखी है.

वही

पं० रघुवंशशर्मासे शुद्ध कराय

हरिप्रसाद भगीरथजीने

"जगदीश्वर" प्रिंटिंग प्रेसमें छपवायके प्रसिद्ध किया ।

आवृत्ति २ री.

सं० १९६६, श० १८३२.

इस पुस्तकके सर्व हक प्रकाशकने स्वाधीन रक्खे हैं.

श्रीः ।

प्रस्तावना ।

सम्पूर्ण आयुर्वेदज्ञ गुणग्राही महाशयोंको विदित हो कि यह औषधप्रकाश (व्याधिहरण) नामक ग्रन्थ साक्षात् अपने नामके समानही प्रत्यक्ष गुण देनेवाला है. यह ग्रन्थ वैद्यवर स्वामी दादूपंथी माधवदासजीने अपने अजमायेहुए नुसखे तथा गुरुसे शीखे हुए नुसखे तथा वाग्भटादिग्रंथोंसे अजमायेहुए तथा यूनानी हिकमत-भी लिखकर संग्रह किया है. इस ग्रन्थके बनानेवालेने इसमें रोगों-के लक्षण आदि नहीं लिखे परंतु नाना प्रकारके साधारण तथा कष्ट-साध्य राजरोगोंकी चिकित्साविधि और उनकी दवाइयोंका एक भाण्डरूप किया है जो कि पूर्वोक्त इस ग्रन्थके नामानुसार सर्व व्याधियोंको नाश करनेवाला है. आशा है कि इस ग्रन्थसे सर्व साधारणोंका बहुत उपकार होगा. अब इसकी उत्तमता हम कहांतक लिखें ? देखनेसेही मालूम होजायगी.

ग्रंथप्रकाशक

हरिप्रसाद भगीरथजी

ठि० कालिकादेवीरोड रामवाडी मुंबई.

अथ औषधप्रकाशानुक्रमणिका ।

अथ संग्रहणीप्रकरणम् ।

अथ बवासीरप्रकरणम् ।

अथ मिश्रिताध्यायप्रारंभः।

इति औषधप्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीः ।

औषधप्रकाश (व्याधिहरण)

माधवदास वैद्यविरचित.

मंगलाचरण.

दोहा—साहिब सतगुरु संतजन, शारद गणपति जान ।
इनको वंदन करतही, पाप दोष हों हान ॥ १ ॥
दादू दीनदयालुजी, मेरे सतगुरु जान ।
उनके शरणै आयकै, वैद्यक लिया पिछान ॥ २ ॥
संग्रहीत यह ग्रंथ है, आयुर्वेदको अंग ।
करो चिकित्सा समझके, होय रोगको भंग ॥ ३ ॥

अथ ज्वरप्रकरण

वातज्वरकी चिकित्सा—कलौंजी, अजमायन, सौंफ, मुलहटी, ल्हेसुवा, बादरंजवा, (एक तरहका घास होता है), आलूबुखारा, बनप्सा, गाजवां इन सबोंको बराबर छे २ मासे लेवे फिर डेढ़पाव पानीमें चढ़ाके औटावे. आधपाव पानी बाकी रहे तब २ तोले गुलकंद मिलाके छानकर पिलावे तो वातज्वर दूर हो. यह इलाज यूनानी मतका है.

अथ पित्तज्वरकी चिकित्सा

सिहातरा ३ मासे, कासनी ३ मासे, नीलोफर ३ मासे, बनप्सा ३ मासे, उन्नाबदाने ३ मासे, खूबकला ३ मासे, मुलहटी १॥ मासे, हंसराज १॥ मासे, कासनीकी जड़ १॥ मासे, मुनक्का नग २, सौंफ १॥ मासे, गुलाबके फूल १॥ मासे इन सबोंको आधसेर पानीमें औटावे फिर ३ छटांक पानी बाकी रहे तब २ तोला गुलाबका गुलकंद

१ पाव पानी = २७८ मिली, आधा सेर पानी = ५६० मिली, १ छटाक पानी = ७० मिली

१ मासा = १ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम

मिलाके छानकर पिलावे तो पित्तज्वर, दाह, वमन, प्यास ये सब दूर होवें,यह भी इलाज यूनानी मतका है.

अथ कफज्वरकी चिकित्सा ।

मकोह ३ मासे, बनप्सा ३ मासे, जूफा ३ मासे, सौंफ ३मासे,मुलहटी ३ मासे, छोटी इलायची ३ मासे, सौंफकी जड़ ३ मासे, मुनक्का ३ मासे इनको डेढ़पाव पानीमें औटावे फिर आधपाव पानी बाकी रहे तब २ तोला गुलकंद मिलाके पिलावे तो कफज्वर जाय.

अथ सन्निपातज्वरकी चिकित्सा ।

पोहकरमूल ८ मासे,चीत ८ मासे,पीपल ८ मासे, पीपलामूल ८ मासे, सूंठ ८ मासे, शतावरि ८ मासे, देवदारु ८ मासे, गजपीपल ८ मासे, बांशाके पत्ते ८ मासे, विजयसार ८ मासे, नागरमोथा ८ मासे, लौंग ८ मासे,चिरायता ८ मासे इन सबोंको कूटके ७ पुड़िया बांधलेवे फिर १ पुड़ियाको आधसेर पानीमें औटाके आधपाव पानी रख छानकर पिलावे तो सन्निपातज्वर दूर होवे. यह दवा गुरूसे लब्ध हुई है.

अथ सन्निपातमें मृत्युंजयरस ।

साजी ६ मासे, जवाखार ६ मासे, सूंठ ६ मासे, पीपल ६ मासे, काली मिरच ६ मासे, पांचो नमक २॥ तोले, सौंफ ६ मासे,इनको कूट कपड़छान करलेवे फिर शुद्ध पारा ५ तोले, शुद्ध गंधक ५ तोले इन दोनोंकी कजली बनाकर पहले कहीहुई उन औषधोंमें मिलाके ३ दिनतक खरल करे. इसप्रकार बनाया हुआ यह रस कफप्रधानवाले सन्निपातमें अद्रकके रसके साथ ४ रत्तीप्रमाण देना चाहिये. इससे सन्निपात, पेटका दर्द, आमविकार, मंदाग्नि, बद्धकोष्ठ, वात, कफ, खांसी, श्वास ये सब दूर होते हैं.यह औषध हमारा अजमाया हुआ है.

अथ सन्निपातमें अन्य रस ।

शुद्ध पारा ६ मासे, शुद्ध गंधक ६ मासे, भूना हुआ सुहागा ६ मासे, काली मिरच ६ मासे, मीठा तेलिया ६ मासे इनोंको १ दिन-

१ पाव पानी = २७८ मिली, आधा सेर पानी = ५६० मिली, १ छटाक पानी = ७० मिली

१ मासा = १ ग्राम, १ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम

तक धतूराके रसमें खरलकर सुखाके फिर अदरखके रसके साथ १ रत्तीप्रमाण खाय तो घोरसन्निपातज्वर दूर होवे. यह पंचवक्त्रनाम रस कहलाता है. रसेंद्रसारचिंतामणि और भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ सन्निपातमें अन्य रस ।

विना शोधाहुआ मीठा तेलिया २ तोला, पारा ४ मासे, इन दोनोंको पारा मिलजाय तबतक अच्छीतरह खरलकर १ हांडीमें डाल उसकी पेंदीपर कपड़ामट्टी लगाके उस हांड़ीको सुखालेवे फिर कांचका गोला फिरी हुई दूसरी हंड़ीको या मजबूत सीसीको उसके मुखपर रख, दोनोंका मुख मिलाके कपड़मिट्टीसे लीपकर सुखा लेवे फिर चूल्हेपर चढ़ाके मंद मंद अग्निसे दो पहरतक पकावे फिर नीचे उतार शीतल कर हवाबंदमकानमें उन दोनों हंड़ियोंके मुखको खोले फिर ऊपरकी हांड़ीमें लगीहुई दवाको उतारकर सीसीमें डाल धरे फिर सन्निपातरोगवाले पुरुषको शिरके बाल मुड़ाके जरा पाछनशस्त्र लगाके इस दवाको सुईके अग्रभागमें आवे उतनी मात्रा लेकर वहां शिरमें लगावे फिर क्षणमात्रतक अंगुलीसे मसल देवे इस प्रकार करनेसे सन्निपातकी मूर्छा जाय, शरीरमें चैतन्यता होवे, सर्पके जहरसे मूर्छा हुई हो तो वहभी दूर होवे. इस रसके लगानेसे ताप चढ़जावे तो मिश्रीआदि मीठे पदार्थ खिलावे. यह सूचीभरण नामक रस योगचिंतामणि ग्रंथमें कहा है.

अथ सन्निपातमें उन्मत्तनामक नस्य ।

पारा ६ मासे, गंधक ६ मासे इन दोनोंकी कजली कर धतूराके रसमें १ दिनतक खरल करे, फिर सूंठ ३ मासे, पीपल ३ मासे, काली मिरच ३ मासे, इनको मिलाकर १ पहरतक खरल करे फिर १ रत्तीप्रमाण इस रसकी नस्य देवे तो सन्निपात दूर होवें.

अथ विषमज्वरमें रामबाणरस ।

शुद्ध पारा, शोधाहुआ गंधक, शोधाहुआ मीठा तेलिया, लौंग,

१ पाव पानी = २७८ मिली, आधा सेर पानी = ५६० मिली, १ छटाक पानी = ७० मिली

१ मासा = १ ग्राम, १ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम, १ पहर = ३ घन्टा

जायफल, सूंठ, पीपल, काली मिरच, जवाखार, इनको समान, भाग लेकर २ दिनतक खरल करे फिर १ रत्तीप्रमाण इस रसको पानके साथ देवे तो सन्निपात और विषमज्वर दूर होवें.

अथ नवीनज्वरमें रस ।

शुद्धपारा १ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग, भूनाहुआ सुहागा १ भाग कालीमिरच १ भाग, मिश्री ४ भाग, रोहितमच्छका पित्ता ३ तोला, इन सबोंको ३ दिनतक खरल करे पीछे २ रत्तीप्रमाण इस रसको अदरखके रसके साथ देवे और इस रसपर चावल, तक्र, बैंगनका शाक इनका भोजन कराना श्रेष्ठ है, और बीजना आदिसे ठंण्ढ़ा पवन करना श्रेष्ठ है. यह रस भावप्रकाशमें और चिकित्सासार ग्रंथमें कहा है.

अथ उदकमंजरीरस ।

शोधाहुआ पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध हिंगुल, इन सबोंको समान-भाग लेकर अदरखके रसमें खरल करे फिर ६ रत्तीप्रमाण इस रस-को अदरखके रसके साथ ३ दिनतक देवे तो नवीनज्वर जाय. यह-रस भावप्रकाशमें और रसरत्न ग्रंथमें कहा है.

अथ ज्वरमें शीतभंजीनामक रस ।

तबकिया हरताल, सीप इनको खरलकर इनमें नवमा भाग मीठा तेलिया मिलावे और हमारे मतमें तो मीठा तेलियाकी जगह ४ मासे नीलाथोथा मिलाते हैं, ऐसी इन औषधोंको गुवारपाठाके रसमें खरलकर सुखालेवे फिर मिट्टीके सराइयोंके संपुटमें रख गज-पुटयंत्रमें पकावे. जब ठंढा होजाय तब बाहिर निकालकर खरल करलेवे फिर १ रत्तीप्रमाण इस रसको मिश्रीके साथ प्रातःकाल खावे तो शीतज्वर दूर होवे. इसके खानेसे किसीके वमन भी हो जाता है. ऐसा यह रस भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ शीतज्वरकी चिकित्सा ।

काली मिरच ४ मासे, शुद्ध किये धतूराके बीज ६ मासे, इनको

१ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम, १ मासा = १ ग्राम,

पानीमें अच्छीतरह खरल करलेवे फिर १ रती प्रमाणकी गोलियां बांधलेवे. इस १ गोलीको ज्वरके वक्तसे ४ घड़ी पहले देवे तो शीत-ज्वर (जाड़ाका ताप जावे) यह हमारा अजमायाहुआ औषध है.

अथ ज्वरांकुश ।

घरका धुवाँ, काली मिरच, इन दोनोंको समान भाग ले निंबूके रसमें खरल करै फिर २ रत्तीप्रमाणकी गोली बना लेवे फिर १ गोली-को पानीके साथ देवे तो सब प्रकारका ज्वर दूर होवे.

अथ सर्वज्वरे अन्यज्वरांकुशः ।

६ तोले रांगाको सराईमें डालकर चूल्हेपर चढ़ाके तपावे जब गलक-र पानी होजाय तब आंवलासारगंधकको पीसकर बुरकाता रहे और कड़छीसे चलाता जाय. इस प्रकार १ घड़ीतक करनेसे यह रांग भस्म हो जावेगा. यह भस्म स्याहरंग होता है. इस भस्मको ४ रत्तीप्रमाण बतासामें डालकर खिलादेवे और ५ बतासे ऊपरसे चबालेवे. इस रसको गरमीके तापमें प्रातःकाल देवे. जाडाके तापमें ४ घडी पहिले देवे, तो दोनों प्रकारके ज्वर नष्ट होते हैं. यह औषध हमारा अजमाया हुआ है.

अथ सर्वज्वरे वटी ।

शुद्ध गंधक २ मासे, जमालगोटा २ मासे, काली मिरच २ मासे, भूनाहुआ सुहागा २ मासे, इनको पानीके संग खरलकर गोली बना लेवे. ४ रत्तीप्रमाणकी गोलीको पानीके साथ देवे तो ज्वर दूर होवे और दस्त लगें.

अथ सर्वज्वरे रसः ।

हिरणका सींग १ तोला, सावरका सींग १ तोला, सीप १ तोला, शंख १ तोला, कौड़ी १ तोला, इन सबोंको अलग अलग फूंककर राख बनालेवे फिर इस संपूर्ण भस्मकी बराबर काली मिरच लेवे और १ तोला कोहलाके बीज लेवे. इनको एकजगह खरल करलेवे फिर १ रत्तीप्रमाण इस रसको पानके साथ देवे तो सब प्रकारके ज्वर, स-

१ मासा = १ ग्राम, १ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम, १ घड़ी (घटी) = २४ मिनट

न्निपात, संग्रहणी, खांसी, श्वास, रक्तके विकार, बवासीर, संग्रहणी ये सब रोग दूर होवें.

अथ यूनानीमतसे पित्तज्वरका इलाज ।

बनप्सा ७ मासे, गावजुबां ७ मासे, उन्नाबदाने ५, मुलहटी ६ मासे, नीलोफर ७ मासे, इन सब औषधोंको ३ छटांक गरम पानीमें भिगोवे फिर मसलकर छान लेवे और तीन तोला मिश्री मिलाकर रोगीको पिलावे तो पित्तज्वर यानी गरमीका ताप जाय.

अथ दूसरा इलाज ।

स्याहतरा ६ मासे, सफेद चंदन २ तोले, उन्नाबदाने ७, गाजवां ७ मासे, इनको डेढ़पाव पानीमें औटाकर आधपाव पानी बाकी रक्खे. फिर २ तोला शहत डालकर पिलावे तो गरमीका ताप जाय.

अथ मलज्वरकी चिकित्सा ।

मुलहटी ५ मासे, जूफा ५ मासे, खूबकला ७ मासे, नीलोफर ५ मासे, ल्हेसुवा ७ मासे, उन्नाबदाने ७ इनको डेढ़पाव पानीमें औटाकर आधपाव पानी बाकी रक्खे फिर २ तोला गुलाबका गुलकंद मिलाकर छानकर पिलावे तो मलज्वर जाय.

अथ सिरशामकी दवा ।

काकड़ीके बीज ३ मासे, खीराके बीज ३ मासे, कासनी ३ मासे, बेदाना ९ मासे, नेत्रबाला ३ मासे, इनको घोटकर ३ छटांक गुलाबके अर्कमें छानकर ३ तोला मिश्री मिलाके पिला देवे तो शिरसाम् (जुखाम) जाय.

गरमीके तापमें गोलियां ।

बंशलोचन १४ मासे, मगजकद्दू ५ मासे, गेहूंका निसास्ता ५ मासे, खैरका गोंद ५ मासे, तुलमरेहा १० मासे, बेदाना ५ मासे, असल अरूसा

---

१ जितना निसास्ता बनाना हो उससे चौगुने गेहुंओंको रात्रिमें भिगो दे फिर प्रातःकाल पीसकर कल्क बनाकर कुछ जल मिलाकर छान लेवे. उसको निसास्ता कहते हैं.

१ मासा = १ ग्राम, १ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम,

५ मासे, तुसमखतमी ५ मासे, गुलखुब ५ मासे, इन दवाइयोंको कूट कपड़छानकर इसबगोलके लिहाफमें ३ मासे प्रमाणकी गोलियां बनालेवे फिर १ गोलीको खाकर ऊपरसे सरबत बनप्सा पीवै. ऐसे ५ दिन करनेसे गरमीका ताप जावे.

शिरसामके वास्ते काढ़ा ।

बहेडा ३ मासे, मुनक्का ३ मासे, स्याहातरा ३ मासे, खसूखसू ९ मासे, गिलोय ३ मासे, हरडै ३ मासे, जवाशा ३ मासे, अमलतास ३ मासे, सूंठ ३ मासे, कुटकी ३ मासे, इन दवाइयोंकी २ पुड़िया बनालेवे फिर १ पुड़ियाको डेढ़पाव पानीमें औटाके आधपाव पानी बाकी रक्खे फिर २ तोला गुलकंद मिलाके पीवे तो शिरसाम जावे.

जिसके काला मूत्र उतरता हो उसकी दवा ।

ककड़ीके बीज ५ मासे, खीराके बीज ५ मासे, कासनी ५ मासे, बेदाना ५ मासे, इसबगोल ५ मासे, कुलफा ५ मासे, इन औषधोंको घोटकर ४ मासे मिश्री मिलाकर पिलावे तो मूत्र स्वच्छ उतरे.

अथ रक्तपित्तज्वरकी चिकित्सा ।

सफेद चंदन ३ मासे, स्याहातरा ३ मासे, नेत्रबाला ३ मासे, नागरमोथा ३ मासे, विजयसार ३ मासे, मुलहटी ३ मासे, लाल चंदन ३ मासे, इन औषधोंका काढ़ाकर २ तोला शहद मिलाके पीवे तो रक्तपित्तज्वर जाय और मुखसे खून गिरता हो तो बंद होवे.

दूसरा इलाज ।

बांशाके पत्ते, धमासा, चिरायता, स्याहातरा, कुटकी, कुरंड, इनको बराबर ले काढा बनाय मिश्री डालकर पिलावेतो रक्तपित्तज्वर जाय.

श्वासकासादिपर चटनी ।

मिश्री १६ मासे, छोटी इलायची ४ मासे, सुपेद जीरा ८ मासे, मुलहटी १ तोला, सपेद चंदनका चूरा १ तोला इन औषधों-

१ मासा = १ ग्राम, १ रत्ती = ०.१२ ग्राम, १ तोला = ११.६३ ग्राम,

को कपड़छान कर घी तथा शहदमें मिलाके चटावे तो खाँसी,श्वास, हाथपैरोंका दाह, क्षयरोग ये सब दूर होवे.

अथ विषमज्वरका इलाज ।

बेदाना ५ मासे, खूबकला ५ मासे, मुलहटी ५ मासे, सौंफ ५ मासे, कासनी ५ मासे, इनका काढ़ा कर ३ तोला मिश्री मिलाके पीवे तो विषमज्वर जाय.

अथ शीतज्वरमें काढा ।

शोंफ ६ मासे, मुनक्का नग ७, नीलोफर ३ मासे, अनारदाना३ मासे, खूबकला ३ मासे, कासनी ६ मासे, अगर ६ मासे, तगर ६ मासे, गावजुबां ६ मासे, जूफा ३ मासे, मुलहटी ३ मासे इनकी ३ पुड़िया बनाके १ पुड़ियाको डेढ़पाव पानीमें औटाके ३ तोला मिश्री मिलाके छानकर पिला देवे. ऐसे ३ दिनतक करनेसे पित्तसे मिला-हुआ शीतज्वर जाय.

अथ विषमज्वरका दूसरा उपाय ।

मुलहटी २ तोला, बनप्सा २ तोला, मुनक्का २ तोला, जूफा २ तोला, गावजुबां २ तोला, हंसराज २ तोला, ल्हेसुवा २तोला,तुसम खतमी २ तोला, सफेद चंदन २ तोला, लाल चंदन २ तोला, खस्-खस् २ तोला, सफेद गोंद २५ तोला, कत्तीरा २५ तोला, निसास्ता गेहूंका २५तोला, मिश्री १शेर, इस प्रकार इन औषधोंको लेकर फिर गोंद, कतीरा, गेहूंका निसास्ता, मिसिरी, इन औषधोंको अलग रख देवे बाकी अन्य औषधोंको २ शेर पानीमें रात्रिके वक्त भिगो देवे फिर प्रातःकाल इन औषधोंका काढ़ा बनावे. आधा पानी बाकी रहे तब मिसिरी मिलाके सरबत बनालेवे. पीछे गेहूंका निसास्ता, गोंद, कतीरा इनको तवापर सेंककर पीसकर इस सरबतमें मिलादेवे. इस प्रकार बनाईहुई इस औषधको अमृतबानमें डाल धरे फिर १ तोलाभर इस दवाईको बेदानाके लुआबमें खिलावे तो विषमज्वर, मुखसे

गिरताहुआ रक्त, खांसी, कफ ये सब दूर हो जावें.

अथ ज्वर और खाँसीका इलाज.

गावजुबां ७ मासे, बनप्सा ७ मासे, खूब कला ७ मासे, सूंठ ४ मासे, नेत्रबाला ४ मासे, मुलहटी ४ मासे, इनका काढ़ा बनाकर २ तोला मिसिरी मिलाकर पिलावे तो ज्वर, और खांसी जाय.

अथ विषमज्वरमें काढ़ा ।

मुलहटी १ तोला, शौंफ १ तोला, बेदाना १ तोला, खूबकला ६ मासे,नीलोफर ६ मासे, छोटी इलायची ६ मासे, मुनक्का ६ मासे, मिसिरी ३ तोले,इन औषधोंको काढ़ा बनाकर ३ दिनतक पिलावे तो विषमज्वर जाय.

मंदाग्निआदिमें चटनी ।

बंशलोचन ३ मासे, गुलसुरख ३ मासे, रूमीमस्तगी३ मासे, मुलहटी ३ मासे, तज ३ मासे, पत्रज ३ मासे,नागकेशर३मासे,बावची ३मासे, पीपल ३ मासे, कतीरा३मासे,छीकरका गोंद ३ मासे, इनको पीस कपड़छानकर इनकी बराबर मिसिरी मिलावे फिर प्रातःकाल ६ मासे, इस औषधकी फंकी लेकर ऊपरसे सदापानी पीवे. अथवा इस औषधको शहतमें मिलाकर चाटे तो भूंख लगे ज्वर और खांसी जाय.

अथ जीर्णज्वरमें चटनी ।

गिलोयका सत६ मासे, पोदीना६मासे, पीपल ६मासे, कालींजन ६ मासे, काली मिरच ६ मासे, दालचिनी ६ मासे, मुलहटी ६ मासे, छोटी इलायची ६ मासे, चीत ६ मासे, काकड़ासिंगी६मासे, बंशलोचन ६ मासे, इन सबोंका खरल करलेवे फिर ६ मासेप्रमाण इनको शहतमें मिलाकर चाटे तो पुराना ज्वर जाय.

अथ ज्वरातिसारमें काढ़ा ।

गिलोय ३ मासे, सूंठ ३ मासे, लाल चंदन३ मासे, कूड़ाको छाल ३ मासे, बेलगिरी ३ मासे, स्याहातरा ३ मासे, धनियाँ ३ मासे, कली-

Dysentry

रा ३ मासे, नेत्रबाला ३ मासे, मोथा ३ मासे, चिरायता ३ मासे, इन्द्रजव ३ मासे, बालछड़ा ३ मासे इन औषधोंको कूटकर ३ पुड़िया बना लेवे. एक पुड़ियाको आधसेर पानीमें औटाकर आधपाव पानी बाकी रख छानकर उसमें २ मासे शौंफको पीसकर मिलाके पिलावे तो ज्वरमें उत्पन्न हुआ अतिसार जाय. ऐसे तीन दिनतक करना चाहिये. यह इलाज भावप्रकाशके मतसे लिखा है.

अथ गर्भिणी स्त्रीके ज्वरका इलाज ।

लाल चंदन २ मासे, खसखस २ मासे, मुलहटी २ मासे, धनियां २ मासे, मुनक्का नग ५, मिसिरी २ तोला, इनका काढ़ाकर पिलावे. गर्भिणी स्त्रीका ज्वर जावे. इति ज्वरप्रकरणं समाप्तम् ।

अथ अतिसारसंग्रहणीप्रकरणम् ।

रक्तातिसारकी चिकित्सा—हिंगुल ४ मासे, जायफल ४ मासे, अफीम ४ मासे, सोंठ ४ मासे, बेलगिरी ४ मासे, सांठी चावल ४ मासे, पाषाणभेद ४ मासे, इन औषधोंको पीसकर पानीमें मिलाकर गोलियां बनालेवे. फिर मूंगप्रमाण १ गोलीको सांठी चावलोंके पानीके साथ देवे तो अतिसार दूर होवे और इसपर सांठीचावलोंमें मिसिरी मिलाके खाना पथ्य है

अथ दूसरा औषध ।

शौंफ १ तोला, सफेद जीरा १ तोला, पोस्ताकी बोड़ी ६ मासे, आमकी गुठली १ तोला, छोटी हरड़ै १ तोला, इन सबोंको कुछ कूट तवापर डालके १ मासे घृतमें भून लेवे फिर इनको पीसकर इन सबोंकी बराबर मिसरी मिलाकर १ तोलाकी फंकी लेवे. ऊपरसे पानी पीवे. ऐसे ५ दिनतक करनेसे अतिसार और मरोड़ा बंद होवे.

अथ संग्रहणीकपाटरस ।

खैरसार, जावित्री, खुरासानी अजमायन, खड़ियामिट्टी, बेलगिरी, मोचरस, अफीम, मरोड़फली, कायफल, हिंगळु, पोस्ताकी बोडी, भांग,

जायफल इन सबोंको समानभाग ले पीसकर अनारमें भरदेवे फिर पुटपाक विधिसे भस्म करे फिर इन औषधियोंको चनाप्रमाण गोली दहीके संग देवे तथा पानीके संग देवे तो संग्रहणी और अतिसार जाय.

अथ रक्तातिसारकी चिकित्सा ।

रेसाखतमी ३ मासे,गावजुबां ३ मासे,अंजवार ३ मासे, सरबत सेव ४ तोला, इस प्रकार इनको लेवे फिर रेसाखतमी,और गावजुबांको ४ घड़ी पहिले भिगो देवे और अंजवारको अलग पीसे-पीछे सबको मिलाके पिलावे तो रक्तातिसार जाय-यह दवा चिकित्सा सारमें कही है.

अमलदारपुरुषके दस्त बंद होनेकी दवा.

पुराने बाजराको धोके सुखा लेवे पीछे पीसकर उसकी रोटी बना लेवे और गौके १शेर दहीको कपड़ामें बांधकर खूंटीमें लटका देवे. जब उस दहीका पानी निकलजाय तब उसके संग वह बाजराको रोटी खिलावे. ऐसा करनेसे अमलदारके दस्त बंद होते हैं.

अतिसारकी अन्य औषध ।

अफीम १ मासे लेवे और१तोला अजमानको लेकर तवापर सेंक लेवे. जब अजमानमें सुगंधी आने लगे तब अफी की छोटी छोटी डली बनाके अजमानमें डालदेवे फिर चूल्हासे उतारकर इसका पीस लेवे पीछे४रत्ती प्रमाण इसको शीतलपानीके साथ देवे तो दस्त और मरोड़ा बंद होवें.

अतिसारकी अन्य दवा ।

इसबगोल१तोला,अफीम१मासा,इनको२तोले पुराने गुड़की चासनीमें मिलाके चनाप्रमाण गोली बनालेवे फिर पानीके साथ देवे तो अतिसार बंद होवे-यहां रोगीकी तासीरको देखके छोटी या बड़ी गोली देनी.

दूसरा इलाज ।

कुँवामेंकी पुरानी ईंट ८ तोलाभर लेकर पीस लेनी पीछे पत्तोंके तरफकी मूली ८ तोला लेनी फिर इस मूलीको और पुरानी कुँवाकी ईंटको पीसकर २ तोलाकी गोली बना लेवे. फिर इस गोलीको

पानीके साथ दोनों बखत देवे तो संग्रहणी जाय और अतिसार जाय

अन्य इलाज ।

सेमलकी ओली छाल, माई गेरू, अफीम, इनको समानभाग ले पानीमें पीसकर नाभीतक पेटपर लेप करै अथवा तरवोंतक हाथोंकी अंगुलियोंमे लेप करै तो अतिसार जाय.

अब दारुण अतिसार याने जो जल पीवे वह गुदाके रास्ते निकल जाय उसका उपाय ।

पाषाणभेद ४ मासे लेना फिर उसको पीस कपड़छानकर १मासे प्रमाणको २ तोला बकरीके दूधमें मिलाके दिनमें चारदफे पिलावे तो जलसरीखा अतिसार बंद होय.

अन्य उपाय ।

अजमान२॥ तोला, मेथी४मासे, भांग २॥तोला, पोस्ता२॥तोला इन सबोंको तवापर कुछ कच्ची कुछ पक्की सेंक लेवे फिर ४ मासेकी फंकी ताजे पानीके साथ देवे तो जलसरीखा अतिसार जाय.

अन्य इलाज ।

तुसमलंगा ३ मासे, इसबगोल ३ मासे, इनकी फंकी लेकर ऊपरसे ३ तोला मिसरीका सरबत पिलावे तो अतिसार जाय.

अन्य इलाज ।

जायफल ८ मासे, पोस्ता८ मासे,लोध८ मासे सूंठ८ मासे, खांड ८ मासे, इन सबोंको बारीक पीस ३ दिनतक पानीके साथ फंकी देवे तो अतिसार जाय.

अथ अन्य इलाज ।

४ मासे रालको गायके दहीमें पिलावे तो अतिसार दूर होवे.

अथ अन्य इलाज ।

भांग १ तोला, पोस्ता १ तोला, छीकरका गोंद १ तोला, इनको

पीसकर ७ पुड़िया बना लेवे फिर १ पुड़ियाको प्रातःकाल पानीके साथ फँकावे और इसपर दही चावल खानेका पथ्य करे तो दस्त बंद होवें.

अथ ज्वरातिसारकी दवा ।

सूंठ, अतीस, चिरायता, नागरमोथा, कूड़ाकी छाल, गिलोय इनको समानभाग ले क्काथ बनाके पिलावे तो ज्वरातिसार जाय. यह भावप्रकाशमें लिखा है.

अथअतिसारमें लेप ।

बेलगिरी, आमकी गुठली, जायफल, अफीम इन सबोंको पानीमें पीसकर नाभिपर लेप करे तो दस्त बंद होवें.

इति अतिसार प्रकरणं समाप्तम् ।

अथ बवासीरप्रकरणम् ।

खूनी बवासीरकी दवा–५तोला गोंदसरीखे रसोंतको लेके और कड़ाहीमें डालकर चूल्हापर चढ़ाके पानीरूप करेक ऊपरसे २ तोला गवालियरके गेरूको बुरकाके झाड़ेप्रमाण गोली बना फिर१गोलीको तक्रके साथ देवे तो खूनीबवासीर और रक्तातिसार ये दोनो बंद होवें.

बवासीरके मस्सोंमें लगानेका तेल ।

मरीहुई छिपकलीको २ तोला तिलोंके तेलमें पकालेवे. फिर छिपकलीको निकालके तेलको सीसीमें डालधरे, इस तेलको मस्सों, में लगाकर ऊपर पीपलका पत्ता बांधे तो मस्सा दूर होवें.

अथ खूनीबवासीरकी अन्य दवा ।

शुद्ध जमीकंद २ सेर, काली मिरच ५ तोला, इसप्रकार लेकर पीछे जमीकंदको ऊखलमें कूटलेवे, फिर हलदी और काली मिरच मिलाकर इन तीनोंको खूब बारीक कूटे फिर छायामें सुखाकर इसमें २तोलाप्रमाण गुजराती इलायची मिलाकर फिर पीसे. पीछे

कपड़छान करके दोमासाकी फंकी शीतल पानीके साथ देवे तो खूनी बवासीर जाय और पेटका दर्द, अफारा, बद्धकोष्ठ, ये सब दूर होवें. इस दवाईके खानेवालेके दस्त लगें तो इस दवाके ऊपर थोड़ीसी गेहूंकी धानो चबावे.

अथ बवासीरकी अन्य दवा।

कसूंभा १ तोला ले बारीक पीस फिर १४ दिनतक शीतल पानीके साथ फंकी देवे तो बवासीर जाय.

अब बवासीरके मस्सोंमें लगानेका लेप।

१ रत्ती जंगालको मलाईमें मिलाके मस्सोंके ऊपर मल देवे पीछे अग्निका सेंक करे ऐसे तीन दिनतक करे तो मस्सा दूर होवे.

अथ बवासीरमें धूनी।

हाथीके मांसकी धूनी दशदिनतक देवे तो बवासीर जाय.

अथ अन्य दवा।

अजमानकी कोंपल १ तोला, काली मिरच १० इनको घोटकर आधपाव पानीमें पिलावे तो खूनी बवासीर जाय.

अथ अन्य इलाज।

नागकेशर ३ तोला, काली मिरच १॥ तोला, मिसिरी ४ तोला, इनको पीसकर ५ दिनतक गायके मक्खनमें मिलाकर खावे तो खूनीबवासीर जाय.

अथ छः प्रकारकी बवासीरोंपर भिलावांपाक।

भिलावाँ २ सेर लेना फिर उनकी टोपी दूरकर उनके चारचार टुकड़े करना और उनको ८ सेर पानीमें औटाना फिर डेढ़सेर पानी बाकी रहे तब उतारना फिर शीतल करके उन भिलावोंको ८ सेर दूधमें डालकर औटावे जब खोआ हो जाय तब आधसेर घी डाल कर खोआको सेंक लेवे पीछे उसमें सवासेर खांड मिलाकर हाथसे खूब

Indigestion

मल देवे ऐसे सिद्ध की हुई इस दवाको अमृत बान में डालधरै फिर २ तोला रोज खावे तो ६ प्रकारकी बवासीर जाय. इति बवासीर चिकित्सा ।

अथ मंदाग्नि और विषूचिका प्रकरणम् ।

अथ अजीर्ण और शूलमें गंधकवटी ।

शुद्ध गंधक २ तोला, चीत ८ मासे, काली मिरच ८ मासे, पीपल ८ मासे, यवक्षार ८ मासे, सेंधा नमक ८ मासे, काला नमक ८ मासे, सांभर नमक ४ मासे, इन सबोंको ७ दिनतक नींबके अर्कमें खरल करे फिर ४ मासे प्रमाणकी गोलियां लेवे पीछे १ गोलीको गरम पानीके साथ देवे तो अजीर्ण, शूल, आमका दोष, वायुका गोला, अफारा, ये सब रोग जावें. यह गंधकवटी सर्वसंग्रह ग्रंथमें लिखी है.

अथ अजीर्ण और हैजाकी दवा ।

सूंठ १२ तोला, काली मिरच १० तोला, चीत ३ तोला, सेंधा नमक १ तोला, भूनाहुआ सुहागा १ तोला, सिंगरफ १ तोला इन सब औषधोंको अच्छीतरह खरल करै और तीनबार निंबूके अर्कमें खरल करके सुखावै फिर १ रत्ती प्रामाणकी गोली बना लेवे फिर १ गोली देवे तो मंदाग्नि और विषूचिका यानी हैजारोग दूर होवे.

अथ अजीर्णआदिमें गोली ।

शुद्ध गंधक १ तोला, सूंठ १ तोला, काली मिरच १ तोला, काला नमक १ तोला, इन सबोंको निंबूके रसमें खरल करके २ मासा प्रमाणकी गोलियां बना लेवे फिर १ गोलीको हमेशा लेवे तो अन्न पचै, और क्षुधा लगै और पेटका अफारा जाय.

मंदाग्नि दूर होनेका अन्य उपाय ।

भांग ६ तोला, सफेद जीरा ६ तोला, सेंधा नमक ६ तोला, काला नमक २ तो०, सांभर नमक २ तो०, पीपल ३ तो०, काली मिरच

३ तोला,सूंठ३तोला,अमचूर आधसेर अकरकरा४तोला, इन सबोंको पीसकर अदरखके रसमें २ मासाप्रमाणकी गोलियां बना लेवे फिर १ गोलीको हमेशा खावे तो अजीर्ण जाय और क्षुधा अच्छी लगै.

अजीर्णआदिपर शंखवटी ।

अमलीका खार ४ तोले, पांचो नमक ४ तोले,इनको निंबूके रसमें खरलकर पीछे इसको खूब गरमकर इसमें चार तोला प्रमाण शंखका चूर्ण डालकर निंबूके रसमें ७ बार गेरे और अग्निपर चढ़ाता रहे फिर सूंठ,मिरच,पीपल,इनको चार चार तोलाप्रमाण डालै और हींग २ तोला,मीठा तेलिया४मासे,पारा ४ मासे,गंधक ४ मासे,ये औषधियां मिलाकर झांडीके बेरप्रमाण गोली बनावे.यह गोली संपूर्ण प्रकारके अजीर्णोंको दूर करती है और सब प्रकारके उदररोग,शूल-रोग, हैजा, बंधा, गुल्मरोग, इन सबोको दूर करती है. यह इलाज रसरत्नप्रदीपमें कहा है.

अथ विषूचिकाका यत्न ।

इकपोथिया ल्हस्सनकी गिरी ८ मासे, शुद्ध गंधक ८ मासे,सें-धा नमक ८ मासे, त्रिकुटा (सूंठ, मिरच, पीपल) दो २ तोला, भूनीहुई हींग८मासे, इन सबोंको निंबूके रसमें ५ बार पुट देवे और खरल करता रहे फिर झाँड़ीके बेरप्रमाण गोली बना लेवे पीछे १ गोलीको रोगीके वास्ते देवे तो अजीर्ण और विषूचिका दूर होवे.

अथ विषूचिकामें उत्पन्नहुए शूलका उपाय ।

जवोंका चून ५ तोला, जवाखार २ मासे, इन दोनोंको अग्निसे सिजाकर पेटपर लेप करे तो पेटका दर्द जाय.

अथ अन्य फंकी ।

छोटी इलायची ४ मासे, लौंग ४ मासे, अफीम १ मासे, जायफल १० मासे इनको पीसकर ४ मासेकी फंकी गरम पानीके साथ देवे तो हैजामें उत्पन्न हुए दस्त और छर्दि बंद होवें.

अथ हैजामें अन्य काढ़ा।

नींबकी छाल ६ मासे, करंजवाकी गिरी ६ मासे, बाँशाके पत्ते ६ मासे, ऊंगाकी जड़ ६ मासे, गिलोय ६ मासे, अजमान ६ मासे, इनको काढ़ा बनाकर पिलावे तो हैजारोग जाय.

अन्य उपाय।

कमलगट्टाकी गिरी, तगर, मुलहटी, सफेद चंदन, इनको बराबर ले काढा बनाकर पिलावे तो वमन बंद होवें.

अथ विषूचिकामें तृषाबढ़े उसका इलाज।

लौंगोंका काढ़ा करके पिला देवे तो विषूचिकामें उत्पन्नहुई दाह तृषा बंद होवे.

अथ अलसक विलंबिकाका यत्न।

साबन २ तोला, नीलाथोथा २॥ तोला, इनको जलमें पीसकर कपड़ापर लगाके १करड़ी बत्ती बना लेवे फिर उस बत्तीको गुदामें चढ़ावे तो बंधछूटे और अलसक, विलंबिका अर्थात् गुल्म, हैजा तत्काल बंद होवे.

इति श्रीमाधवदासदादूपंथीवैद्यविरचित औषधिप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे अजीर्ण, विषूचिका, अलसक विलंबिका प्रकरणं संपूर्णम्।

अथ कृमिरोगकी चिकित्सा।

बायबिड़ंग, सेंधा नमक, यवक्षार, कमीला, हरड़ोंकी छाल ये औषधियाँ समभाग लेनी फिर खरल करके कपड़छान करना पीछे ८ मासे प्रमाण इस औषधीको गौकी छाँछके साथ देवे तो पेटके कृमि दूर होवें.

अब अन्य औषध योगचिंतामणिके मतसे लिखते हैं।

बच, अजमोदा, पलासपापड़ी, हींग, कमीला, निसोथ इन औषधियोंको समानभाग लेकर चूर्ण बनावे फिर ८ मासेप्रमाण इस चूर्णकी

Worms

फंकी लेके ऊपरसे गोमूत्र पीवे. ऐसे तीन दिन तथा ५ दिन करनेसे पेटके कृमि बाहिर निकल जावें.

अथ अन्य उपाय।

गुड़का हलुवा (मोहनभोग) बनाके सायंकालसमयमें अच्छीतरह पेटभरके खावे फिर प्रातःकाल उठके कमीला ६ मासे, दही १ सेर इनको मिलाके पिलावे और दुपहरके वक्त घृत और खिचड़ीका भोजन करावे तो कृमिरोग नष्ट होवें. इति कृमिरोगचिकित्सा।

अथ पांडुरोगकी चिकित्सा।

सूंठ, मटर, तिल, गुड़, ये सब १ एक भाग लेने और पीपल ३ भाग लेनी. इनको खरलकर गोली बनाके देवे तो पाडुरोग दूर होवे. यह प्रयोग वाग्भट्टमें लिखा है.

अथ अन्य अंजन वाग्भट्टके मतसे।

हलदी, गेरू, आमला, इनको खरलकर अंजन बनाके आंखोंमें डाले तो कामला अर्थात् कमलवायु जावे.

अथ अन्य उपाय।

कुटकी ८ मासे, मिसिरी ३ तोला, इन दोनोंको मिलाकर गरम पानीके साथ अथवा ठंडे पानीके साथ सात दिनतक फंकी लेवे तो कमलवायु जावे.

अथ अन्य नस्य।

तूंबीकी हरी गिरी, कुटकी इनको पीस नस्य देवे तो कमलवायु जावे

अथ अन्य उपाय।

स्याहातरा ६ तोला, तुसमकसूस ६ तोला, कासनी ६ तोला इन तीनों ओषधियोंको २ सेर पानीमें डालकर डेढ़ तोला रेवाचिनीको पीसकर कपड़ेकी पोटलीमें बांधकर उस पानीमें छोड़देवे पीछे पानीको औटावे और हाथसे पोटलीको मसलता जावे. इसी प्रकार जब आधा पानी बाकी रहजावे तब उस क्वाथको छानकर उसमें १ सेर खांड़ मिलावे

और थोड़ासा सिरका मिलावे, फिर अग्निपर चढ़ाके कुछ जोस देकर लकड़ीसे घोटकर सीसीमें डाल धरे फिर २तोलाप्रमाण इन औषधियोंको दुगुने गुलाबके अर्कके साथ पिलावे और यथाक्रमसे बढ़ाता हुआ इस औषधिका खुराक ४ तोलातक बढ़ा देवे. इसप्रकार करनेसे पांडुरोग दूर हो और पित्तरोग मिटै. यह दवा चिकित्सासारमें कही है. इति पांडुरोगप्रकरणम् ।

अथ रक्तपित्तकी चिकित्सा ।

हरड़े ६ मासे, बांशाके पत्ते ६ मासे, मुनक्का ६ मासे इनको काढ़ाकर शहत और मिसिरी मिलाके पिलावे तो रक्तपित्त जावे और रक्तकी छर्दि तथा गरमी दूर होवे.

अथ अन्य उपाय ।

धनियां, आमला, मुनक्का (दाख), बांशा, पित्तपापड़ा, इन सबोंको समानभाग ले रात्रिको भिगो देवे फिर प्रातःकाल घोटकर पिलावे तो उपद्रवसहित रक्तपित्त जाय और गरमी मिटै. यह धान्यादिकहेम कहलाता है.

अथ रक्तपित्तमें उत्पलादि क्वाथ ।

कमलकी जड़, नेत्रबाला, धनियां, गिलोय, लालचंदन, खस, मुलहटी, इनको समानभाग लेवे. फिर २ तोला इस औषधका काढ़ा बनाकर शहत मिलाकर सायंकाल और प्रातःकाल दोनों वक्त पिलावे तो रक्तपित्त, तृषा, दाह, मुखशोष, ज्वर, ये सब दूर होवें. यह भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ नासिकामें रक्तपित्तहुआ हो उसका इलाज ।

आंवलाको घृतमें भूनकर मस्तकपर लेप करे तो नकसीरके रुधिरका बेग ऐसे बंद हो जावे कि जैसे डोलादेनेसे खेतका जल बंद हो जाता है. अथवा प्याजके रसकी नस्य देवे तो नकसीरी बंद होवे

अथ कूष्मांखंड ।

पेठाका रस ४०० तोला, गौका दूध ४०० तोला लेवे फिर ३२ तोले आंवलोंको पीसकर दूधमें मिला देवे, फिर रससहित इस दूधको चूल्हेपर चढ़ाके मंद मंद अग्निसे पकावे, जब करड़ा होके पिंडीसी बँधने लगे तब ३२ तोला मिसिरी मिलावे पीछे इस औषधको २ तोला प्रमाण नित्य खावे तो रक्तपित्त, अम्लपित्त, दाह, तृषा, कामला, ये सब रोग नष्ट हों. यह इलाज भावप्रकाशमें लिखा है. इति रक्तपित्तप्रकरणम् ।

अथ अम्लपित्तकी चिकित्सा ।

अनारका अर्क आधपाव, कासनीका अर्क आधपाव, सरबत वरदसुकरंज ४ तोला, तुरंजबीन ४ तोला, बदामरोगन ४ मासा, इन सबोंको मिलाकर प्यावे तो अम्लपित्त जाय.

अन्य इलाज ।

गुलाबके फूल ८ मासे, बनफसा ८ मासे, कासनी ८ मासे, लहेसुवा ३० आलबुखार ५ इनका काढ़ा बनाकर २ तोलाप्रमाण गुलाबका गुलकंद मिलाकर पिलावे तो अम्लपित्तरोग जाय. इति अम्लपित्तरोगकीचि०

अथ क्षयरोगकी चिकित्सा ।

अग्निरस–शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, इनकी कजली बना इन दोनोंके बराबर लोहसार मिलावे. पीछे गुवारपाठाके रसमें खरल करके गोला बनाय तांबाके पात्रमें धरके ऊपर अरंडके पत्तोंसे ढँककर २ पहरतक धूपमें धरा रक्खे, फिर ८ रात्रितक अन्नके कोठामें धरा रक्खे, पीछे निकालकर पीस लेवे, फिर इसमें सूंठ ३ मासे, पीपल ३ मासे, काली मिरच ३ मासे, हरडकी छाल ३ मासे, आंवला ३ मासे, बहेड़ा ३ मासे, इलायची ३ मासे, जायफल ३ मासे, लौंग ३ मासे, इन सब ओषधियोंको मिलाके १ प्रहरतक अच्छी तरह खरल करले फिर ३ मासाप्रमाण इस रसको शहतके साथ दोनों वक्त चढ़ावे तो श्वाससहित क्षयरोग जावे. यह इलाज शार्ङ्गधरके मतसे लिखा है.

Cough

यह रोग असाध्य होता है, इसलिये विशेष इलाज नहीं लिखा है. इति क्षयरोगचिकित्सा ।

अथ खांसीरोगकी चिकित्सा ।

ऊंगा, आक, बांशा, इन तीनोंकी लकड़ी लेके फूंकलेवे पीछे तिसको लाके पीसकर ३ मासाप्रमाण पानीमें गोली बना लेवे ३१ दिनतक इस गोलीको खावे तो ३ वर्षकी पुरानी खांसी जाय.

अथ खांसीका अन्य इलाज ।

भूनाहुआ कुचिला १ तोला, हरड़े १ तोला, काली मिरच१तोला, इनको पीसकर अदरखके रसमें मूंगाप्रमाण गोली बना लेवे, फिर १ गोली हमेसा खावे तो खांसी जाय.

अथ अन्य उपाय ।

सज्जीको ३ तोला प्रमाण लेकर १ मिट्टीके सकोरामें डालकर ऊपर आकका दूध डाल देवे. फिर उसकामुख बंद करके चूल्हापर चढ़ावे जब दूध जलजावे तब नीचे उतारकर खरलकर हरड़े ३ तोला लेकर उनको कुछ कच्ची कुछ पक्की सेंकलेवे और पीपल ३ तोला, ऊंगाकी राख ३ तोला,इन सब ओषधियोंको उसीमें एक जगह मिलाके खरल करलेवे फिर प्रातःकाल ४ मासा प्रमाण इस औषधको पानीके साथ फंकीलेवे तो खांसी, श्वास, पेटका वायु, पेटका दर्द, यह सब रोग दूर होवे,और इसपर रूखी रोटी और मोठकी दाल खाना पथ्य है.

अथ दमा–श्वासकी दवा ।

बड़ी हरड़का बक्कल ४ छटांक लेना फिर उसको पीसकर ४ सेर प्रमाण भैंसके दूधमें डालकर इसको खूब औटावे, जब दूध ३ सेर बाकी रहजावे तब जामन देके दूधको जमा देवे फिर प्रातः-काल घी निकाल लेवे पीछे उस छांछको हांडीसमेत खामकर खेतमें गाड़ देवे फिर ७ दिन पीछे उस छांछको बाहिर निकाले फिर पावभर छाछ हमेसा पिलावे तो दमाकी कुकड़ी दस्तके राहसे निकल

जावे.अथवा छर्दिके रास्ते निकल जावे पीछे२तोला प्रमाण उस घीको खिलावे तो दमा जाय.

अथ अन्य औषध ऊर्ध्वश्वासकी ।

लोहसार ८ मासा,मंडूर १९ मासा, तवाखीर १ तोला, त्रिफला १॥ तोला,त्रिकुटा १॥ तोला,तज ४ मासा,पत्रज ४ मासा,बायबिडंग४ मासा,नागकेसर ४ मासा, इलायची ४ मासा, इन ओषधियोंको कूट कपड़छान कर ४ मासाप्रमाण लेके भैंसके दहीमें मिलाके प्रातःकाल खावे तो ऊर्ध्वश्वास दूर होवे.

अथ अन्य इलाज ।

कड़वी तोंबीको लेके उसका मुख खोल लेवे. उसमें लहसिंहान कूटके भर देवे.पीछे ऊपरसे मदिरा डाल कपड़मिट्टी लगाकर गजपुट यंत्रमें फूंक देवे.फिर बाहिर निकाल ओषधियोंको पीसकर गुवारपाठाके रसमें ३ पुट देके टिकिया बनाके १ मिट्टीके सरवेमें डालके गजपुट यंत्रमें धरके फूंक देवे.पीछे बाहिर निकाल४रत्तीप्रमाण इस औषधिको पानके संग खावे तो श्वास, और खांसी दूर होवे.

अथ अन्य औषध क्षयरोगमें।

६ मासाप्रमाण मुरदासिंगीको २ घड़ीतक खरल करके सात ७ दिनतक खवावे तो क्षयरोग जाय.

इत्ति श्रीदादूपंथीमाधवदासवैद्यविरचित औषधिप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे कासश्वासरोगप्रकरणम् समाप्तम् ।

अथ स्वरभंगरोगकी चिकित्सा ।

अजमोदा, हल्दी, आंवला, चीत, यवक्षार इनको बराबर लेके खरल कर लेवे फिर ४ मासाप्रमाण इसको शतहके संग चाटे तो भयंकर स्वरभंगरोग जाय.

अथ अन्य उपाय ।

हरड़ोंकी छाल, बच, पीपल, इनको महीन पीस गरम पानीके साथ

लेवे तो क्षयरोगमें उपजाभी स्वरभंग दूर होवे. यह वैद्यविनोदमें लिखा है.

अथ अन्य उपाय ।

बहेड़ाकी छाल, पीपल, सेंधानमक, आंवला, इनको बारीक पीस गौकी छाँछके साथ अथवा गोमूत्रके साथ लेवे तो स्वरभंगरोग जाय.

अथ अन्य उपाय ।

ब्राह्मी,बच,हरड़की छाल,बांशा,पीपल,ये सब बराबर ले बारीक पीसकर ८ मासाप्रमाण इन औषधियोंको शहतके साथ लेवे तो स्वरभंग रोग जाय और बुद्धि बढ़े.यह यत्न वैद्यरहस्यमें लिखा है.इति स्वरभंगरोग.

अथ अरोचककी चिकित्सा ।

पकीहुई अमिली और मिसिरीको बारीक पीस ठंढे जलमें घोल वस्त्रमेंसे छानकर पीछे लौंग, इलायची,कपूर,काली मिरच, इनका चूर्ण मिलाके इस जलसे बारंबार कुल्ले करे और मुखमें रक्खे तो अरोचक नहीं होवे. और पित्तशांत होवे, यह भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ अन्य इलाज ।

आधसेर खांडकी चासनी बनाकर आधपाव बूका मिलाके औटावै. दो तीन उफान आ लेवें तब इसको नीचे उतारकर सीसीमें डाल फिर इस सरबतको ५ तोलाप्रमाण नित्य पीवे तो अरुचि व छर्दि ये सब रोग दूर होवें. यह चासनी मिट्टीके पात्रमें बनानी और सरबत सरीखी पतली बनानी चाहिये.

अथ दाड़िमादिचूर्ण ।

अनारदाना २ तोला, मिसरी २ तोला, सूंठ १ तोला, काली मिरच १ तोला, पीपल १ तोला, तज २ तोला, पत्रज २ तोला इन सबोंको बारीक पीसलेवे फिर १० मासाप्रमाण हमेसा खावे तो अरुचि जाय. इति अरुचिरोगकी चिकित्सा ॥

अथ छर्दिरोगकी चिकित्सा ।

सूंठ, ४ मासा, इलायची४ मासा, लौंग४ मासा, अगर ४ मासा और बिहीका रस आधसेर लेवे और पावभर सहत लेवे फिर पूर्वोक्त ओषधियोंको पीसकर, रस और शहतमें मिलाकर अग्निपर चढ़ाकर औटावे फिर आधा बाकी रक्खे पीछे डेढ़पाव खांड मिलाकर चासनी बना लेवे फिर कस्तूरी ६ रत्ती, केशर ६ रत्ती, मस्तंगी ६ रत्ती, इनको थोड़ेसे पानीमें खरल करके इस औषधमें डालकर दो तीन उफान आवे ऐसा जोस देवे. इस प्रकार सिद्ध कीहुई इस औषधको १ तोलाभर लेवे तो वायुकी तथा कफकी छर्दि दूर होवे.

अथ अन्य उपाय ।

दरियाई नारियलकी गिरी, पपीता, जहरमोहरा इन ३ ओषधियोंको गुलाबके अर्कमें घिसकर पिलावे तो तृषा और छर्दि जावे.

अथ अन्य रस ।

शुद्ध पारा, शोधाहुआ गंधक इनकी कजली कर अलग रख देवे और बेरकी गिरी, कपूर, लौंग, तज, पत्रज, छोटी इलायची, धानकी खील, मोथा, छोटी हरड़े, अगर, पीपल, इन ओषधियोंको समान भाग ले अच्छीतरह खरल कर पारा और गंधककी कजलीमें मिलाके फिर चंदनके रसमें १ पहरतक खरल करे १ फिर मासाप्रमाणकी गोली बना लेवे. इस गोलीको शहतके संग तथा काली मिरचके संग खावे तो महाबल छर्दि जाय. इति छर्दिरोग संपूर्ण ॥

अथ दाह और तृषाकी चिकित्सा ।

खट्टा और मीठा अनारका रस १ सेर लेना फिर डेढ़पाव खांड डालकर चासनी करके सरबत कर लेवे फिर तीन तोला सरबत आधपाव पानीमें मिलाकर पिलावे तो तृषा दाह दूर होवे.

अथ अन्य सरबत चंदनका ।

सफेद चंदन ७ तोला लेकर बुरादा बनाकर २ दो सेर गुलाबके अ-

केमें ८ पहरतक भिगोवा रक्खे. फिर औटाकर आधा बाकी रक्खे. पीछे सेरभर मिसिरी मिलाके चासनी बना सरबत बनालेवे. इस सरबतको जलमें मिलाके पिलावे तो दाह,तृषा, पित्तका विकार,चित्तभ्रम,दिलका बिगड़ना ये सब रोग दूर होवें.इति दाह-तृषा चि॰संपूर्ण।

अथ मूर्छारोगकी चिकित्सा।

मुनक्का ६ मासे, अनारदाना ६ मासे, आंवला ६ मासे,धानकी खील ६ मासे, कमलकी जड़ ६ मासे, इनका काढ़ा बनाकर २ तोला मिसिरी मिलाके पिलावे तो मूर्च्छा तथा दाह,तृषा दूर होवें.

अथ मूर्छारोगका अंजन।

सेंधा नमक २ मासे, काली मिरच२मासे, पीपल२मासे,सिरसके बीज २ मासे, बच २ मासे मनशिल २ मासे, इनको गोमूत्रमें २पहरतक खरलकर पीछे बत्तीसी बनाके सुखा लेवे फिर पानीमें घिसकर अंजन करे तो मूर्छा जाय, शरीरमें चेष्टा होवे.

अथ अन्य नस्य।

मनशिल ३ मासा, काली मिरच ३ मासा, बच ३ मासा, सेंधा नमक ३ मासा, इनको पीसकर हुलास देवे तो मूर्छा दूर होवे. इति मूर्छारोग चि॰ संपूर्ण।

अथ मदात्ययरोगकी चिकित्सा।

काला नमक ८ मासे, अमलबेंत ८ मासे, इमली ८ मासे, काली मिरच ४ मासे, इलायची ४ मासे, दालचिनी ४ मासे, मिसिरी २ तोला इन सबोंको पीसकर ६ मासे इसकी फंकी देवे तो मदका विकार जाय. इति मदात्ययरोगः।

अथ उन्माद (मृगी) रोगः।

उस्तखदूस १॥ तोला, उद्सलीब १॥ तोला, हंसराज १॥ तोला, सौंफ १० मासे, बनप्सा १० मासे, गाजवां १० मासे, मुलहटी १०मासे गुलाबके फूल१०मासे, पोस्तवेष किरफस१०मासे,तुसमख-

Epilapsy

तमी१०मासे, पिस्ते १५,मुनक्का (दाख) १५,इन सबोंको कूटकर २ सेर पानीमें औटावे आधा पानी बाकी रहे तब नीचे उतारकर सेरभर मिसिरी मिलाके चासनी बना लेवे फिर इस सरबतको रोज पिलावे तो उन्मादरोग, मृगीरोग, कर्णरोग, बवासीर, ये सब दूर होवें.

अथ मृगीरोगमें रस ।

अफीम १ तोला लेकर ८ तोले अदरखके रसमें खरल कर फिर शुद्ध कुचिला ८ मासे, काली मिरच १ तोला, उसीमें डालकर सबको अच्छीतरह खरल करके १ रत्तीप्रमाण गोली बना लेवे.फिर १गोली हमेस खावे तो मृगी जावे. और वायुरोग, कुब्जवायु, अकडवायु, धनुष्वायु, हाथ पावोंको कंपवायु, अपतानकवायु, विषूचिका, अरुचि ये सब दूर होवें.

अथ मृगीरोगमें हुलास ।

धनत्रीकी जड़ ४ मासा, सूंठ ४ मासा, पीपल ४ मासा,विंदा-लडोड़ा ४ मासा, काली मिरच ४ मासा, इन ओषधियोंको खरल करलेवे पीछे. इस औषधको कागजकी पुटलीमें डालकर पुटलीमें नाक लगाके दूसरा आदमी पुटलीको फूंकमारके नस्य चढ़ा देवे. ऐसे करनेसे मृगीरोग जाय. ऐसे ५ तथा ७ बार करनेसे मगजमें उत्पन्न हुए काले मुखके लट (जीव) निकल पड़ें, और मृगीरोग दूर होवे.

अथ मृगीरोगमें अंजन । कबूतरकी बीट ६ मासे, गरुड (नीलटांच) की बीट ६ मासे, मनशिल ६ मासे, इनको गोमूत्रमें पीसकर आँखोंमें अंजन डाले तो मृगीरोग जाय और शरीरमें चैतन्य होवे. इति मृगीरोग तथा उन्मादरोगकी चिकित्सा समाप्त ।

अथ वातरोगकी चिकित्सा ।

वातरोगमें विषगर्भतैल—धतूराका रस १ सेर,नींबके पत्तोंका रस १ सेर,सिरसके पत्तोंका रस१सेर.जलभांगरेका रस१सेर, कटेहलीका रस १सेर, सेंहजनाके पत्तोंका रस १ सेर इन सबोंको इकट्ठाकर कढ़ाईमें

डाल देवे. फिर तिलोंका तेल ३ सेर, अरंडीका तेल १ सेर, सिरसमका तेल १ सेर, आकका दूध आधसेर इनको मिलाकर फिर जायफल २ तोला, मीठा तेलिया २ तोला, काली मिरच २ तोला, कूट २ तोला, रास्ना २ तोला, कायफल २ तोला, अफीम २ तोला, सूंठ २ तोला, इनको पीसकर उसी कढ़ाईमें डालकर कढ़ाईको चूल्हेपर चढ़ाके मंद मंद अग्निसे तेलको पकावे. जब सब रस जलजावे और तेलमात्र बाकी रहजावे तब नीचे उतारकर उसमें मीठा तेलिया २ मासे, पीसकर मिला देवे और कड़छीसे हला देवे. पीछे इस तेलकी मालिश करे तो अर्धांगवायु, अकड़वायु, रांगणवायु कंपवायु, कटि और पीठका वायु पंगुवायु, शिरकी वायु, ये सब रोग दूर होवें.

अथ अन्य तैल ।

कौड़ियालोबान ५ तोला लेकर गोमूत्रमें खरल करना. पीछे उसकी टिकिया बनाकर सुखा लेना. पीछे पातालयंत्रके राहसे इसका तेल निकाल लेवे. फिर २ रत्तीप्रमाण इस तेलको पानके संग खिलावे तो हाथ पावोंका वायु लकवावायु इत्यादि शीघ्रही अच्छे होवें. यह यूनानी मतका तेल है.

अथ अन्य तैल ।

कुटकी १ छटांक, मीठा तेलिया १ छटांक, कलौंजी १ छटांक, मालकांगनी २ तोला, धतूराके बीज २ तोला, पीपलामूल २ तोला, अकरकरा २ तोला, इनको कूटकर २ सेर पानीमें दो दिनतक भिगोया रक्खे पीछे कड़ाहीमें डालकर औटावे फिर औटानेके समय जायफल २ तोला, जावित्री २ तोला, लौंग २ तोला, अफीम २ तोला, इन ओषधियोंको पीसकर मिला देवे फिर तीन पाव पानी बाकी रहे तब इस क्वाथको नीचे उतार उसमें अरंडीका तेल तीन पाव मिलाकर, अग्निपर चढ़ाके जब वह पानी जलजाय और तेलमात्र बाकी रहे तब उतारकर इस तेलकी मालिश करे तो अर्धांगवायु और ८४ प्रकारके वायु सब दूर होवें.

अथ जायफलादि पाक ।

आधसेर जायफल लेके उनके ४ चार टुकड़े बनावे. पीछे गौके २ सेर दूधमें इन टुकड़ोंको डालके खोआसा करलेवे फिर उसमें गौका घृत आधपाव डालकर उस खोवेको सेंक लेवे फिर बंशलोचन १ तोला, शालिम मिसिरी १ तोला, इन्द्रजव १ तोला, खरैहटीके बीज १ तोला, मोचरस १ तोला, बेलका गूदा १ तोला, चिरौंजी १ तोला, गोला १ तोला, बादाम १ तोला, अखरोटकी गिरी १ तोला, किस्मिस् १तोला, मुनक्का (दाख) १ तोला, तालमखाना २ तोला, छुहारा ६तोले, चोपचिनी४तोले, सेमलकी मुसली ४ तोले आसगंध ४ तोले, स्याह मुसली २तोले, सफेद मुसली २ तोले, लाल चंदन१तो०,सफेद चंदन१ तोला, देवदारु १ तोला, सौंफ १ तोला, धनियां१ तोला, दोनों जीरा २ तोला, तज १ तोला, मैदालकड़ी १ तोला, तेजपात१तोला, अकरकरा१तोला, रास्ना१तोला, खुरासानी अजमान १तोला, बच१तोला, कुलींजन १ तोला, कूट १ तोला, काली मिरच१तोला, पीपल१तोला, हरडैकी छाल१तो०, बहेड़ा १ तो०, छोटी हरड़ै १ तो०, आंवला१ तो०, केशर१ तो०, अजमान२ तो०, लोध१तो०, इसबगोल १ तो०, सनाह १ तो०, सेमलके बीज १तो०, ब्रह्मदंडी१तो०, मुलहटी १ तो०, अमलतास१तो०, शतावरि १ तो०, मुसक१तो०, इन सबको कूट कपड़छानकर पीछे शहत ४ सेर लेके, कड़ाहीमें डालकर इन सब औषधियोंका चूर्ण उस शहदमें डालकर, मंद मंद अग्निसे पकाकर, हलुवासा बना लेवे. और पूर्वोक्त उस खोवेको भी मिलादेवे फिर १ तो० गुलाबका अँतर मिला देवे. इस प्रकारसे किये हुए इस पाकको पांच मासाप्रमाण हमेश खिलावे. अथवा जठराग्निके बलाबलके अनुसार कमज्यादा खिलावे. इसको नित्य सेवन करै तो अर्धांग वात, हाथपैरोंकी शूल, अकड़बाय, कंपबाय,आमबाय,शीतांगबाय,हड़फूटन,८प्रकारके ज्वर,१२ प्रकारके

सन्निपात, ये सब दूर होवें और पांडुरोग,संग्रहणी,कामलारोग,अतिसार, नेत्ररोग, शिरोरोग, दिलहौलपना, खांसी, क्षयरोग, उदररोग, नासारोग, कर्णरोग,दंतरोग,स्त्रीकी योनिके रोग,ये सब रोग दूर होवें और इसके खानेसे बांझ स्त्रीके पुत्र होवे. और ४ प्रकारके नपुंसक अच्छे होवें.यह जायफलादिपाक अंजीलफरासीस ग्रंथके मतसे लिखा है.

अथ रांघण वायुकी दवा ।

काली मुसली १ तोला, असगंध १ तोला, सूंठ १ तोला, सिंहाड़ा १ तोला,बेलगिरी १ तोला,कौंचके बीज १ तोला,मिसिरी ६ तोला, इनको पीसकर १० दिनतक फंकी देवे तो रांघणवायु जावे.

अथ गठिया वायुमें जुलाब ।

सनाह २ तोला,निशोथ २ तोला, हरड़ोंकी छाल २ तोला, रेवचिनी २ तोला,छोटी हरड़े२तोला, खांड़ २ तोला,शहत ६ तोला, इन ओषधियोंको पीसकर शहतमें मिलावे, पीछे २ तोला प्रमाणकी गोली बनावे. पीछे १ गोलीको गरम पानीके साथ हमेशा खावे तो गठिया वायु जाय. इति श्रीमाधवदासवैद्यविरचित्त औषधप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे वातरोगचिकित्सा समाप्ता.

अथ ऊरुस्तंभकी चिकित्सा ।

५ मासे गूगलको गोमूत्रके साथ १५ दिनतक हमेसा लेवे तो ऊरुस्तंभ रोग जावे.

अथ अन्य उपाय ।

सूंठ, पीपल, शिलाजीत, गूगल, इन सब ओषधियोंको ४ मासे प्रमाण गोमूत्रके संग खावे तो ऊरुस्तंभ रोग जावे.

अथ अवलेह ।

त्रिफला ३ तोला, त्रिकुटा ३ तोला, पिपलामूल १ तोला, इनको पीसकर शहतमें चटावे तो ऊरुस्तंभ रोग जावे. यह आत्मप्रकाश ग्रंथमें लिखा है ॥ इति ऊरुस्तंभरोगकी चिकित्सा.

अथ आमवातकी चिकित्सा ।

भावप्रकाशके मतसे महारास्नादिक्काथ-रास्ना, अरंडकी जड़, बांसा, धमासा, कचूर, देवदारु, खरेहटी, नागरमोथा, अतीश, हरडे, गोखरू, अमलतास, सौंफ, धनियां, शांठी, आसगंध, गिलोय, पीपल, मिला, शतावरि, बच, चव्य, छोटी कटेहली, बड़ी कटेहली इन सब ओषधियोंको समानभाग लेवे और रास्नाको एक ओषधिसे तिगुनी लेवे फिर इनका काढ़ा कर आठवा हिस्सा बाकी रक्खे. पीछे इस क्काथमें सोंठका चूर्ण मिलाके पीवे तो संपूर्ण वातरोग दूर होवें और आमवातमें यह क्काथ बहुतही उत्तम है. और पक्षाघात, अर्दित, कंपवायु, संधिगतवात, जानु, जंघा, अस्थि, इनमें रहनेवाला वात, गृध्रसी वात, हनुग्रह, उरुस्तंभ, वातरक्त, क्रोष्टुशीर्ष, हृदयरोग, और स्त्रियों के गर्भको सुखदेनेवाला है. यह महारास्नादि क्काथ पहिले ब्रह्माजीका रचाहुआ है, इसवास्ते बहुत उत्तम गुणवाला जानना. इति आमवातकी चिकित्सा ।

अथ वातरक्त तथा कुष्ठरोगकी चिकित्सा ।

मंजीठ, हरडे, बहेड़ा, आंवला, बच, दारु हल्दी, कुटकी, गिलोय, नींबकी छाल, इनको समानभाग लेकर कूटकर धरदेवे फिर १ तोला प्रमाण इसका काढ़ा बनाकर पिलावे तो वातरक्त, कुष्ठ फोडा, पांव-मंडल, खाज, विसर्प, ये सब रोग दूर होवें.

अथ कुष्ठ और रक्तपित्तकी चिकित्सा ।

सोमल १ तोला, कलमी सोरा ६ मासे, तवाखीर ६ मासे, बड़ी इलायची ६ मासे, थोहरका दूध २ तोला, तिधारा थोहरका दूध २ तोला, नींबके पत्तोंका रस २ तोला, गवारपाठाका रस २ तोला, इन सबोंको एक मिट्टीके पात्रमें संपूर्ण ओषधियोंसमेत डाले फिर खाम लगाके इसका मुख बंद करे. ऊपर अच्छीतरह कपड़मिट्टीका लेप करदेवे. फिर घाममें सुखाके गजपुटयंत्रमें धरके इसको भस्म कर लेवे. पीछे इस भस्मको बाहिर निकाल, एक चावल प्रमाणको पानके साथ हमेशा २१

दिन तथा ४० दिन खावे तो गलत्कुष्ठ, रक्तविकार, सुनबहरी, सुरुखमंडल, ये सब विकार दूर होवें. इसपर मूंगकी दाल और गेहूंकी रोटी तथा घृत यह वस्तु खाना पथ्य कहा है.

अथ श्वेतकुष्ठमें लेप ।

पारा ८ मासे, गंधक ४ मासे, मुरदासिंही ४ मासे, गौका घृत १ तोला, इन ओषधियोंको कड़ाहीमे डालकर नींबके सोंटेसे ४ दिनतक घोटे. पीछे सींक भरके सफेद दागपर लगावे तो श्वेतकुष्ठ दूर होवे.

अथ अन्य लेप ।

चीतकी छाल २ तोला, आककी जड़ २ तोला, बावची २ तोला, इनको कपड़छानकर बासी पानीके संग लेप करे तो श्वेतकुष्ठ जाय.

अथ अन्य दवा खानेकी ।

आंवलासारगंधक २ तोला, सुहागा २ तो॰ इन दोनोंको पीसकर १ कोरी हांडीमें डाल मुख बंद कर कपड़मिट्टी लगाकर गजपुटयंत्रमें फूँककर भस्म बना लेवे. पीछे बाहिर निकालकर इसमें मेहँदीके फूल पावभर, कोरी खांड पावभर इनको खरल करके मिला देवे फिर ८ मासे प्रमाण इन ओषधयोंको पानीके संग हमेशा खावे तो कुष्ठ, सुनबहरी ये सब दूर होवें. इस औषधको खाके उसी समय भोजन कर लेवे, नहीं तो तत्काल छर्दि हो जाती है.

अथ भिलावाँपाक ।

१ सेर भिलावाँ लेकर उनकी टोपी अलग करके फिर २० सेर पानीमें औटावे. पीछे २ सेर पानी बाकी रहे तब नीचे उतारकर पानीको निकाल डाले और भिलाओंको लेकर ४ सेर दूधमें औटावे. जब दूध जलजाय तब पावभर घीमें भिलावोंको अच्छीतरहसे पका लेवे और भिलावोंको कूटकर हलवासा बना लेवे पीछे उसमें रतनजोत २ तो॰, इलायची १ तो॰, दालचिनी २ तो॰, लौंग २ तो॰, जावित्री २ तो॰, केशर १ तो॰, कस्तूरी ६ मासे, तज १ तो॰, तेजपात १ तो॰,

काकड़ा सींगी १ तोला, सूंड १ तोला, जंगी हरड़े १ तो०, बड़ी हरड़े १ तो०, आंवला १ तो०, काली मिरच १ तो०, पीपल १ तो०, सौफ १ तो०, धनियाँ १ तो०, काला जीरा १ तो०, सफेद जीरा १ तो०, कलौंजी १ तो०, चंदन ४ तो०, काले तिल १तो०, इन सबोंको पीसकर कपडछान कर लेवे फिर १ सेर सहत लेके उसको जरा अग्निपर चढ़ाके औटा लेवे. तिसमें, ये सब दवा और भिलावाँपाकको अच्छीतरह कडछीसे चलाकर मिलावे.इसप्रकार सिद्ध किये हुए इस पाकको ५ मासाप्रमाण हमेसा खिलावे तो गलत्कुष्ठ, रक्तमंडल, दाद,रक्तविकार,अन्यसंपूर्ण कुष्ठ,वातव्याधि,शिरोरोग,नेत्र-रोग ये सब दूर होवें. यह भिलावाँपाक अंजीलफरासीसमें लिखाहै.

अथ अन्य उपाय ।

त्रिकुटा (अँवरा, हरड़े, बहेडा), त्रिफला (सोंठ, मिर्च, पीपल), तिल, भिलावाँ, घृत, शहत, मिसिरी इनको समानभाग लेके गोलियां बनाकर खावे तो कुष्ठरोग दूर होवे. सप्तसमा- नाम-वाली ये गोलियां रसायन हैं. यह वाग्भट्टमें लिखा है.

अथ अन्य उपाय ।

पारा १ तोला,गंधक १ तोला,नीलाथोथा १ तोला, इन सबोंको लोहेकी कड़ाहीमें डालकर लोहेकी मुसलीसे १ दिनतक खरल करे पीछे १२तो० गौका घृत डालके ३ दिनतक खरल करे फिर इस दवाको शरीरमें लगावे तो पामा, खाज, विस्फोटक, चर्मदल, इत्यादि कुष्ठरोग दूर होवें.

इति श्रीदादूपंथी वैद्य माधवदासविरचित औषधप्रकाश(व्याधि-हरण)ग्रंथे कुष्ठरोगचिकित्सा समाप्ता ॥

अथ शूलरोगप्रारंभः ।

काला जीरा आधसेर लेना फिर उसको आठपहरतक सिरकामें भिगो देना. पीछे छायामें सुखा लेना.फिर इसको घीमें भून लेवे. पीछे

सूंठ, पोदीना, खुरदावे, ये तीन औषधियां ३ छटांक, सेंधानमक ३ तो०, पीपल आधपाव, सहत आधसेर लेना. फिर यह ले, शहतको अग्निपर चढ़ाके कुछ जोस दे लेवे और ये संपूर्ण दवा कूट कपड़छान कर उसमें मिला देवे. फिर ८ मासे प्रमाण इस औषधको गरम पानीके साथ खावे तो वायुकी शूल और कफकी शूल नष्ट होवे. यह चिकित्सासार ग्रंथमें लिखा है.

अथ सरबतदीनार पित्तशूलपर ।

गुलाबके फूल ८ मासे, कासनी ८ मासे, पोस्तवेष कासनी ४ मासे, गाजवां ४ मासे, कसूस ४ मासे, इनको तीनपाव पानीमें औटावे फिर डेढ़पाव पानी बाकी रखकर नीचे उतारकर छान लेवे फिर इसमें आधपाव खांड़ डालकर चासनीसी बनाकर सरबत बना लेवे. फिर इस सरबतको पानीमें मिलाकर पिलावे और पिलाते समय इस सरबतमें रेवचिनी४ मासे गुलाबका अर्क४तोला,इनको मिला देवे.इसप्रकार पिलानेसे पित्तका शूल दूर होवे,और तृषा कबजियत दूर होवे.

अथ अन्य उपाय.

बड़ी हरड़ाकी छाल ६ मासे, लौंग १ मासा, सेंधा नमक ३ मासे इनको औटाकर पिलावे तो शूल जाय. इति शूलरोगकी चिकित्सा.

अथ उदावर्तकी चिकित्सा ।

इच्छाभेदीरस ।

पारा, गंधक, सुहागा, काली मिरच, सूंठ, इनको समान लेवे. और सोधाहुआ जमालगोटा इन सब औषधियोंके बराबर लेवे.पीछे चूर्ण करके ३ रत्तीभर इस चूर्णको खांड़में मिलाकर शीतल पानीके साथ लेवे तो उदावर्त तथा मलदोष और अफारा दूर होवे.इति उदावर्तचिकित्सा ।

अथ गुल्मरोगकी चिकित्सा ।

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला, इनकी कजली बनाकर

उसमें हरड़ोंकी छाल १ तोला, पीपल १ तोला, इनको भी खरल करके मिला देवे.फिर इन सब औषधियोंको एक जगह अच्छीतरह एक दिनतक थोहरके दूधमें खरल करै. फिर १ पुट अमलतासके रसकी देके खरल करै.पीछे एक मासाप्रमाणकी गोलियां बना लेवे. फिर १गोलीको अमलीके रसके संग हमेस खावे तो रक्तका गुल्म जाय.

अथ अन्य रस ।

आकके फूल आधसेर लेकर उनको सेरभर पानीमें औटावे. फिर आधपाव पानी बाकी रखे. पीछे उसमें पीपलामूल १ तोला, पीपल १ तोला, अककरा १ तोला, लौंग १ तोला, इनको उन फलोंसहित अच्छीतरह खरल कर लेवे. पीछे झाँड़ीके बेरप्रमाण गोली बना लेवे. फिर १ गोली प्रातःकाल १ सायंकाल गरम पानीके संग खावे तो गुल्म रोग और तापतिल्ली, दूर होवें. इति गुल्मरोगकी चिकित्सा ।

अथ प्लीहा (तापतिल्ली) तथा उदररोगकी चिकित्सा ।

गुवारपाठाका रस ५ सेर, अदरखका अर्क ३ सेर, सूंठ १ छटांक, पीपल १ छटांक, काली मिरच १ छटांक, बड़ी हरड़ोंकी छाल १ छटांक,बहेड़ा १ छटांक, आंवला १ छटांक, बायबिड़ंग पावभर, इनको पीसकर उस रसमें मिलाकर एक हांड़ीमें डाल उसका मुख बंद करके एक महीनातक खेतकी जमीनमें गाड़ रक्खे. फिर बाहिर निकालके ४ तोला नित्य पीवे तो तापतिल्ली, तथा उदररोग दूर होवें.

अन्य दवा ।

फिटकड़ी आधपाव, काला नमक आधपाव, यवक्षार आधपाव,तेलिया सुहागा आधपाव, नौसादर आधपाव,विड नोन आधपाव,कचेरी नमक आधपाव, आकके पत्तोंकी राख आधपाव, सूंठ आधपाव, काली मिरच आधपाव, बायबिड़ंग आधपाव, अजमोदा आधपाव, इन सब औषधियोंको बारीक पीसकर १ चिकनी हांड़ीमें डाल धरै. फिर उसमें निंबूका अर्क अच्छा विशेष डाल धरै. पीछे हांड़ीका मुख

बंद करके धरतीमें गाड़ देवे. फिर १५ दिनमें इसको बाहिर निकाल-कर ६ मासेप्रमाण इस रसको पिलावे. ऊपरसे काले बैलका मूत्र अथवा गरम पानी पिलावे. इस प्रकार करनेसे यकृत, तिल्ली, गोला, कलेजेका वायु, उदररोग, ये सब दूर होवें.

अथ हृदयरोगकी चिकित्सा ।

हिरणके सींगको पुटपाक करके भस्म करे, पीछे गौके घृतके साथ खावे तो हृदयरोग जाय, और शूलरोग जावें.

अथ मूत्रकृच्छ्रकी चिकित्सा ।

मूलपत्रआदि पंचांग समेत गोखरू १ सेर लेना, उसको ५ सेर पानीमें औटावे. सवासेर पानी बाकी रक्खे. पीछे छानकर उसमें आधसेर खांड मिलाकर लेवे फिर सूंठ ५ तो०, काली मिरच ५ तो०, पीपल ५ तो०, यव-क्षार ५ तो०, नागकेशर १ तो०, जायफल ५ तो०, छोटी इलायची ५ तो०, खीराके बीज ५ तो०, इनको पीस कपड़छान कर, उसमें मिला देवे. पीछे इस औषधको चिकने बर्तनमें धरै और २ तो० प्रमाण हमेसा खावे तो मूत्रकच्छ्र, पथरी, मूत्राघात, मधुप्रमेह, ये सब रोग दूर होवें.

मूत्रावरोधकी चिकित्सा ।

मगजकद्दू, किरफ, खसखस, तुसमखयारेन, कतीरा, मुलहटीका सत ये सब औषधियां २० तो० प्रमाण लेवे और खुरासानी अजमान २ तो० प्रमाण लेवे, इन सब औषधियोंको पीसकर चूरन बनाकर इस चूर्णकी बराबर खांड़ मिलावे पीछे १ तो० प्रमाण इस चूर्णको हमेसा खावे और इसके ऊपर खसखसके सरबतका अनुपान करे तो मूत्रावरो-धरोग दूर होय.

अथ अन्य उपाय मूत्रावरोधका ।

सरबत बनप्सा ४ तो०, गुलाबका अर्क आधपाव, इनको मिलाके पिलावे तो मूत्रावरोधरोग दूर होवे.

अथ अन्य उपाय.

सोरा ८ मासे, यवक्षार ८ मासे, इन दोनोंकी फंकी लेके ऊपरसे गोमूत्र पीवे तो मूत्रावरोध जाय.

अथ अन्य उपाय ।

पेठाकी गिरी १ तो०, मिसिरी ३ तो०, गौका दूध पावभर इनको पिलावे तो मूत्रावरोध जाय.

अथ बादीके मूत्रकी दवा ।

गुड़, हल्दी, इन दोनोंको बराबर ले, कांजीके पानीके साथ पीवे तो मूत्रावरोध जावे.

अथ अन्य दवा ।

हरड़े १ तो०, गोखरू १ तो०, अमलतास १ तो०, बाँसाके पत्ते १ तो०, धवला धमासा १ तो०, इनको काढ़ा बनाकर शहत मिलाके पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र और सुजाकरोग जावे. यह योगचिंतामणिमें लिखा है.

अथ पथरीरोगका इलाज ।

छोटी इलायची १ तो०, मुलहटी १ तो०, गोखरू १ तो०, पीपल १ तो०, पाषाणभेद १ तो०, बाँसा १ तो०, सँभालूके बीज १ तो०, इन औषधियोंको काढ़ा करे. परंतु इनमें जो पाषाणभेद १ तो० कहा है उसको अलग पीसकर काढ़ाके ऊपर बुरका देवे. पीछे इस काढ़ाको पिलावे तो पथरी, शर्करा, प्रमेह, मूत्राघात, ये सब रोग जावें.

अथ धातुक्षीणकी चिकित्सा ।

सेलखड़ी ४ तो०, मैदालकड़ी ४ तो०, तज ४ तो०, मेहँदी ४ तो०, बड़ी इलायचीके बीज ४ तो०, खीराके बीज ४ तो०, कासनी ४ तो०, सौंफ ४ तो०, मिसरी ४ तो०, इनको कूट कपड़छान करके १ तोलाकी फंकी दूधके साथ देवे तो धातु बंद होवे.

अथ अन्य दवा ।

कीकरका गोंद ६ मा०, कतीरा ८ मासे, गुले नार ८ मासे, सफेद चंदनी ८ मासे, वंशलोचन ८ मासे, जावित्री ८ मासे, मोचरस ८ मासे, गो-

खरू ८ मासे, माई ८ मासे, बंग ८ मासे, कहरुवा ८ मासे मस्तंगी ८ मासे, सालम मिसिरी ८ मासे, सकाकलमिसिरी ८ मासे, इन्द्र-जव ८ मासे, पाषाणभेद ८ मासे, माईसूतर अरबी ८ मासे, लोध ८ मा०, बालछड़ा ८ मा०, तोदरी सफेद १ तो०, बहमन सफेद १ तो०, मोलसरीकी छाल १ तो०, कचनारकी छाल १ तो०, शंखाहूलीकी जड़ १ तो०, सिंघाड़ा १ तो०, छोटी इलायचीके बीज १ तो०, ये सब औषधियां पीस कपड़छान कर, पीछे संपूर्ण चूर्णकी बराबर मिसिरी मिलावे. पीछे १ तोलाभरकी फंकी दूधके साथ लेवे तो धातुबन्द होय, नाताकती जाय.

अथ अन्य रस ।

रांगा, सीसा, जस्ता, पारा, इन चारों ओषधियोंको सराईमें डाल-कर चूल्हापे चढ़ावे. पीछे मुलहटी, बांशाके पत्ते, इन दोनोंको अलग अलग चूर्ण बनाके एक एक चुटकी गेरता जावे और कड़छीसे हिला-ता जावे. फिर भस्म हो जावे तब कपड़छान कर १ रत्तीप्रमाण इस रस को पानके संग देवे तो नाताकती जाय. धातु बंद होय. इसपर गेहूंकी रोटी और घृत खाना, खट्टा खारा नहीं खाना यही पथ्य है.

अथ पुष्टाईकी दवा ।

तालमखाना ५ तोला, बावची ५ तोला, इसबगोल ५ तोला, मोथा ५ तोला, अमिलीके चिआ ५ तोला, बीजबंद ५ तोला, कोंचके बीज ५ तोला, मस्तंगी ५ तोला, धायका गोंद ५ तोला, इन ओषधियोंको पीस कपड़छान करके, इनकी बराबरकी खांड मि-लाके, पीछे खांडकी बराबर घृत मिलाके, तीन दीनतक नाजमें गाड़ देवे. पीछे निकालके ५ तोला हमेश खावे तो धातु पुष्ट होवे और गिरतीहुई धातु बंद होवे. यह औषध स्त्री तथा पुरुष कोइ भी खावे तो उसीकी धातुकी वृद्धि करता है, परंतु इसको खानेवाला मनुष्य गुड़, सक्कर, उड़द, खटाई, लाल मिरचा, बैंगन, इनको नहीं खावे.

अथ अन्य उपाय ।

अफीम, केशर, कस्तूरी, जायफल, इनको बराबर लेके शहतमें गोली बनावे. पीछे चिरमठीप्रमाण इस एक गोलीको थोड़ेसे निंबूके रसमें डालकर पका लेवे. ऐसी इस १ गोलीको पानमें लगाके खावे तो १ पहरतक धातु बंद रहे. इति वीर्यस्तंभप्रकारः ।

अथ नपुंसकके इलाजमें पट्टी ।

अकर्करा, जायफल, मीठा तेलिया, लौंग,बीरबहूटी,तबकिया हरताल, सोमल, अजयपाल, सिंगरफ, इनको समानभाग लेकर आकके दूधमें बारीक खरल करै. पीछे इनसे दूना गौका घृत मिलावे. फिर इस औषधको लिंगकी पीठपै लगाके उसके ऊपर नागरपानको गरम करके बांध देवे. ऊपर कपड़ा बांध देवे. लिंगके अग्रभागपर दवाई नहीं लगानी चाहिये. ऐसे ३ दिन तथा ५दिनतक करनेसे जब लिंगेन्द्रिय उठ जावे तब भेंड़के कछुक गरम दूधमें इसको झारै पीछे भेंड़के दूधकी मलाई लिंगके घावपर बांध देवे. ऐसे करनेसे नपुंसक अच्छा होवे.

अथ अन्य दवा ।

६ मासे जमालगोटाको गौके घृतमें खरल करके पूर्वोक्त प्रकारसे लिंगके ऊपर लेप करै. फिर उसपै गरम नागरपान बांध, ऊपर कपड़ाकी पट्टी बांधे फिर ५ तथा ४ दिनमें पूर्वोक्त प्रकारसे लिंग उठे तो उसीतरह भेंड़के दूधसे झारै और भेंड़के दूधकी मलाई ऊपर लगावे तो नपुंसक अच्छा हो जावे.

अथ अन्य उपाय ।

अकरकरा ४ तो०, अजैपाल ४तो,० सिंगीमोहरा १ तो०,तबकिया हरताल १ तो०,सफेद चिरमठी१तो०,सिंगरफ १ तो०, रेगमाई मच्छीभेद १ तो०,बीरबहूटी१तो०,मांहिरोबया (मच्छीभेद)-१तो०, खरातीन १ तोला, जिंदविदस्त्र १ तो०, जायफल १ तो०,अरंडोली १ तो०, इन सब ओषधियोंको पीसकर आतसी सीसीमें डालकर

पातालयंत्रके राहसे तेल निकालकर. पीछे ५ तथा ७ दिनतक पूर्वोक्त प्रकारसे पट्टी चढ़ावे.सूखी दवामें तेल नहीं निकले तो थोड़ासा मीठातेल यंत्रके राहसे तैल खैंचना.

अथ अन्य तैल ।

चिरमठी १ छटांक,धतूराके बीज १ छटांक,मालकांगनी १ छटांक, सपेद केनैरकी जड १छटांक, इन सबोंको कूट पीसकर१छटांक मीठा तेल मिलाकर पातालयंत्रके राहसे तेल निकाल लेवे. पीछे ३ रत्तीप्रमाण इस तेलको पानमें लगाके खावे और इंद्रियमें लगाके मालिस करे तो नपुंसक अच्छा होवे,और धातु बढ़े,वीर्यस्तंभ होवे.इस बीमारीके पट्टी चढ़ानेके अनेक इलाज हैं,परंतु हमने साधारणमात्र पट्टी चढ़ाना इस ग्रंथमें कहा है, क्योंकि जो तीक्ष्ण पट्टी है वह अच्छीतरह नहीं चढानी चाहिये. इति नपुंसकरोगकी चिकित्सा ।

अथ आतसक और सुजाकमें रस ।

रसकपूर १ तो०, दालचिनी १ तोला, इन दोनोंको मदिरामें खरल करके डमरू यंत्रमें धरके इसके नीचे दो २ प्रहरतक झड़बेरकी लकड़ीकी आंच देकर रसकपूरको यंत्रके ऊपरके भागमें उड़ा लेवे फिर दो चावलप्रमाण इस रसकपूरको बतासामें तथा पेढ़ामें लगाके ५ तथा ७दिनतक खिलावे तो असाध्यभी आतसक तथा सुजाक रोग जावे. और इस अकेली दवाको मुखमें नहीं लगावे.और इसपर मंड(माड़) चावल तथा दूधका भोजन दश दिनतक करै. यह पथ्य है.

अथ आतसकमें जुलाब ।

गोला ४ मा०,काली मिरच ४ मा०,शुद्ध जमालगोटा नग ४, गुड २ तोला,इनको कूटकर तीन गोली बना लेवे फिर १ गोली हमेसा खावे और ऊपरसे शीतल पानी पीवे. ऐसे तीन दिनतक करै तो आतसक जावे और जुलाब लगे

अथ धूम्रपानविधि।

सिंगरफ १तो०, अकरकरा १तो०, पोहकरमूल १तो०, माजूफल १ तो०,इनको पीसकर ४ पुड़ियां बनाकर चिलममें धरकर १ रात्रिभरमें चारों पुड़ियां खिलावे और इस रोगीको दो दिनतक कोठामें रक्खे, सूर्य नहीं देखने देवे. अलसा दरिया तथा घी रोटी खिलावे. यह पथ्य है. ऐसे करनेसे आतसकी बीमारी जावे.

अन्य उपाय।

भिलावें २तो०, काले तिल २ तो०, पारा ६ मा०, तिबसो गुड ३ तो०, इनको बारीक कूटकर ९ गोली करनी. फिर १ गोलीको दहीमें लपेटकर निगल जावे. ऊपरसे छटांक दही पी लेवे और इसपर आमका अचार, उड़दकी दालके बड़े,ये नहीं खावे; और खीर, मीठा, मूंगकी दाल ये दो महीनातक खावे. इस दवासे मुख नहीं आता है.

अथ अन्य गोली।

रसकपूर १तोला लेकर १ हांडीमे डालकर उसमें आधसेर निंबूका अर्क डालकर हांडीको चूल्हेपर चढ़ावे और हांडीका मुख बंद कर देवे. पीछे मंद मंद अग्नि जलाकर रसको जला देवे.जब रस गाढ़ा हो जाय थोड़ासा आय रहे तब नीचे उतारके खरल करे और उसमें छोटी इलायची १तोला खरल करते समय मिला लेवे. फिर झाँड़ीके बेरप्रमाण गोली बना लेवे. ऐसे इस एक गोलीको घृतमें लपेट निगल जावे. इस प्रकार करनेस आतस गरमी रोग दूर होवे.और इसपर घृत तथा मिसिरी आदिका खाना पथ्य है.इस दवाके खानेवालेका मुख नहीं आता

अथ सुजाककी दवा।

बेरजा ५ तो० लेना फिर उसको एकसाएके१०१बार पानीमें धो डालना. फिर १ तो०इस बेरजाको मक्खन लपेटकर निगल जावे. पीछे ऊपरसे पावभर कच्चा दूध पीवे. फिर कच्चे दूधकीलस्सी बनाकर पीवे. ऐसे ५ दिनतक करे तो सुजाकरोग जावे और चिणधवा जावे. इसपर बूराके साथ हंसराज चावल खाना यह पथ्य है.

अथ अन्य तेल सुजाकपर ।

बेरजा १ सेर, बालूरेत १सेर, मुलहटी४तो०, छोटी इलायची४तो०, इनको मिलाकर तेल निकाल लेवे. पीछे मिसिरीके सरबतमें ३ मासा तेल मिलाके पिलावे तो सुजाक जाय. इसपर नमकका भोजन नहीं करै.यह पथ्य है.

अथ अन्य उपाय ।

वंग ३ तो०, शिलाजीतका सत १ तो०,गिलोयका सत१ तो०, मिसिरी १ तो०, बड़ी इलायची १ तो०, इनको कूट पीसकर सहतमें मिलाके चटावे तो बहुत दिनोंका सुजाक जावे और मूत्राघातरोग जावे.

अथ सुजाकमें पिचकारी ।

रसोंत ५ मासे, गेरू ५ मासे, नीलाथोथा ३ मासे, इनको बारीक पीस पानीमें मिलाकर इंद्रियमें पिचकारी लगावे तो सुजाकरोग जावे.

इति श्रीदादूपंथी वैद्यमाधवदासविरचित औषधप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे आतशक, सुजाकआदिरोगोंकी चिकित्सा ।

अथ शोथरोगकी चिकित्सा ।

शुद्ध पारा १ तो०, शुद्ध गंधक १तो, लोहसार १तो, पीपल १ तो०,निशोथ १तो०, देवदारु १तो०, काली मिरच १ तो०, हलदी १तो०,इनको पीसकर त्रिफलाके रसमें एक दिनतक खरल करै. फिर ४मासाप्रमाण इस औषधको खाके ऊपरसे आधपाव गोमूत्र पी लेवे. ऐसे दश १० दिनतक करै तो संपूर्ण अंगका शोजा दूर होवे.

अथ शोजामें पुनर्नवादि गुग्गुल ।

शुंठी, देवदारु, हरड़े, गिलोय, हल्दी, ये समभाग ले और इन सबोंकी बराबर गूगल लेवे. फिर इन सबोंको पीसके अरंडीके तेलमें झांड़ीके बेरप्रमाण गोली बनावे. फिर १ गोली हमेस खाके ऊपरसे आधपाव गोमूत्र पिलावे. इसप्रकार करनेसे शोथरोग, पांडुरोग, थुकथुकी, उदररोग, शरीरका मोटापन ये सब दूर होवें. यह औषध भैषज्यकल्पवल्लीमें लिखी है.

अथ शोजामें कल्पलतावटी ।

मीठा तेलिया, सिंगरफ, धतूराके बीज, ये औषधियां बारह २ रत्तीभर लेना, और अफीम ६ रत्तीभर लेना, इनको गौके दूधमें खरल करके १ रत्ती प्रमाणकी गोली बना लेवे. पीछे १ गोलीको गौके दूधके साथ लेवे और इसपर गौका दूध पीता रहै, अन्न जल कम लेवे, जबतक दवा खावे, तबतक नमक नहीं खाना. इसप्रकार करनेसे शोजा और अतिसार दूर होवे.

अथ अन्य वटी ।

शुद्ध पारा १ मासा, शुद्ध गंधक १ मासा, मीठा तेलिया२ मासा, तांबा४मासा,मंडूरसार१तो०,पीपल१तो०, इनको पीसकर७ दिनतक काले जीराके काढ़ाकी पुट देतारहै,और खरल करता रहै,फिर२रत्ती-प्रमाणकी गोली बना लेवे.पीछे१गोलीको तक्रके संग खावे और क्षुधा, तृषा,लगे तब तक्र(छांछ) कोही पीता रहै. ऐसे करनेसे अतिसार, संग्रहणी, शोजा, मंदाग्नि, पांडुरोग, ये सब दूर होवें. इसपर नमक नहीं खावे. यह भैषज्यकल्पवल्लीमें लिखी है.

अथ अन्य रस ।

शुद्ध पारा १तो०, शुद्ध गंधक १ तो०, शुद्ध सुहागा १तो०,तांबाकी भस्म १ तो०, लोहसार १ तो०, इनको १ दिनतक अदरखके रसमें खरल करके पीछे शरावसंपुटमें धरके मंदाग्निसे गजपुटमें फूंके पीछे बाहिर निकास पीसके,६रत्तीप्रमाण इसको खावे. ऊपरसे ऊंगा-की जड़, अरंडीकी जड़ इन दोनोंको घोटकर इनका रस पिलावे. ऐसे करनेसे संपूर्ण शरीरका शोजा सात दिनमें दूर हो जावे. यह रस भैषज्यकल्पवल्लीमें लिखा है. इति शोथरोगचिकित्सा.

अथ मिश्रिताध्यायप्रारंभः ।

अथ मेदरोगकी चिकित्सा । तांबाकी भस्म १ तो०, शुद्ध पारा १ तो०,शुद्ध हरताल १ तो०, इनको आकके दूधमें २ रत्तीप्रमाणकी१

गोली बनावे. पीछे १ गोलीको शहतमें खावे तो मेदरोग जाय.

अथ गंडमालाकी चिकित्सा ।

शुद्ध पारा १६ मासे, शुद्ध गंधक ८ मासे, तांबाकी भस्म २४ मासे, मंडूरसार ४ तो०, त्रिकुटा १६ मासे, सेंधा नमक ८ मासे, कचनारकी छाल ३ छटाँक, गोंद ३ छटांक, इनको कूट कपड़छान करके फिर गौके घृतमें मिला लेवे, फिर ३ मासाप्रमाण इस औषधको नित्य खावे तो गंडमाला, गलगंड, ये रोग दूर होवें.

अथ अदीठरोगमें लेप ।

रामचनाकी जड़ १तो०, सहंजनाका गोंद १तो०, कीकरका गोंद १तो०, छीपीगोंद १तो, मुरदाकी हड्डी १तो०, पुराना लोहसिंघान १तो०, पुरानी चूड़ी १तो०, रींछका गरेड़ा १ तो०, इनको कूट खरलकर ३तोलाप्रमाणको गोमूत्रमें पीसकर गरम करके लेप करै और तीसरे दिन गोमूत्रसे झारकर फिर लेप करै. ऐसे तीन बार करनेसे अदीठ (पीठमें उत्पन्नहुआ दारुण फोड़ा) दूर होवे.

अथ अन्य बफारा ।

कैथके पत्ते, बांसाके पत्ते इनको १ हांडीमें डालके आधपाव पानी डालके औटावे, जब पानी सूख जाय तब पहले तो बफारा देवे; पीछे उन पत्तोंको अदीठपर बांध देवे तो अदीठ जावे.

अथ विषकंटाकी दवा ।

मैदालकड़ी १ तो०, अंबा हलदी १ तो०, खुरासानी अजमान १तो०, इनको पीसकर ३ तो०, गुड़में मिलाकर पीछे गरम करके विषकंटाकी अगुलीपर लगावे तो विषकंटा जाय और जलन् मिटे.

अथ अन्य दवा ।

मैदालकड़ी २तो०, खारीनमक २तो० लेना फिर २ तोले नींबके पत्तोंको बकरीके दूधमें पीसकर अलग रख धरे. पीछे उसमें इन दोनों औषधियोंको पीसकर मिला देवे.फिर इस औषधको पकाके ३ दिनतक विषकंटाकी अंगुलीपर लगावे तो विषकंटा जाय.

अथ न्हारुवाकी दवा ।

भांग पावभर, बच १ तो०, सिंदूर १ तो०, भिलावाँ नग ५ ऐसे लेना. तहां पहिले भिलावोंकी टोपी दूर करके उनको तेलमें पका लेवे. जब भिलावे पककर उनका पेट फूटजावे तब उनको नीचे उतारके पहिले कहीहुई इन ओषधियोंको मिलाके घोट लेवे. फिर १ आकका पत्ता लेके उसपर इस दवाको लगाकर न्हारुवाके ऊपर ४ पहरतक बांध रक्खे. ऐसे तीन दिनतक करनेसे न्हारुवा दूर होता है.

अथ अन्य तंत्र ।

उड़द १। सेर लेना; उनको उलटी चाकीसे पीसकर, उस आटाको गोंदकर उसकी १टोपीसी बनाकर फिर शिरके बाल मुंडाकर आटाकी टोपी शिरपर ४पहरतक रक्खे. ऐसे करनेसे संपूर्ण शरीरमें निकला-हुआ न्हारुवा शिरमें चला जाता है और उसके शरीरमें फिर कहीं न्हारुवा नहीं निकलता है. ऐसी यह तंत्रविद्या कही है.

अथ अन्य उपाय.

हींग ४ मासा, गायका दही पावभर मिलाकर जाड़ेके समयमें जिसके न्हारुवा निकलता हो वह पुरुष ११ दिनतक सेवन करे तो उसका न्हारुवा भीतरही भस्म होजावे.फिर कभी न्हारुवा नहीं निकसे.

अथ कीडनाल निकलकनेकी दवा.

नौसादर १ तो०,सोमल १तो०,नीलाथोथा १ तो०,चूना १तो०, तिलोंका खार १ तो०, बाजराकी राख १ तो०, जुवारकी राख १ तो०,कौड़ीकी भस्म १तो०, लोटका सज्जी१तो०, इनको जलमें पीसकर पैरमें निकले हुए कीड़नालकी जगह लेप करे तो कीड़ी निकल जायँ, और विष्कंटा जाय. ये दोनों रोग असाध्य होते हैं.और कहीं किसी बिरले मनुष्यके निकलते हैं.

अथ दद्रुआदिपर तेल.

नीलाथोथा १तो०,गंधक १तो०, फिटकड़ी १तो०, हरड़ोंकी छा-

ल१तो०,हलदी१तो०,नींबके पत्ते आधपाव,कड़वा तेल पावभर, इनको पकावे.इस तेलको पकानेकी यह विधि है कि पहिले नींबके पत्तोंका कल्क करके तेलमें पकावे,पीछे ऊपरसे इन दवाइयोंको पीसके डालदे और लोहेकी मुसलीसे खूब अच्छी तरह घोट देवे.फिर मल्हम-सरीखे इस तेलके लगानेसे दाद,मूमडी,पीलपाँव,ये सब रोग दूर हों.

अथ अन्य तैल.

गूगल १ तो०, नीलाथोथा१तो०,सिंदूर १ तो०,रसोंत १ तो०, मनशिल १तो०,इन सब ओषिधियोंको आधपाव कडवे तेलमें पका लेवे. पीछे उसी तेलमें १५हरतक अच्छीतरह घोट लेवे. पीछे इस तेलके लगानेसे खाज, दाद,दाफड़,विचार्चिका,पामा इत्यादिक रोग दूर हों.

अथ बिवाँईकी दवा.

गुड़ और सहतको मिलाकर गरम करके लगावे तो बिवाँई जाय ।

अथ अन्य उपाय ।

छोटी इलायचीके बीज ६ मासे, मुरदासिंगी ६ मासे, इन दोनोंको पीसकर गौके घृतमें पकाकर लगावे तो बिवाँई जाय ।

अथ मल्हम ।

मुरदासिंगी २तो०, राल २तो०, मस्तंगी२ तो०, मोम ४ तो०, गौका घृत८तो०,इसप्रकार इन ओषधियोंको लेकर मल्हम बनावे.इसके बनानेकी यह विधि है कि पहिले घृतको तपाके फिर उसमें मोम मिला लेवे पिछे पहिले कहीहुई सब दवाइयोंको पीसकर मिला लेवे. फिर शीतल पानीसे इस औषधको ५ बार धो डाले.फिर इसमें सिंदूर २तो०,नीलाथोथा १॥तो०,पीसकर मिला देवे फिरहाथसे खूब अच्छी तरह मिला देवे.इस मल्हमके लगानेसे सब प्रकारके व्रण (घाव),गंड-माला,बिवाँई,पामा,उपदंश, (आतशकरोग),ये सब रोग सात दि-न तथा १४ दिनमें दूर होते हैं. इस मल्हमके ऊपर कपड़ाकी चिंधी लगादेनी चाहिये. यह मल्हम आत्मारामवैद्यने कहा है ।

अथ अग्निसे दग्ध हुएकी चिकित्सा ।

सफेद चंदन,गेरू,बंशलोचन,गिलोयके पत्ते इन सबोंको बारीक पीसकर घीमें मिलाकर लगावे तो अग्निसे जला अच्छा होवे.

अथ अन्य लेप ।

फिरासके बक्कलको लेके फूंक लेवे. फिर अच्छीतरह बारीक पीस लेवे.पीछे अग्निसे दग्ध हुएकी जगह तेल चुपड़के ऊपरसे इस भस्मको बुरका देवे. इसी प्रकार जबतक अंकुर नहीं आवे तबतक करता रहे, तो अग्निसे जला अच्छा होवे.

अथ श्लीपदरोगकी चिकित्सा ।

सांठीकी जड़, हरड़े, बहेड़ा,आंवला, पीपल, इनको चूरण बनाय. उसमें सहत डाल अवलेह बनाके चाटे तो पुराना श्लीपदरोग दूर होवे.

अथ अन्य उपाय ।

हलदी चूरण, गुड, इनको कांजीमें मिलाकर पीनेसे १ वर्षसे उत्पन्न हुआ श्लीपदरोग दूर होवे.और दाह, तृषा,कुष्ठरोगभी दूर होवे.

अथ अन्य लेप ।

सांठीकी जड़, सूंठ, सिरसम, सहेजनाकी छाल, देवदारु, इनको गोमूत्रमें पीसकर गरम करके लेप करे तो श्लीपदरोग जाय.

अथ सींपरोगकी दवा ।

कूट, मूलीके बीज, मलकांगनी, सिरसम, हलदी, केसर, इनको पानीमें पीस लेप करे तो सींपरोग जाय.

अथवा—मूलीके बीजोंको सिरसमके रसमें पीसकर लेप करनेसे, सींप रोगका नाश होता है.

अथवा—केलाके खारमें हलदीका चूर्ण मिलाके लेप करनेसे सींपरोगका नाश होता है.

अथवा–दारुहलदी,मूलीके बीज,तबकिया हरताल,देवदारु,नागरपान इन सबोंको एक एक तोलाप्रमाण लेवे और शंखका चूर्ण४मासे

प्रमाण लेवे. इन सबोंको पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्मकुष्ठ (सींप-रोग) दूर होता है. यह इलाज भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ भगंदररोगमें लेप ।

पारा १ तो०, रांगा १ तो०, इन दोनोंको अच्छीतरह खरल करलेवे रांगाको अच्छीतरह पारामें मिला देवे फिर १ तो० रसकपूर मिलाके, १ पहरतक खरल करे फिर इसमें १ छटांक मक्खन मिलाके गरम करके लेप करे तो भगंदररोग जावे और बवासीर जाय.

अथ अन्य रस ।

शुद्ध पारा १ तो०, शुद्ध गंधक १ तो० इन दोनोंकी कजली बनाकर फिर गुवारपाठाके रसमें १ दिनतक खरलकर ३ तोलाकी एक तांबेकी डिबिया बनाके उसमें इस गोलाको धर फिर एक मिट्टीकी हांडीमें दबाकर उसमें राख भरवाकर, उसमें इस डिबियोको गोलासमेत रख देवे, पीछे हांड़ीका मुख बंदकर ४ पहरतक उस हांड़ीके नीचे अच्छी तेज अग्नि जलावे. इसप्रकार करनेसे तांबेकी डिब्बीसमेत इस पाराकी भस्म हो जावेगी, फिर शीतल होजावे तब इस डिब्बीको बाहर निकाल तांबेकी डिब्बीसमेत खरल करलेवे. पीछे जंबीरी निंबूके रसमें ७ पुट देवे फिर एक रत्तीप्रमाण इस रसको सहतमें तथा घृतमें खावे तो भगंदररोग जाय और इस रसके ऊपर मूली और ल्हस्सन ये दोनों खिलावे और त्रिफलाके पानीसे भगंदरको धोवे और मीठी चीज खवावे.

अथ अन्यरस भगंदरमें ।

शुद्ध पारा ४ तो०, शुद्ध गंधक ८ तो०, इन दोनोंकी कजली बनाकर पीछे खीपके रसमें सात दिनतक अच्छीतरह खरल करे. पीछे घाममें सुखाके सीसीमें डालकर सीसीका मुख बंद कर देवे और कपड़मिट्टी सब जगह लगाकर फिर १ हाथ चौड़ा १ हाथ ऊंचा खड्डा खुदाके उसमें १० सेर घोड़ाकी लीद भरके उसपर सीसीको रखके फिर सीसीके ऊपर १० सेर घोड़ाकी लीद गेरके सीसीको अच्छीतरह

दबवा देवे. ऐसे तीन महीनातक उस सीसीको पृथ्वीमें दबाई रक्खे फिर बाहिर निकालकर ४ रत्तीप्रमाण इस औषधको ४ काली मिरच और एक पानमें धरके प्रातःकाल खावे. १ वर्ष दिनतक सेवन करे तो भगंदररोग दूर होवे और इसके सेवनसे आंखके भीतरका नासूर और मुखके भीतरका नासूर दूर होवे.

अथ शीतपित्तकी चिकित्सा ।

शिरसम, हलदी, पुवाड़के बीज, तिल, इन सबोंको पीसकर कड़वे तेलमें मिलाके मालिश करे तो पित्तीका रोग जाय.

अथ अन्य दवा ।

अजमोदा ५तो०, गुड़ ५ तोला, इनको कूटकर गोली बनाके ५दिनतक खावे तो शीतपित्त जाय. अथवा इस रोगमें जुलाब देना तथा फस्त खुलाना श्रेष्ठ है.

अथ विसर्परोगकी दवा ।

चिरायता, बांशा, कुटकी, परवल, हरडे, बहेड़ा, आंवला, लाल चंदन, नीबकी छाल, ये सब औषध बराबर लेनी. फिर इनको काढ़ा बनाकर पीनेसे विसर्प, दाह, ज्वर, शोथ, खाज, विस्फोटक, तृषा, छर्दि, ये रोग दूर होवें.

अथ अन्य लेप ।

कमलगट्टा, खस, चंदन, इनका लेप करनेसे विसर्परोग दूर होवे.

अथ विस्फोटकरोगकी चिकित्सा ।

चिरायता, कुटकी, नींबकी छाल, मुलहटी, नागरमोथा, बांसा, परवल, पित्तपापड़ा, खस, त्रिफला, कूड़ाकी छाल, इनका काढ़ा बनाके पीनेसे त्रिदोषका विस्फोटकरोग दूर हो.

अथ अन्य लेप विस्फोटकमें ।

जीया पोताकी गिरीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे पीडासहित विस्फोटकरोग और कांखोलाई, गलगांठ, कणगांठ ये सब दूर होते हैं. यह इलाज भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ पित्तकी मसूरिकामें काढ़ा ।

नींबकी छाल, पित्तपापड़ा, पाठा, लाल चंदन, परवल, सफेद चंदन, खस्र, कुटकी, आंवला, बांसा, धमासा, इनका काढ़ा बनाके शीतल होनेपर खांड़ मिलाकर पीवे तो पित्तकी मसूरिका, दाह, ज्वर, विसर्प, पित्ताधिक्य, व्रणरोग, ये सब दूर होवें.

अथ कफकी मसूरिकामें काढ़ा ।

बांसा, नागरमोथा, चिरायता, त्रिफला, इंद्रजव, धमासा, इनका काढ़ा बनाय उसमें सहत मिलाकर पीवे तो कफकी मसूरिका जाय.

अथ सन्निपातकी मसूरिकामें काढ़ा ।

नींबकी छाल, पित्तपापड़ा, पाठा, कुटकी, परवल,सफेद चंदन, लाल चंदन, खस्र, आंवला, बांसा,धमासा, इनका काढ़ा बनाय उसमें खांड़ मिलाकर पीनेसे, सन्निपातकी मसूरिका, ज्वर, विसर्परोग, ये सब दूर होवें. यह सब भावप्रकाशमें लिखा है.

अथ अस्थिभंगरोगकी चिकित्सा ।

अथ हलदीपाक ।

हलदी दो भाग, सूंठ १ भाग, गोंद आधा भाग, इनको घृतमें भून लेवे. फिर ४ भाग खांड़ मिला इन सबोंको घीमें मिलाकर १ चिकनी हांड़ीमें डाल उसका मुख बंद कर नाजके कोठेमें दाब देवे. फिर १४ दिनमें बाहिर निकालकर इसका सेवन करे तो उदरविकार, वातरोग, अस्थिभंग, नेत्ररोग, ये सब दूर होवें. यह औषध माघके महीनेमें सेवन करनी चाहिये और इसके ऊपर नमक तथा खटाई नहीं खानी चाहिये.

अथ अस्थिभंगमें लाक्षादि गुग्गुलु ।

लाख, गंगेरनकी छाल, अर्जुनवृक्षकी छाल, असगंध, बिजैसार,इन सब ओषधियोंको समानभाग लेवे और गूगल, एक दवासे तिगुना लेवे. पीछे इनको पीसकर घृतमें मिलाकर एक कर्षप्रमाणकी गोली यान

१० मासा प्रमाणकी गोली बना लेवे. फिर १ गोलीको दूधके साथ खावे तो अस्थिभंग अर्थात् टूटाहुआ हाड़ जुड़े और दृढ़ होजावे.

अथ अंडवृद्धिका यत्न ।

गायके दूधमें अरंडीका तेल मिलाके पीवे तो १ महीनेमें इसका सेवन करनेसे बातकी अंडवृद्धि रोग जावे और गूगल तथा अरंडीका तेल, गोमूत्र इनको मिलाके पीवे तो पित्तकी अंडवृद्धि रोग जाय. और सूंठ, काली मिरच, पीपल, त्रिफला, इनका काढ़ा बनाकर उसमें जवाखार और सेंधानमक डालकर पीवे तो कफकी अंडवृद्धि जाय.

अथ शिरके दर्दमें नस्य ।

चीनियां कपूर ६ मासे, छोटी इलायची ६ मासे, लाल चंदन ६ मासे, लौंग ६ मासे, नकछिकनी ६ मासे इनको पीसकर सुंघावे तो वात तथा कफसे उत्पन्न हुआ शिरका दर्द जावे. और आंवला, सफेद चंदन, खस, कपूर इनको पानीमें पीसकर माथामें लेप करै तो पित्तसे उत्पन्न हुआ शिरका दर्द जाय.

अथ नेत्ररोगकी चिकित्सा ।

तहां नेत्ररोगमें पोटली कहते हैं—रसोंत ३ मासा, अफीम १ मासा, नींबकी कोंप १ मासा, मिसिरो २ मासा, भूनीहुई फिटकड़ी २ मासा, भूनाहुआ नीलाथोथा १ मासा, इनको गुलाबके अर्कमें खरल कर पोटली बनाकर आंखोंमें लगावे तो आंख अच्छी होवे. इस पोटलीको आंखपर लगानेके समय गुलाबके अर्कमें तर रक्खे.

अथ अन्य अंजन ।

भूनकर फुलाईहुई फिटकड़ी, नीलाथोथा, खपरिया, सुरमा, सहोंजनाके बीज, समुद्रझाग, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर इनको समभाग लेकर २ दिनतक निंबूके रसमें खरल करे. पीछे गोली बनाकर पानीमें पीसकर आंखोंमें अंजन डाले तो फूला, धुंध, तिमिर, जाला, ये सब नेत्ररोग जावें.

अथ अन्य अंजन।

कलमी सोरा,भूनके फूलाईहुई फिटकड़ी, नौसादर, हलदी, इनको पीस कपड़छानकर अंजन डाले तो नेत्रके संपूर्ण विकार जावें.

अथ कानके रोगकी चिकित्सा ॥

आकके पत्तोंको घृतमें चुपड़कर अग्निमें तपाकर उनको निचोड़ कर उस गरम गरम अर्कको कानमें डाले तो कानकी शूल(दर्द)जावे।

अथवा–ल्हसनका रस, अदरखका रस, इनको गरमकर कानमें डले तो शूल (दर्द) जावे.

अथवा–अदरखका रस, सेंधा नमक, शहत, इनको तेलमें पका-कर कानमें डाले तो कानकी पीड़ा, कर्णनाद, बहरापन, कर्णक्ष्वेड, ये सब रोग जावें.

अथ अन्य उपाय।

सुदर्शनके पत्तोंको निचोड़के रस निकालके कानमें डाले तो कानकी गूमड़ी पीड़ा जाय.

अथ अन्य उपाय।

कानमें कीड़ा पड़जायँ सरावका फोहा भरकर कानमें डाले पीछे कानके फोहाका डाग लगा देवे. थोड़ीसी देर पीछे कानको झड़का देवे तो कीड़े मरके बाहिरको निकल आवें और नाकके रस्ते मग-जमें कीड़ा पड़जायँ तो सुनीम नामक दवाईको पीसकर पुरली डाल-कर दूसरे आदमीसे नाकमें फूंक मरवाके ऊपरको नाकमें इस दवाको चढ़वा दे और गोमांबूटीका बफारा दिलावे और गोमाबूटीको शिर-पर भी बांध देवे ऐसे तीन दिनतक करे तो शिरके कोड़े नाककी राहसे निकल जावें और इस रोगीको अलोना दलिया खानेको देवे. इस दवाका नाम मलीनभी कहते हैं.

अथ मुखपाककी गोली।

खैरसार, जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज, पत्रज,

नागकेशर, छोटी इलायची, कस्तूरी, इन सबोंको बराबर भाग ले महीन पीस खैरसारके काढ़ामें चनाके प्रमाण गोलियां बना लेवे. इस एक गोलीको मुखमें राखे तो जीभ, होंठ, दांत, मुख, गला, तालु, इनके सब रोग जावें.

अथ अन्य कुरला मुखपाकमें ।

मुलहटी, खैरसार, इनको, औटाकर सहत डालकर कुरले करे तो पित्तका मुखपाक जावे.

अथवा–गूंदनीके पत्तोंके काढ़ासे कुरले करे, तथा गूंदनीके पत्तों-को चाबे तो पित्तका मुखपाक जावे.

अथ विषरोगकी चिकित्सा ।

सांपके जहरकी दवा ।

मोरनीके अंडामें चनाकी दाल भरके सुखा लेवे. पीछे जिसके सर्प डसगया हो उसको खवावे तो जहर जाय.

अथ अन्य उपाय ।

कसोंदी, मरवा, कड़, इनको पीसकर पीवे, तथा इनको पानीमें औटाके स्नान करे तो सर्पका जहर जावे.

अथ बिच्छूके जहर दूर करनेका लेप ।

जमालगोटाको पीसके बिच्छूके कांटापर लगावे तो अच्छा होय.

अथ अन्य उपाय.

नौसादर, हरताल, इन्हे पानीमें पीस बिच्छूके डंकपर लेप लगावे तो अच्छा होय.

अथ बावले कुत्तेके जहरकी दवा ।

एक तोला चोखको पीसकर दहीमें मिलाकर पिलावे तो दस्त और वमन होकर बावले कुत्तेके काटनेका जहर दूर होवे. कुत्ताका काटा हुआ जहर दूर करनेके वास्ते यह दवा ५ दिनके भीतर दी जावे तो फायदा करती है. पीछे फायदा नहीं करती.

अथ अन्य विषोंका इलाज ।

तहां पहिले शंखियाके विषको दूर करनेका उपाय कहते हैं.

अरंडके पत्तोंको पीसकर उनका रस छानकर पिलावे तो शंखियाका जहर जावे. अथवा दूध मिसी प्यावे तो संखियाका जहर जावे. अथवा—काली मिरच चबावे और खेजड़ाकी सींग पीसकर पिलावे तो सींगीमोहराका जहर जाय.

अथ अन्य प्रकार ।

सूंठका काढ़ा करके पीवे तो अफीमका विष जावे. और निंबू चुसावे तथा मूलीका रस पिलावे तथा बाड़के जड़का रस पिलावे तो भांगका अमल जावे.

अथवा चिरौंजी, तिल, गोला, इनको भैंसके दूधमें पीसकर मालिश करे तो भिलावांका विष जावे. और हलदी तिल दूध इन्हें बकरीके दूधमें पीसकर लेप करे तो शरीरमें लगे हुए आकका विष जावे. और बड़ी हरड़को मुखमें राखे तो आक खाये हुएका विष जाय. और घीकी मालिश करनेसे शरीरमें लगीहुई कौंचकी फलीका विष जाय. तथा गोबर मलनेसे कौंचका विष जावे. और चौलाईकी जड़को पीसकर लगावे तो धतूरका विष जाय.

अथवा—बनूसठीके पंचांगको घोटकर पिलावे तो धतूराका विष जाय. और शिरसमोंको थोहरके दूधमें पीसको लेप करै तो मेंडकके काटनेका विष जाय ॥ इति श्रीदादूपंथी माधवदासवैद्यविरचित औषधप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे मिश्रिताध्यायः समाप्तः ॥

अथ स्त्रीरोगचिकित्सा ।

प्रदरकी दवा—मुलतानी माटी आधपाव, चनेके भूगड़े आधपाव, इनहोंको पीसके १ तोलाकी फंकी शीतल पानीके साथ दोनों वक्त लेवे तो प्रदररोग जाय.

अथवा ढाँकके पत्तोंकी राख और भिरंके छत्ताकी राख, इन

दोनोंको मिलाके ३ मासा प्रमाणकी फंकी देकर शीतल पानी तथा दूध पिलावे तो प्रदररोग जाय.

अथ अन्य उपाय ।

मुलतानी माटी आधपाव, अरनोंकी राख आधपाव, इन दोनोंको मिलाके धर देवे फिर २ तोला प्रमाण इसकी फंकी लेवे और शीतल पानी पीवे तो प्रदररोग जाय.

अथवा–मूंसेकी बीट ८ मासे पीस उसमें बराबरकी मिसिरी मिलाके पीवे तो प्रदररोग जाय.

अथवा– ३ मासे प्रमाण पीपलकी लाखके चूर्णकी फंकी लेकर ऊपरसे गौका दूध पीवे. अथवा चावलोंको भिगोके उनको मथके उस पानीको पीवे. अथवा बकरीका दूध पीवे तो प्रदररोग जाय. और प्रदरवाली स्त्रीको अलोना भोजन करना चाहिये.

अथ योनिरोगका उपाय ।

माजूफलको जलमें औटा लेवे, जब आधा जल आ रहे तब छानकर उससे भगको धोवे तो भगका घाव जाय.

अथ शोजाका उपाय ।

अच्छी हलदीको पीसके उसमें गौका घृत मिलाके पका लेवे. पीछे फोहाभरके भगमें लगावे तो भगका शोजा, घाव दूर होवे.

अथ कुचोंकी पीड़ा तथा शोजाकी दवा ।

हलदीको पीसकर गुवारपाठाको चीरकर उसपर लगाके फिर गरम करके कुचावोंपर सेंक करे तथा सेंक करके ऊपर बांधे तो कुचपीड़ा थानेला रोग जाय.

अथ अन्य मल्हम ।

राल २ तो० पीसकर कपड़छान कर फिर गौका घृत८तो०,गरम कर उसमें रालको छोंड़ देवे और कड़छीसे चला देवे. फिर घृत शीत-

ल हो जाय तब इस औषधको पानीसे ५ बार धो डाले पीछे कुचोंपर लगावे तो कुचोंका घाव भर जावे.

अथ स्त्रीके रज आनेकी दवा।

मंजीठ ६ तोलाको बारीक पीसकर ८ मासेकी फंकी ७ दिनतक लेवे तो स्त्री रजस्वला होवे.

अथवा–भांगका रस १ तो०, सेंधानमक १ तो०, बड़की जटा १ तो०, इनको कूट कपड़छानकर कड़वे तेलमें खरल कर १ तोलाप्रमाणकी गोली बना लेवे. फिर छायामें सुखा लेवे. फिर ३ दिनतक एक एक गोली खावे तो स्त्री रजस्वला होवे.

अथवा–इंद्रायन(गडूंभा)की जड़को तेलमें पीस बत्तीपर लेप कर उस बत्तीको योनिमें धारण करे तो स्त्री रजस्वला होवे.

अथ गर्भस्थिति होनेका उपाय।

जीरा १ तो०, समुद्रफल १ तो०, जायफल १ तो०, इनको पीसकर पानीके संग ७ गोली बनावे फिर रजस्वला हुए पीछे ७ दिनतक एक एक गोली खिलावे तो स्त्रीके गर्भधारण रहे.

अथ अन्य उपाय।

नागकेशर ४ मासा, काला जीरा ४ मासा, मेंढ़ासींगी ४ मासा, इनको पानीके संग पीस ७ गोली बनावे. फिर रजस्वला हुए पीछे ७ दिनतक देवे, पीछे यह औषध पच जावे वमन नहीं होवे तो वंध्या स्त्रीके संतान होवे.

अथ अन्य दवा।

नागकेशर १ तो०, देवदारु १ तो०, असगंध १ तो०, मोरशिखा १ तो०, इनको पीसकर ७ मोताज बना लेवे. फिर १ पुड़ियाको ऋतुसमयमें १ वर्णके रंगवाली गौके दूधके साथ हमेशा देवे. ऐसे सात दिनतक करनेसे वंध्या स्त्रीके गर्भ रहे. पहिले महीनामें गर्भस्थिति नहीं रहे तो ऐसेही दूसरे महीनेमें करना चाहिये.

अथवा–सफ़ेद कटेहलीकी जड़को गौके दूधके साथ ऋतुसमयमें पिलावे तो गर्भ रहे.

अथ गर्भ पुष्ट रहनेकी दवा ।

सफेद जातकी सुपारी लेके उनको दूधमें पका लेवे फिर इनको सुखाकर कूटकर कपड़छान करके ६ मासा प्रमाणकी फंकी दूधके साथ लेवे. ऐसे गर्भवती स्त्री २५ दिनतक करे तो गर्भवतीका गर्भ पुष्ट होवे.

अथ अन्य उपाय ।

कसूंभा, मेंहँदी, छोटी इलायची, चंदन, नागरमोथा, कपूर, कस्तूरी, जीरा, इनको समानभाग लेकर पानीमें खरलकर चनाप्रमाण गोली बना लेवे. फिर १ गोली भगमें रक्खे तो जिस स्त्रीका गर्भ गिरता हो उसका नहीं गिरे.

अथ प्रसूतरोगमें काढ़ा ।

देवदारु १ तोला, बच १ तोला, सूंठ १ तोला, पीपल १ तोला, चिरायता १ तो०, कायफल १ तोला, मोथा १ तो०, हरड़े १ तो०, धमासा १ तोला, गोखरू १ तो०, जवाशा १ तोला, कटेहली १ तो०, गिलोय १ तो०, काला जीरा १ तो०, इनको कूटकर २ तो० प्रमाण इस औषधका काढ़ा बनाकर उसमें २ मासाप्रमाण सेंधानमक मिलाकर पिलावे तो प्रसूतरोग जावे.

अथ प्रसूतरोगमें सौभाग्यशुंठी पाक ।

पावभर सूंठको लेके कूट कपड़छान कर पीछे उसको पावभर घीमें सेंक लेवे. फिर ४ सेर दूधको कढ़ाईमें चढ़ाकर उसमें उस सूंठको गेरके अग्निसे पकाकर खोआ बना लेवे. फिर पावभर गेंदको सेंककर उस खोआमें मिला देवे. फिर जायफल १ तो०, लौंग १ तो०, जावित्री १ तो०, त्रिफला ३ तो०, दोनों जीरा २ तो०, पीपल १ तो०, छोटी इलायची १ तो०, तज १ तो०, पत्रज १ तो०, नेत्रबाला १ तो०, शतावरि १ तो०, विदारीकंद १ तो०, केशर १ तो०, दालचिनी १ तो०, पाषाणभेद १

तो०, सौंफ १ छटांक, चिरौंजी १ छटांक, गोला १ छटांक, बादाम १ छटांक, छोहारा १ छटाँक, किसमिस १ छटांक, इसप्रकार इन सब ओषधियोंको लेके कूट कपड़छान कर उस खोआमें मिला और इन मेवोंको चक्कूसे छोटी छोटी बनाकर उसी सूंठके खोआमें मिला देवे. फिर ४ सेर खांड़की करड़ी चासनी मिला देवे. पीछे आधपाव प्रमाणके मोदक बना लेवे. इन मोदकोंको प्रसूता स्त्री रुचिके अनुसार खावे तो प्रसूतरोग जाय और शरीर पुष्ट होवे. योनि कठिन होवे. इत्यादिक अनेक गुण होते हैं. इति सौभाग्यशुंठीपाकः ।

अथ मृतवत्सा याने मसानरोगकी चिकित्सा ।

गोरखमुंडी १ तो०, पीपलकी दाँडी १ तो०, शतावरिकी बेल १ तो०, इनोंको पानीमें पीस १ रत्तीप्रमाणकी गोली बना लेवे. फिर २ महीनाका गर्भ हो तबसे १ गोली हमेशा खाना शुरू कर फिर बालक उत्पन्न होलिया पीछे, उसी गोलीको बालकको घूंटी दिया करे तो स्त्रीका और बालकका मसानरोग दूर होवे.

अथ अन्य गोली बालकके औरसा और मसानकी ।

हलदी १ तो०, ल्हस्सन १ तो०, बच १ तो०, सुहागा १ तो०, कटेहलीके फूलका जीरा १ तो०, धनत्रीके बीजा १ तो०, इनको मदिरामें खरल करके १ रत्तीप्रमाणकी गोली बना लेवे. पीछे बालकको दो वक्त देवे तो औरसा, श्वास, खांसी, मसान, ये सब रोग दूर होवें. इति बालरोगकी चिकित्सा ।

अथ आसवप्रकरणप्रारंभः ।

मुनक्का २ सेर, बबूलका कस २ सेर, गुड़ २० सेर, आंवला आधपाव, बालछड़ा १ छटांक, पत्रज १ छटांक, कचूर १ छटांक, चंदनका बुरादा १ छटाँक, स्याह मुसली २ तो०, सफेद मुसली।२।तो०, बहमन सफेद २॥ तो०, सुरख बहमन २॥ तोला, तोदरी जरद २॥ तोला, तोदरी सफेद २॥ तोला, बड़ी इलायची २॥ तो०, इन्द्रजव २॥ तोला, शौंफ

आधपाव, इनको कूटकर एक माटीके बड़े बरतनमें डाल सरसहवां सरोवरका पानी भर देवे. फिर उसका मुख ढँकके खमीर उठावे. फिर ढींकली यंत्रके राहसे अर्थात् भभकासे अर्क निकाल लेवे. पीछे ५ तो०, प्रमाण इस आसवको हमेशा खिलावे तो दिलदिमागमें ताकत बढ़े और खाना हजम होवे, और शरीरका रंग लाल होवे. इस आसवको पीनेवाला पुरुष अनेक स्त्रियोंके संग भोग करे.

अथ कुष्ठमें भिलावाँका आसव ।

१० सेर भिलावें लेके २ मन पानीमें डाल देवे. पीछे तीसरे दिन ७ सेर कीकरका बक्कल उसीमें डाल देवे. फिर चौथे दिन उसीमें ३० सेर गुड़ डाल दे. पीछे पांचवें दिन सूंठ आधपाव, काली मिरच आधसेर, इनको पीसकर उसीमें मिला देवे; पीछे ५ सेर सहत मिला देवे. जब खमीर तैयार हो जाय तब ढीकलीके राहसे अर्थात् भभकासे उसका अर्क खैंच लेवे. पीछे इसमें लौंग १ तोला, जावित्री १ तोला, दालचिनी १॥ तो०, केशर १ तोला, कस्तूरी ६ मासे, अतर ३ तोला, इन सबको कूट पीस अच्छीतरह इस अर्कमें मिला देवे. पीछे ४ तोलाप्रमाण इस आसवको रोज पिलावे तो कुष्ठ, दाद, रक्तविकार, सुनबहरी, मंडलरोग, अंडवृद्धि, आमवात, मृगीरोग, नासारोग जलंधररोग, संग्रहणी, शोथरोग, चर्मकीलक, उदररोग, बीसों प्रकारके प्रमेह, बवासीर, उरःक्षत, छर्दिरोग, ये सब रोग दूर होवें और नपुंसकपना दूर होवे।

अथ ल्हस्सनका आसव ।

ल्हस्सन ७ सेर, बेरकी जड़ २ सेर, कीकरकी छाल ७ सेर, गुड़ २० सेर, इसप्रकार इन ओषधियोंको लेकर यह ल्हस्सनका आसव बनाया जाता है. उसकी विधि कहते हैं कि पहिले १ बड़ा मठ लेकर उसमें उस पूर्वोक्त ७ सेर ल्हस्सनको छोलकर डाल देवे. फिर उसीमें दो २ मन पानी डालकर उन पूर्वोक्त ओषधियोंको भी उसी वक्त उसी मटकेमें डाल देवे. पीछे जब ४ दिन हो लेवे तब इसमें आंवला आध-

सेर, बहेड़ा आधसेर, बड़ी हरड़े आधसेर, इनको कूटकर मिला देवे. फिर खमीरा तैयार हो जावे तब ढींकली यंत्रके राहसे अर्थात् भभकासे इसका अर्क खैंच लेवे. फिर ४ तो० प्रमाण इस अर्कको पिलावे तो कफरोग, पित्तरोग, वायुरोग, मंदाग्नि ये सब दूर होवें और भूँख अच्छी लगे. त्रिदोष, सन्निपात, जावे और शिरोरोग, मुखरोग, दंतरोग, पेटका शूल, नेत्ररोग, उदररोग, हाथ पैरोंकी दाह, संग्रहणी, भगंदर, त्रिदोषका प्रमेह, गठिया बाय ये सब रोग दूर होवें. और इसको सेवन करनेवाला रोगी खटाईको त्याग दे ॥ इति आसवप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ माजूम बनानेकी विधि ।

पहिले कुचलाका माजूम कहते हैं. कुचलाको १ सेर लेके फिर उनके टुकड़े बना लेवे. पीछे उनको ८ पहरतक पानीमें भिगोया रक्खे. फिर उस पानीको बाहिर निकालके १० सेर पानीमें ७ दिनतक भिगोया रक्खे. पीछे उस पानीसे भी बाहिर निकालके अन्य १० सेर पानीमें औटावे. फिर आधा पानी बाकी रहे तब कुचलोंको निकालके सुखा लेवे. फिर २ सेर गौके दूधमें पकावे. जब दूधका खोआ हो जाय तब आधपाव घीको डालके उन कुचलोंको सेंक लेवे. पीछे उसमें सालिम मिसिरी ३॥ तो० इंद्रजव ३ तो०, कौंचके बीज ३॥ तो०, ढांकका गोंद ३॥ तो०, बोजबंद ३॥ तो०, शतावरि ३॥ तो०, चीता ३॥ तो०, सपेद मुसली ३॥ तो०, स्याह मुसली ३॥ तो०, पीपल ३॥ तो०, असगंध १॥ तो०, काली मिरच १॥ तो०, सूंठ १॥ तो०, धनियां १॥ तो०, लौंग १॥ तो०, दालचिनी १॥ तो०, शौंफ १॥ तो०, सफेद जीरा १॥ तो०, स्याह जीरा १॥ तो०, छोटी इलायची १॥ तो०, जायफल १॥ तो०, तज १॥ तो०, तेजपात १ तो०, इनको पीस कपड़छान कर पीछे २ सेर शहत लेके जरा अग्निपर चढ़ाके जोस देके इन सब औषधियोंको मिला देवे और कुचला सहित उस खोआको मिला देवे. इस प्रकार संपूर्ण औषधियोंको एक जगह खरल कर पीछे इसमें केशर ४ मा०, कस्तूरी ४ मा०, इ-

नको मिलावे. फिर ४ मासाप्रमाण इस औषधको प्रातःकाल और सायंकाल खिलावे तो नपुंसकपना,मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह, सुजाक, गलत्कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, वातरक्त, रक्तविकार, खाज,श्लीपदरोग,मृगीरोग,प्रसूतिका रोग, मस्तक शूल, पीनस, शिरोरोग, आधासीसी,एकांगबाय, अकड़बाय, संधिगत बाय, गठियाबाय, शीतांगबाय, अस्थिगतबाय, मज्जागत वात, मांसगत वात, और वायुकरके अकड़े हुए हाथ पैर, पंगुवात, खंजवात, कुब्जवात, अर्दितवात, मन्यास्तंभ, उरुस्तंभरोग, शोजा, आमवात, पांडुरोग, बवासीर, भगंदररोग, ये सब दूर होवें. इति कुचलामाजूम ।

अथ चोबचिनी माजूम ।

चोबचिनी५मा०,बालछड़ा२मा०,छोटी इलायची२मा०मोती२मा०, मूंगा२मा०,लौंग२मा०,दालचिनी २मा०,सोंठ२मा० पीपल२मा०, जिंद विदस्तर ३ मा०,तगर २ मा०, अफतीमू३मा०, मस्तंगी २ मा०, अगर २ मा०, मांईसूत्र अरबी २ मा, अंबरा २ मा०, गागरके बीज ३ मासे, मूलीके बीज ३ मासे, सलगमके बीज ३ मासे, तज ३ मासे, बहमन सुरख ३ मासे, बहमन सफेद ३ मासे, तोदरी सुरख ३ मासे, तोदरी सफेद३ मासे, गोखरू ३मासे, जायफल१मासा, जावित्री १० मासे, इन ओषधियोंको कूट कपड़छान कर अलग रख देवे. फिर दरूनिज अकरबी३तोला, कपूर कचूरी ३ तोला,सकाकुल मिसिरी १० तोला, बूरादाना १०तोला,सुरंज्या२तोला,नागरमाथा २ तोला, कूट २ तोला, रेवचिनी २ तोला, गाजवां,गुलाबके फूल, छिल्लूरे ये तीनों २ तोला इनका काढ़ा बनाकर आधा पानी बाकी रक्खे फिर उसको छान लेवे. पीछे पहिले जो दवाइयोंका चूर्ण बनाके रक्खा है उस चूर्णको इसमें डाल देवे;और खीराके बीज१०तोला, कुलफा १ तोला, कासनी १० मासे, खरबूजाके बीज१०मासे, इन ओषधियोंको घोटकर अर्क निकालकर उसी काढ़ेमें मिला देवे.

पीछे गुलाबका अर्क १०० मासे, बिहीका अर्क १०० मासे,आमका अर्क१००मासे, सेवतीका अर्क १००मासे, अनारका रस१०० मासे, ये सब रसभी उसी काढेमें मिला देवे और इन सब ओषधियोंसे तिगुना प्रमाण शहत और मिसिरी मिला देवे. इसप्रकार इन सब ओषधियोंका अर्क और काढ़ा आदि सब वस्तुओंको एक जगह अच्छे पात्रमें मिलाकर फिर अग्निपर चढ़ाके पकावे. जब अच्छीतरह पक जावें तब बादामकी गिरी १० मासे, अखरोट १० मासे, चिलगोजा १० मासे, मगज फीदक १० मासे, ये सब बारीक टुकड़े करके उसी पाकमें मिला देने चाहिये. फिर६ मासे केशरको गुलाबके अर्कमें खरल करके उसीमें मिला देवे. इसप्रकार बनाये हुए इस माजूमको चीकने बरतनमें डाल धरे.फिर १तोलाप्रमाण इस औषधको हमेशा सेवन करे तो शरीर पुष्ट होवे. शरीरका लाल रंग होवे,बहिरा आदमी अच्छीतरह सुनने लगे, दिलको ताकत करे, बल बढ़ावे, मुखमें सुगंध हो, नेत्रमें ज्योति होवे, अनेक स्त्रियोंके संग रमण करनेकी ताकत बढ़े, और वात, पित्त, कफ इन सबोंके रोग दूर होवें.

अथ अफीम छुटानेका नुसखा ॥

हवैजदवार१॥ तोला, अफीम ५ तोला, केशर ६ मासे, जदवार १ तोला, गोला नग १, इसप्रकार लेकर फिर इन चारों ओषधियोंको बारीक पीस उस गोलामें भर देवे. फिर गोलाका मुखबंद करके उसके चारों तरफ गेहूंका चून लपेट देवे. पीछे ७ सेर दूधमें उस गोलाको पकावे. जब दूधका खोआ हो जाय तब उस दूधको निकाल कर गोलाको कड़ाहीमें धरकर घृतमें डूबजावे इतना घृत डालकर. कड़ाहीके नीचे अग्नि जलाकर उस गोलाको पकालेवे. फर गोला जियादा जलगया हो तो ऊपरसे चक्कूसे खुरच लेवे.पीछे जावित्री५मासे बहमन सुरख ५मासे,बहमन सफेद ५ मासे, बादरंजबोया ५ मासे, मगजबादाम ८ मासे, चिलगोजा ८ मासे, कुलफा ८ मासे, बंशलो-

चन ८ मासे, कतीरा ८ मासे, खुरासानी अजमान ८ मासे, कुलफाकी जड़ ३ मासे, जायफल ३ मासे, जायफरान ९ मासे, मिसिरी ९ मासे, इनको बारीक पीसकर रोगनबीलसामें मकरोयकर पीछे उस गोलासमेत इन सब ओषधियोंको गुलाबके अर्कमें खरल करके चनाप्रमाण गोली बना लेवे और चांदीके वर्क ६ मासे, सोनाके वर्क ३ मासे, केशर ६ मासे, इन सब वस्तुओंका उन सारी गोलियोंके ऊपर लगा देवे. फिर अफीम खानेवाले पुरुषको १ गोली सायंकाल और १ गोली प्रातःकाल खिलावे तो उसका अफीम खाना छूट जाय, और इसको निरंतर सेवन करे तो शरीरको पुष्ट करे, धातु बढ़ करे, दिल खुसी होवे, इति माजूम प्रकरणम् ।

अथ जुलाबकी गोली ।

शुद्ध जमालगोटा १०, पीपल ४ मा०, सूंठ ४ मा०, हरड़ैकी छाल ४ मा०, सेंधा नमक ४ मासे, इनको बारीक पीस पानीके संग झाँड़ीके बेरकी प्रमाण गोली बना लेवे. फिर १ गोलीको शीतल पानीके साथ देवे तो जुलाब लगे और इसपर जितना शीतल पानी पीवे उतनेही दस्त लगें, दस्त हो लेवें, तब खानेको ल्हूकी खीचड़ी देवे.

अथ यूनानी जुलाब ।

उसबा १२ तो०, सनाय १२ तो०, निशोथ १२ तो०, बिस्फायज १ तो०, अफतीमू १ तो०, गुलाबके फूल १॥ तो०, बालछड़ा १॥ तो०, शौंफ १॥ तो०, सुरंज्या ४ तो०, सुरख चंदन १ तो०, इनको पीस कपड़छान कर पीछे १ सेर मिसिरी लेकर उसकी चासनी बना लेवे. फिर इस चासनीमें आधसेर सहत मिला देवे. पीछे चासनीको नीचे उतारकर उन पहिले कही हुई संपूर्ण ओषधियोंका चूर्ण कर उसमें मिला देवे और चमचासे अच्छी तरह हिलादेवे और ६ तो० लाजवरद लेके बारीक पीसकर इसी दवामें मिला देवे. फिर २ तोलाप्रमाण इस औषधको खिलाकर ऊपरसे गरम पानी पिलावे तो जुलाब होवे

रक्तपित्त जाय; खूनका विकार, पित्तविकार, उदरविकार, बद्धकोष्ठ ये सब रोग दूर होवें और इस जुलाबपर चावलकी खिचड़ीका कोजन करना पथ्य है.

अथ वातज्वरे मुंजिस ।

शोंफ १ तो०, उस्तखदूस १ तो०, मुलहटी १ तो०, हंसराज १ तो०, गाजवां १ तो०, बादरंजबोया १ तो०, इन ओषधियोंको काढ़ा बनाकर छानकर उसमें १ छटांक खांड़ मिलाके पिलावे तो मादा (मलगम) नरम होवे.

अथ वातरोगमें जुलाब ।

हंसराज २तो०, असल असूस२तो०, गाजवां २ तो०, उस्तखदूस २ तो०, सनाय २ तो०, इसकपेंचाके बीज२तो०, बादरंजबोया २तो०, उन्नाब १० दाने, सौंफ ६ मासे, सौंफकी जड़६मासे, अफतीमू७मासे, ल्हेसुवा ३०,इन दवाइयोंको काढ़ा बनाकर छानकर उसमें अमलतास १६ मासे, बादामरोगन ६ मासे, गरीको ६ मासे, गुलकंद १६ मासे, इनको ऊपर बुरकाके पिलावे तो वातज्वर जावे.

अथ पित्तज्वरमें मुंजिस ।

गुलाबके फूल ८ मासे, बनफ्सा ८ मासे, कासनी८ मासे, ल्हेसुवा दाने ३०, मुनक्का नग ५ इनका काढ़ा बनाकर उसमें तीन तोला मिसिरी मिलाके पीवे तो पित्तज्वर जाय.

अथ पित्तज्वरमें जुलाब ।

सनाह २ तो०, हरड़की छाल ३ तो०, ल्हेसुवाके दाने ३०अमली ३ तो०, कासनी१८ मासे,गुलनीलोफर ८मासे, इन दवाइयोंको रात्रिमें भिगो दे. फिर प्रातःकाल काढ़ा बनाय छानकर फिर ३ तो० शीरखी सत मिलाकर पिलावे तो जुलाब लगे.

अथ कफमें जुलाब ।

सौंफ ८ मासे, अनेसू ८ मासे, बादरंजबोया ८ मासे, हंसराज

८ मासे, अंजीर दाने ५, इनका काढ़ा बनाकर छानकर उसमें ४ तोला गुलकंद मिलाके पिलावे तो कफका विकार जावे.

अथ कफमें अन्य जुलाब ।

उन्नाब ७ दाने, ल्हेसुवा ३० दाने, अंजीर जरदा ५ दाने, मुनक्का १० दाने, मुलहटी १० मासे, बिस्फायज १० मासे, अनेसू ८ मासे, सनाह १ तो०, सौंफकी जड़ ६ मासे, अजमोदा ६ मासे, कासनीकी जड़ ६ मासे, शौंफ ६ मा०, इनका काढ़ा करके, पीछे अमलतास १४ मा०, निशोथ ८ मा०, गुलकंद ४ तो०, इन ओषधियोंको पूर्वोक्त काढ़ामें मिलाके पिलावे तो जुलाब होय, कफके रोग जायँ.

अथ सब रोगोंमें जुलाब ।

हरड़ोंकी छाल ६ मासे, निशोथ ६ मासे, सनाह १ तोला, गुलाबके फूल ५ मासे, मुनक्का १ तोला, अमलतास ६ मासे, शौंफ ६ मासे, इनका काढ़ा बनाकर छानकर ५ तो० खांड मिलाकर पिलावे तो जुलाब हो. इन जुलाबोंपर गरम पानी पीता रहे और चावलकी खीचड़ीका भोजन देवे यह पथ्य है.

अथ मालजोबनका जुलाब ।

मुलहटी ४ मासे, बादरंजबोया ४ मासे, स्याहातरा ४ मासे, हंसराज ४ मासे, गोरखमुंडी ४ मासे, विस्फारयज ४ मासे, अफतीमू ४ मासे, सुरख ४ मासे, मुनक्का १ तो०, गुलकंद २ तो०, इन दवाइयोंको बकरीके दूधमें भिगो देवे, पीछे मसलकर छानके पिला देवे, इसे दिन तीनतक करना फिर १ दिन पीछे यह विधि करना कि गुलबनप्सा ५ मा०, शौंफ ५ मा, समलतीफ ४ मा०, अनेसू ४ मा०, गुलगाजवां ४ मा०, तुसमकिरफस ४ मा०, मुलहटी ४ मा०, बादरंजबोया ४ मा०, स्याहातरा ४ मा०, हंसराज ४ मा०, गोरखमुंडी ४ मा०, विस्फायज ४ मा०, अफतीमू ४ मा०, गुलसुरख ४ मा०, मुनक्का ४ मा०, गुलकंद २ तो०, इन ओषधियोंको फटे हुए बकरीके दूधमें भिगो देवे

फिर ओषधियोंको मसलकर छानकर पिलावे. ऐसे ६ दिनतक पिलाके पीछे जुलाब देवे, सनाह १तो०, बादाम रोगन १तो०, कुरंड १ तो०, तुरंजबीन२तो,० अमलतास ६ तो०, शिर्षीसत ३ तो०, मुलहटी ४ मा०,बादरंजबोया४मा०,हंसराज४मा०,स्याहातरा४मा०,गोरखमुंडी ४ मासे, गुलगाजवां ४ मासे, तुसमकिरफस ३मासे, गुलकंद३तो०, इन दवाइयोंको बकरीके दूधमें भिगो देवे. पीछे उसे मसल और छानकर पिलावे तो जुलाब होवे. इसके ऊपर शौंफका अर्क व गाजवांके अर्कको मदत रक्खे.हमने जितने ये यूनानी जुलाब लिखे हैं उन सबोंपर गरमपानी पिलाना चाहिये और ये दवाइयां फटेहुये बकरीके दूधमें भिगोई जाती हैं. तहां बकरीके दूधको फाड़नेकी यह विधि है कि २ सेर बकरीके दूधको गरम करके उसमें६मासे शिरका मिला देवे तो दूध फट जावे और इन जुलाबोंपर यह ठंढाई है कि मुरब्बाका आंवला नग १, गुल गाजवां ७ मासे; अर्क गाजवां १ छटांक, अर्क शौंफ १ छटांक, अर्क गुलाबका १छटांक, मिसरी ३ तोला, इनकी यह विधि है कि मुरब्बाके आंवलेको पहिले खाके फिर गुलगाजवांको पीसकर इन तीनों अर्कोंमें मिलाके छानके पिला देवे.इसप्रकार यह मालजोवन जुलाब दिया जाता है.

इति श्रीवेरीनिवासिदादूपंथीमाधवदासवैद्यविरचित औषधप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे मिश्रिताध्याये जुलाबप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ रसमंजरीप्रकरणम् ।

खायेहुए मांसका रस नहीं पचा हो तो पाचन चूर्ण देके ऊपरसे गरम पानी पिलावे, अथवा मसूरकी दाल खवावे,अथवा पुराने गुडको औटाके पिलावे. और जंगली जीवका मांस नहीं पचा हो तो आंमकी गुठलीको सेंककर खवावे,तेलमें पकाके खायाहुआ मांसका अजीर्ण हो तो कांजीका पानी पिलावे, अथवा पुराना गुड़ खिलावे और नीलकंठ,तीतर,कमेड़ी,कबूतर, इनके मांसका रस नहीं पचा हो तो

बैंगनकी जड़ तथा कासनीकी जड़ इनको औटाके पिलावे. मृगका मांस नहीं पचा हो तो चूनाको पानीमें बुझाके पिलावे. उसमें दस्त लगकर मांसका रस पचे और विकार जाय. और आंब चूसनेका रस नहीं पचे तो सूंठ,सांठी,आंबका रस इनका सेवन करे,अथवा दूध पिलावे तो अजीर्ण जावे. कच्चा आटा[चून] खाया होवे तो दूध पिलावे और दूधका अजीर्ण रहा हो तो तेल पिलावे,तेलका अजीर्ण हो तो छाँछ पिलावे. और जो भैंसके दूधका अजीर्ण रहा हो तो सेंधा नमककी फंकी देवे तो अजीर्ण जाय. भैंसके दहीका अजीर्ण रहा हो तो शंखको फूंककर तिसका चूर्ण बनाके देवे. अथवा चावलोंके धोवनका पानी पिलावे, अथवा मीठा खिलावे, अथवा काली मिरच, काला नमक,लौंग इनको पीसके पानीके संग फंकी देवे तो दूध और छाँछका अजीर्ण जावे. जो घृतका अजीर्ण रहे तो सेंकी हुई मूंग चबावे, तथा भूगड़े चबावे व गरम पानी पिलावे तथा मटरका रस पिलावे तो घृतका अजीर्ण जाय. तथा ल्हस्सनका रस व जँभीरी निंबूका रस पिलावे तो घृतका अजीर्ण मिटे.जो मीठी वस्तु खानेका अजीर्ण हो तो निंबूका रस पिलावे, नमक चबावे और कचालूका शाक खिलावे, अदरखका रस पिलावे और खट्टी वस्तु खिलावे,तो मीठे पदार्थका अजीर्ण जाय. कचालूका अजीर्ण रहे तो केला खिलावे, और केलाका अजीर्ण रहे तो आंवला खिलावे,अथवा गौका घृत खिलावे तो केलाका अजीर्ण जाय, और कचालूका भी अजीर्ण जाय.और जंबीरी निंबूका अजीर्ण रहे तो नमक खिलावे. गोलाका अजीर्ण रहे तो साजी घोलके पिलावे. और चावलोंका रस नहीं पचे तो शिरसमके तेलका पदार्थ खिलावे, अथवा गरम दूध पिलावे. जो तेलका अजीर्ण रहे तो कांजीका पानी पिलावे और कांजी आदि खट्टीवस्तुका अजीर्ण रहे तो मीठे पदार्थ खिलावे तो अजीर्ण मिटे.और केशर,कस्तूरी,जायफल,नागरपान, जाविन्नी,कपूर,सुपारी इनका रस नहीं पचे तो समुद्रफल खिलानेसे अजीर्ण

जाय, धतूरके रसका अजीर्ण रहे तो बाड़ीका फूल खिलावे, अथवा बिंदालडोंडेका रस पिलावे तथा पोहकरमूलके पत्ते खिलावे तो धतूर-विकार जाय. जो अफीम खानेका विकार रहे तो सूंठ खिलावे, और भांगका अजीर्ण रहे तो मूली खिलावे. अथवा बनसठीका रस पिलावे तो अजीर्ण जाय. मूली नहीं पचे तो काले तिल चबावे, और काले तिलोंका रस नहीं पचा हो तो खट्टी वस्तु खिलावे, और पोस्तोंका रस नहीं पचे तो गरम पानी पिलावे और सिंदूरका रस नहीं पचा हो तो तुलसीका रस पिलावे और कसेर, दाख, सिंघाड़ा, खजूर, सिखरन इनका रस नहीं पचे तो सूंठके चूर्णकी फंकी देके गरम पानी पिलावे तो इन सब रसोंका अजीण जाय. जो पित्तका ज्वर बाकी रहगया हो तो काला नमक और कुलथी इनका काढ़ा बनाके पिलावे तो विकार जाय. और जो कच्चे सिंघाड़े खानेका अजीर्ण रहे तो गरम दूध पिलावे तो अजीर्ण जाय. जो पानीका रस रहे तो भूगड़े चबावे तो अजीर्ण जाय.गेहूंका रस रहे तो ककड़ी खरबूजा खावे. जो ककड़ी खरबूजाका रस नहीं पचे तो मिसिरीका सरबत पिलावे और मिसिरी सौंफ इनका चूर्ण बनाके दूधके साथ फंकी देवे तो ककड़ी, खरबूजा, इनके खानेका विकार मिटेबडका फल पीपलका फल, आंबका फल इनका रस रहे तो बासी पानी पिलावे. जो गाजरका रस नहीं पचे तो गुड खिलावे अथवा मिसिरी खिलावे. जो जमीकंद खानेसे विकार होवे तो धनियाँ तथा गुड खिलावे. जो पेठेका रस नहीं पचे तो गुड खिलावे. जो लाडू पूरी खानेका अजीर्ण रहे तो पीपलामूल खिलावे. जो संपूर्ण शाकोंका रस नहीं पचे तो तिलोंका खार खिलावे. जो शिरसमके पत्तोंके शाक-का रस रहे तो अदरखका रस पिलावे. जो फेनीका रस रहे तो लौंगका चूर्ण पानीके साथ देवे. जो पापड़का रस रहे तो सहोंज-नाके बीजोंका चूर्ण खिलावे. जो हींगका रस रहे तो जीरा खिलावे,

तथा उड़दके बड़े खिलावे. जो सोमलका रस रहे तो दूध चावल खिलावे तथा वमन करावे.और कंठ रुक जावे तथा तालुवा फट जावे तो दूध मिसिरी पिलावे और बाघका बाल खाजानेसे पीडा हो तो कसौंदीकी जड़को पीसकर चावलोंके धोवनके साथ पिलावे तो आराम होवे. और विष खानेसे दुःख उत्पन्न हो तो आलको कूटके फँकावे तो आराम होवे, अथवा कसौंदीको फंकावे तो विषका विकार जाय और सर्पका विष मिटे. जो अमली खाके दुःख पावे तो चूना खिलावे अथवा कांजीके पानीसे कुरले करवावे तो आराम हो. जो सुपारी खाके दुःख पावे तो शीतल पानी पिलानेसे आराम हो, और तेल खानेका विकार हो तो नमक त्रिफला इनका चूर्ण बनाकर खिलावे और दूध चावलका पथ्य देवे तो तेलका विकार मिटे. जो चावल खानेसे दुःख हो तो दूध खांड मिलाके पिलावे तो फायदा होय. इति अजीर्णरसमंजरीप्रकरणम् ।

अब अरबी व फारसी तथा भाषामें दवाइयोंके नाम गुण तथा वर्णन.

१ अरबीमें जिसे अवहल कहते हैं सो भाषामें माजूफल कहाता है.यह सरूका फल है. इसको तेलमें पकाके कानमें डाले तो कानकी पीडा जाय.

२ अरबीमें आबरेशम कहते हैं, फारसीमें बरेशम,भाषामें रेशम कहते हैं इसकी तासीर मातदिल है,दिल दिमाकको ताकत करता है. नेत्रों की जोत करता है, पुष्टाई करता है.

३ अरबीमें इबल कहते हैं,फारसीमें सुतर कहते हैं,भाषामें ऊंट कहते हैं. इस ऊंटकी ऊनको फूंकके जो नाकमें फोड़ा गूमड़ी हो उसमें लगावे तो जल्दी आराम होवे.

४ अरबीमें उरस कहते हैं, फारसीमें रास्तू कहते हैं, भाषामें नेवला कहते हैं. गुण-नेवलेके मगजको शिरकामें मिलाके नस्य देवे तो मृगीरोग जाय.

५ अरबीमें अतरज कहते हैं,फारसीमें पोस्ततुरुंज कहते हैं,भाषामें निंबू भिपारीका छिलका कहते हैं.तासीर गरम खुश्क है. ७ मासा प्रमाणको शहतमें मिलाके चाटे तो ज्वर जाय और माथामें बल करता है.

६ अरबीमें अस्मद कहते हैं, भाषामें सुरमा कहते हैं. इसका अंजन लगानेसे नेत्ररोग जायँ.

७ अरबीमें अजास कहते हैं, फारसीमें व हिंदीमें आलूबुखारा कहते हैं. तासीर शरद खुश्क है. दो जातका होता है. खट्टी जातका तो शरद खुश्क होता है और मीठी जातका गरम खुश्क होता है.इसको मुखमें रखनेसे तृषा जाय.आलुबुखाराका गूदा छीलके उसमें बराबरकी मिसिरी मिलाके फिर १ तो० गुलकंद मिलाके गोली बनावे. फिर इन गोलियोंका सेवन करे तो पित्तका अतिसार जाय.

८अरबीमें अक्षारूल, फारसीमें सरगीनगाभू कहते हैं, भाषामें गोबर कहते हैं. गुण—गोबर,कली चूना इनको मथके पेटपर लेप करे और धूपमें बैठकर सुखावे तो जलंधर रोग जाय.

९ अरबीमें उजनअनफा कहते हैं, फारसीमें अजखर कहते हैं, भाषामें सोंठ कहते हैं.गुण—२ मासे सोंठको गुलाबके अर्कके संग देवे तो मूत्रको साफ करे. इसकी तासीर गरम खुश्क है और स्त्रीके पेरा-को बंद करती है और शोजाको दूर करती है.

१० अरबीमें अजाद कहते हैं, भाषामें निंब कहते हैं. निंबकी छालको पीसके शहतमें मिलाके चटावे तो रक्तविकार जाय और संपूर्ण शरीरकी खाज दूर होवे.

११ अरबीमें अरुसास कहते हैं, फारसी और भाषामें सफेद कासनी कहते हैं. गुण-तासीर शरद खुश्क है.इसको सौ१००बार पानीमें धोके बराबरकी मिसिरी मिलाके अंजन करे तो पड़वाल जायँ. जिसके नेत्रोंके भीतरको पलक जामती हैं वे दूर होवें. और उस जगहमें मोम,चीनियां कपूर इनको गौके घृतमें पीसके घावपर लगावे तो संपूर्ण जखम मिटजावे.

१२ अरबीमें आसरूण कहते हैं, भाषामें गेरू कहते हैं. गुण—तासीर गरम खुश्क है. शहतमें मिलाके चाटे तो बादी और कफसे उत्पन्न हुए दस्त बंद होवें.

१३ अरबीमें असद कहते हैं, फारशीमें शेर कहते हैं, भाषामें बाघ कहते हैं. गुण—बाघकी चर्बीको घृतमें मिलाकर शरीरपर मालिश करे तो सर्प नहीं काटे और जो पुरुष इस बाघके मूँछके बालको खा जाय तो मरजावे.

१४ अरबीमें आंनन कहते हैं, फारसीमें सलान कहते हैं, भाषामें इलानी कहते हैं कि जिसकी साजी हरेंता है. तासीर गरम खुश्क है. इसके ८ मासे पत्ते लेकर, काढ़ा बनाकर सहतमें मिलाके पिलावे तो स्त्रीका गर्भ गिरे.

१५ अरबीमें असलसूस कहते हैं, फारसीमें बेलअफती कहते हैं, भाषामें मुलहटी कहते हैं. तासीर मातदिल हैं.७ सात मासा प्रमाण इसको कूटकर पानीमें भिगो देवे. फिर प्रातःकाल मसलके छानकर मिसिरी मिलाके पिलावे तो छातीका दर्द, आंखकी पीड़ा, खांसी, पथरी ये सब रोग दूर होवें.

१६ अरबीमें असलूल कहते हैं, फारसीमें बेखनेंफ कहते हैं, भाषामें नरसलकी जड़ कहते हैं. तासीर मातदिल है. जिसकी देहमें तीर लगा हो उसको उबालकर पिलावे तो तीर निकल जावे और जिसका पैर दुखता हो उसके पैरपर सिरकामें पीसकर लेप करे तो पैरकी पीड़ा जाय.

१७ अरबीमें अफ्यून कहते हैं, भाषामें अफीम कहते हैं. तासीर शरद खुश्क है. अफीमको घृतमें पकाके कानमें डाले तो कानकी पीड़ा जाय.

१८ अरबीमें अकाकिया कहते हैं, फारसीमें खयारेन कहते हैं, भाषामें खीराके बीज कहते हैं. तासीर शरद तर है. खीराके बीज ४

मासा, धनियां ४ मासा, इनको पानीमें पीस पिलावे तो गरमीका ताप जाय और गुदाकी खुजली मिटै और शहत मिलाके पिलावे तो तेज होवे.

१९ अरबीमें आमांअलअरद कहते हैं, फारसीमें खरातीन कहते हैं, भाषामें गिंडोभा कहते हैं. यह नामर्दकी पट्टी चढानेकी औषधमें काम आता है.

२० अरबीमें अनेसू कहते हैं, फारसीमें वाजयांन कहते हैं. भाषामें शौंफ कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है, मूत्रको साफ करतीहै. पाचन है.

२१ अरबीमें इहलजअल्फर कहते हैं, फारसीमें हलेला कहते हैं, भाषामें हरड कहते हैं. तासीर शरद खुश्क है, हरड़ोंको गुलाबके जलमें पीसकर नेत्रोंमें अंजन करे तो नेत्रकी पीडा दूर होवे. हरड़ोंकी छाल २ तो०, कूटकर काढ़ा बनाकर मिसिरी मिलाकर पिलावे तो उदरकी पीड़ा दूर होवे और हरड़ोंकी छाल २ मासा, पीसकर पीछे ४ छटांक पानीमें छानकर फिर तोला सीरखिस्त मिलाके इसे गरम करके पिलावे तो दस्त होवें, कोठाकी गरमी नष्ट होवे.

२२ अरबीमें इहलाज असवद कहते हैं, फारसीमें हलेला स्याह कहते हैं, भाषामें जंगी हरड़े कहते हैं, तासीर सरद खुश्क है. इसको शौंफके पानीमें घसकर नेत्रोंमें डाले तो नेत्रके सब रोग जावें. और १०मासा इन हरडोंको कूटकर घृतमें मिलाकर खांड मिलाकर फंकी लेवे तो खुलासा दस्त होवें, कबजी दूर होवे. उदरकी पीडा जाय.

२३ अरबीमें इहलज कवली कहते हैं, फारसीमें बलेला कहते हैं, भाषामें बहेड़ा कहते हैं. यह बहेड़ा जो पानीमें डूब जावे सो अच्छा होता है. तासीर शरद खुश्क है, मस्त दिल है, ४ मासा प्रमाण इसको पीसकर शहतमें मिलाकर चाटे तो कफका नाश होवे और भूँख लगे.

२४ अरबीमें एेल कहते हैं. फारसीमें गुलजार कहते हैं, भाषामें मूग,

हिरण कहते हैं,हिरणके सींगको जलाकर कतीरा और गोंद मिलाकर खावे तो छातीका दर्द तोड़ मिटे.

२५ अरबीमें बादरिंजि कहते हैं, भाषामें तुलसीका बीज कहते हैं, तासीर शरद खुश्क है.भिगोकर मीठा मिलाकर खावे तो चित्तका भ्रम दूर होवे और शरीरमें बल करे, कफका रोग जाय.

२६ अरबीमें बादजा कहते हैं,भाषामें बैंगन कहतें हैं, तासीर गरम खुश्क है,बवासीरको पैदा करता है,इसको सिरकामें मिलाके खावे तो कुछ विकार नहीं करता है.

२७ अरबीमें विडग काबली कहते हैं,भाषामें बायाबिडंग कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. १० मासा बायबिड़ंगको दूधमें मिलाके पीवे तो उदरके कृमि जावें,

२८ अरबीमें कजवरत कहते हैं,फारसीमें परस्यामवसा कहते हैं, भाषामें हंसराज कहते है.तासीर मातदिल हैं.

२९ अरबीमें बजरूल कत्तन् कहते हैं,फारसी और भाषामें इसबगोल कहते हैं.तासीर शरद तर है,गरमीका दस्त बंद होवे और मिसिरीके साथ लेवे तो धातूको भी बंद करता है.

३०अरबीमें बदरूलखतमी कहतेहैं,भाषामें गुलखैराका बीज कहते हैं. तासीर शरद खुश्क है.इसके सेवनसे गरमीकी खांसी मिटे.

३१अरबीमें बजरूल कहते हैं,फारसीमें तुखतमव कहते हैं,फारसीमें खुरासानी अजमान कहते हैं,तासीर शरद खुश्क है.ज्यादा इसको खावे तो चित्तमें भ्रम हो जाता है.

३२अरबीमें बजरूकी जल कहते हैं,फारसीमें तुसमतुरबत्त कहते हैं, भाषामें मूलीका बीज कहते हैं,तासीर गरम खुश्क है,जहरी जानवर लड़ जाय तो इन मूलीके बीजोको पीसकर लगानेसे जहर जाता रहे.

३३ अरबीमें बजरूल हिंदपा कहते हैं, फारसीमें तुसमकासनी

कहते हैं, हिंदीमें कासनी कहते हैं, तासीर मातदिल है और शरद है, पित्तज्वरको नष्ट करती है.

३४ अरबीमें बजरूल एजीर कहते हैं. फारसीमें तुसम अंजीर कहते हैं,हिंदीमें अंजीरका बीज कहते हैं. तासीर गरम खुस्क है, ९ मासा इन बीजोंको पीसकर गौके दूधमें पकाकर खावे तो कामदेवकी वृद्धि होवे और शहतमें मिलाकर इंद्रियपर लेप करे तो तेजी होवे.

३५ अरबीमें तुसमबजरूलरिया कहते हैं, फारसीमें तुसमसलगम् कहते हैं, हिंदीमें सलगमके बीज कहते हैं,तासीर गरम तर है, सलगम्के बीज २ मासा, खरबूजाके बीज २ मासा, इनको खावे तो शरीरमें अत्यंत बल होवे.

३६ अरबीमें वजरूल वशलज कहते हैं, फारसीमें तुसमप्याज कहते हैं. हिंदीमें प्याजके बीज कहते हैं. २ मासा प्याजके बीज पानीके संग घिसकर खावे तो कामदेवकी वृद्धि होवे.

३७ अरबीमें वजरूलकिसा कहते हैं, फारसीमें तुसमखयारेन कहते हैं, हिंदीमें काकड़ीके बीज कहते हैं, तासीर शरदतर है. कतीरा मिलाके खावे तो मूत्रकृच्छ्र जावे और शरीरकी गरमी जावे.

३८ अरबीमें वजरूलसुकद कहते हैं,फारसीमें तुसमवादरंज कहते हैं, हिंदीमें खीराके बीज कहते हैं, तासीर शरदतर है, मिसिरी मिलाके पानीमें पीसकर पीवे तो सुजाक जाय. निंबूकी सकंजी मिलाके पीवे तो गरमीका ताप जाय.

३९अरबीमें बजरूलबत्तीस कहते हैं,फारसीमें तुसमखरबूजा कहते हैं, हिंदीमें खरबूजाके बीज कहते हैं, तासीर गरमतर है, घोटकर पीवे तो गरमीका ताप जाय, मूत्र साफ आवे और घोटकर मिसिरी मिलाके पीवे तो तृषा मिटे.

४० अरबीमें बजरेहा कहते हैं, फारसीमें तुसमरेहा कहते हैं, हिंदीमें मरुवाके बीज कहते हैं, तासीर शरद खुश्क है १ तोला

१०

प्रमाण इन बीजोंको मिसिरीके सरबतके साथ देवे तो चित्तका भ्रम दूर होवे, दिलको ताकत करते हैं.

४१ अरबीमें बकताक कहते हैं, फारसीमें और हिंदीमें तरबूज कहते हैं. तासीर शरदतर है, गरमीमें फायदा करता है.

४२ अरबीमें बीलंदर कहते हैं, भाषामें भिलावाँ कहते हैं, तासीर गरम खुश्क है. १ भिलावाँ लेके उसकी टोपी दूर करके अखरोटकी गिरीके साथ खावे. अथवा तिलोंके साथ नित्य खावे तो कुष्ठरोग, अधरंगबाय, लकुवाबाय, ये सब दूर होवें,बुद्धि तेज होवे.

४३ अरबीमें तांबोल कहते हैं, फारसीमें वरगतांबोल कहते हैं. भाषामें पान कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. खानेसे मुखकी दुर्गंधि जावे, दांत नहीं हिलें, शरीर साफ रहे, शरीरका रंग लाल अच्छा हो जावे, अन्न पचे और भूँख लगे.

४४अरबीमें मातूफा कहते हैं, फारसीमें तथा भाषामें सेव कहते हैं. सेव खट्टी और मीठी दो जातकी होती है. इसके खानेसे शीघ्रही वमन मिटे.

४५ अरबीमें तीमर कहते हैं,फारसीमें खुरमा कहते हैं,हिंदीमें छुहारा कहते हैं, तासीर गरम है. इसके खानेसे कामदेवकी वृद्धि होती है और पीठका दर्द मिटता है.ज्यादा खानेसे नाकमें फोड़े निकल आते है

४६ अरबीमें तोदरी कहते हैं,तासीर गरम खुश्क और गरमतर भी है,पीसकर शहदमें मिलाके चाटे तो बलकी वृद्धि करे और पानीमें पीसकर मस्तकपै लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय और बादामरोगनमें जरद तोदरीको पीसकर इंद्रियपर लगावे तो नामर्दपना दूर होवे.

४७ अरबीमें तोतिया कहते हैं, हिंदीमें नीलाथोथा कहते हैं,मलहममें डालनेसे घावको भरता है, अंजन करनेसे नेत्ररोग दूर होते हैं.

४८अरबीमें तूतहलवा कहते हैं, फारसीमें इसकीह कहते हैं, हिंदीमें सहतूत कहते हैं. मीठे और खट्टे दो जातके होते हैं. तासीर गरमतर

है. खानेसे शरीर मोटा होवे, और शरीरका रंग लाल होवे. और इसका रस निकालकर पीवे तथा कुरला करे तो दांतोंकी पीड़ा जाय और दस्त बंद होवें और काले सहतूतके खानेसे प्रमेहरोग दूर होता है.

४९ अरबीमें थोम कहते हैं, फारसीमें सीरन कहते हैं, हिंदीमें ल्हस्सन कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. जखमको दूर करता है, बादीवाले मनुष्यको फायदा करता है, दृष्टि तेज करता है और पाचक है.

५० अरबीमें जद्वार कहते हैं, फारसीमें करकीन कहते हैं, हिंदीमें निवरसी कहते हैं. इसको दूधमें पीसकर पीवे तो खाया हुआ जहर वमनके राहसे उतर जावे. २ मासा निरवसीको पीसके मिसिरीके सरबतमें मिलाकर, फिर १ लोहेकी कीलको तपाकर इसमें बुझाकर पिलावे तो चौथिया ताप जावे.

५१ अरबीमें जजवाज कहते हैं. फारसीमें मगजमाजू कहते हैं. भाषामें माई कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है और शरद खुश्क भी है. जो इसको दहीमें मिलाकर पीवे तो अतीसार जाय और शिरकामें पीसकर लेप करे तो शोजा दूर होवे. जो २ मासा माईको पीसकर शहतमें मिलाके चाटे तो छर्दि जाय.

५२ अरबीमें जलअनार कहते हैं. फारसीमें गुले अनार कहते हैं, हिंदीमें अनारके फूल कहते हैं. तासीर शरद खुश्क है. इनको सुखाके पीसकर दांतोंमें मसले तो दांत दृढ होवें और काढ़ा करके कुरला करे तो मुखपाक दूर होवे.

५३ अरबीमें जोज कहते हैं. फारसीमें चारमगज कहते हैं, हिंदीमें अखरोट कहते हैं. तासीर गरमतर है. इसको ज्यादा खावे तो दस्त लग जावें.

५४ अरबीमें जोजवे कहते हैं, हिंदीमें जायफल कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. मगजमें तरी करता है, नजरको तेज करता है.

५५ अरबीमें जोजम आसल कहते हैं, फारसीमें जोजम कातल

कहते हैं, हिंदीमें धतूरा कहते हैं, धतूराके ८ मासे बीज खावे तो आदमी मरजाय. जो इसके ऊपर दूध पीवे तो जहर उतर जाता है.

५६ अरबीमें जलपका कहते हैं, भाषामें मैनफल कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. २ मासा मैनफलको जुलाबकी दवामें मिलावे तो वमनके राहसे कफ निकल जावे.

५७ अरबीमें हवलकितन कहते हैं, फारसीमें यवादाना कहते हैं, हिंदीमें विंदोला कहते हैं. तासी गरमतर है. विंदोलाकी गिरी ५ मासे, मिसिरी २ तोला, इन दोनोंको दूधमें पीसकर पीवे तो मूत्र-रोग जाय. पेसाब साफ आवे.

५८ अरबीमें हवरुमान कहते हैं. भाषामें अनारदाना कहते हैं. तासीर शरद खुश्क हैं. छर्दिको दूर करता है. पाचन है. शरीरकी गरमी को दूर करता है.

५९ अरबीमें हवलल्रूमक कहते हैं, फारसीमें वाहदाना कहते हैं, हिंदीमें जमालगोटा कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. इसके बहुत खानेसे आदमी मर जाता है.

६० अरबीमें हवलकरा कहते हैं, हिंदीमें कैहका बीज कहते हैं. इसको घोटकर मिसिरी मिलाकर पीवे तो गरमी तृषा जाय और खुश्की मिटे.

६१ अरबोमें हसक कहते हैं, फारसीमें खारखस कहते हैं, हिंदीमें गोखरू कहते हैं. यह पथरीको दूर करता है. धातुको बंद करता है.

६२ अरबीमें हलसा कहते हैं, फारसीमें सलित कहते हैं, हिंदीमें मेथी कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. इसके खानेसे छातीका दर्द जाय और वायुकी खांसी जाय.

६३ अरबीमें हजलहजूर कहते हैं, फारसीमें तुसमेवद अंजीर कहते हैं, हिंदीमें अरंडीके बीज कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है. इसके तेल-से जुलाब बहुत साफ लगता है.

६४ अरबीमें हमसक कहते हैं, फारसीमें मनमें खूद कहते हैं, हिंदीमें

चना कहते हैं,तासीर शरद खुश्क है,लोहूको साफ करता है. मूत्रको साफ करता है. पथरीको दूर करता है.

६५ अरबीमें हिमताक कहते हैं,फारसीमें गंदम कहते हैं,हिंदीमें गेहूँ कहते हैं.तासीर गरमतर है.जो कुत्तासे काटा गया हो वह अपने मुखमें गेहूंको चाबके उनको घावपर लगावे तो आराम होवे.

६६अरबीमें हवनील कहते हैं,फारसीमें तुसमनीलोफर कहते हैं, हिंदीमें समंदरशोष कहते हैं.तासीर गरम खुश्क है. ३मासा समंदरशोषको खावे तो कफके रोग,पेटके कृमि,श्वेत कुष्ठ,ये सब दूर होवें.

६७अरबीमें हवलवान कहते हैं, हिंदीमें पिस्ता कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है.इसके खानेसे खुजली और कलेजेकी पीडा दूर होवे.

६८अरबीमें हजरूलपीह कहते हैं,फारसीमें मारमुहारा कहते हैं. यह सर्पकी पीठपर होता है.काला रंगका है.गरमपानीमें घिसकर पिलावे तो जहरमात्र दूर होवे.

६९अरबीमें हजूरूसशिव कहते हैं, फारसीमें संगपेसम कहते हैं, हिंदीमें होलदिली कहते हैं.हरे रंगका अच्छा होता है.पथरीकी किसम है. कष्टवाली स्त्रीके गलेमें बांधे तो प्रसूत होवे और कष्ट मिटे और गलेमें रखनेसे चित्तभ्रम दूर होवे.

७०अरबीमें हलीतजो कहते हैं,फारसीमें अंगोजा कहतेहैं, हिंदीमें हींग कहते हैं. तासीर गरम खुश्क है.इसके खानेसे बादी दूर होती है और चौथइया ताप जाता है, तथा पेटका शूल दूर होता है.

७१अरबीमें हिना कहते हैं,हिंदीमें मेंहदी कहते हैं. तासीर मातदिल है. १॥मासा मेंहदीको औटाकर मिसिरी मिलाके पिलावे तो पेटकी पीडा जाय.

इति श्रीऔषधप्रकाश (व्याधिहरण) ग्रंथे ओषधीनां नामगुणकथनं समाप्तम्.

अथ शारीरकप्रकणम् ।

तहां पहिले सृष्टि उत्पन्न होनेका कारण कहते हैं।

इस संपूर्ण ब्रह्मांडका कारण इच्छारहित सच्चिदानन्दस्वरूप ऐसा

जो ब्रह्म परमात्मा उसकी प्रकृति नाम माया है. सो वह परमात्माकी माया मिथ्या है जैसे रूपकी प्रतिच्छाया नाम प्रकाश. सो वह परमात्माकी माया तो जड है, परन्तु चैतन्य जो परमात्मा उसके संयोगसे इस अनित्य संसारको नटके ख्यालकी तरह इस मायाने किया है. और इस संसारकी माया जो प्रकृति सो प्रथम बुद्धिको उपजावती है. वह कैसी है, इच्छामयी महत्तत्त्वसे अहंकार उपन्न हुआ. पीछे वह अहंकार रजोगुण, सत्वगुण, तमोगुणमय तीनप्रकारका हुआ. पीछे सत्वगुण रजोगुणसे मिली दश इन्द्रियोंको पैदा करता है और मनभी इन दोनोंहीसे पैदा होता है.

अथ दश इन्द्रियोंका स्वरूप लिखते हैं ।

कान१, त्वचा २, नेत्र३, जिह्वा ४, नासिका ५, ये तो पांच ज्ञान इन्द्रिय और वाक् ६, हाथ ७, पग ८, लिंग ९, गुदा१०, ये पंच कर्म इन्द्रिय हैं. तमोगुण है सो, बहुत सत्वगुणसे मिल अहंकारसे पंचतन्मात्राओंको उत्पन्न करता है.

पंच तन्मात्राका स्वरूप ।

शब्द१, स्पर्श२, रूप३, रस४, गंध५, इनमें शब्द तन्मात्रासे तो आकाश १, स्पर्शतन्मात्रासे वायु २, रूपतन्मात्रासे अग्नि ३, रस तन्मात्रासे जल ४, गंधतन्मात्रासे पृथिवी ५ पैदा हुई है.

अथ ज्ञानेंद्रियोंका विषय ।

कानका विषय शब्द१, त्वचाका विषय स्पर्श२, नेत्रका विषय रूप३, जिह्वाका विषय रस४, नासिकाका विषय अच्छीतरह आस्वाद लेना.

अथ प्रकृतिनाम लिखते हैं ।

महत्तत्त्व नाम महाअहंकार १, पंचतन्मात्रा ५ दश, १० इन्द्रिय, मन १ प्रकृति १७ और इन्द्रिय१० मन १, महाभूत५, ये १६ विकार हैं. ये सब मिलें तब २४तत्त्व होते हैं. पीछे तत्त्वका यह शरीररूपी

घर बने है. तब इस घरमें जीवात्मा शुभ अशुभकर्मोंके आधीन मन-रूपी दूतके वश हो शरीररूपी घरमें आपके बसे, पीछे जीवसंयुक्त इस शरीरको बुद्धिमान् देही कहते हैं. सो यह देही पाप,पुण्य, सुख दुःखादिकोंसे व्याप्त हुआ और यही जीवात्मा, मनसे बँधाहुआ अपने किये कर्मबंधनसे यह बँधा है और काम१,क्रोध२, लोभ ३,मोह४, अहंकार ५, दश इन्द्रिय१०,बुद्धि १, ये सब अज्ञान हुए जीवात्माके बंधनके अर्थ हैं और जीवात्माको आत्मज्ञान हो तो इसकी मुक्ति हो. और जिसमें दुःख उपजे उसे व्याधि कहिये, जिसमें सुख उपजे उसे आरोग्य कहिये.

इति सृष्टिकी उत्पत्ति ।

अथ मनुष्यके शरीरमें जो कुछ, वायु, पित्त, कफ, सर्वधातु, उपधातु, और शरीरकी उत्पत्ति और नाश इन्हे आदि ले सब स्वरूप यथार्थ अतिसंक्षेपसे अपनी बुद्धिमाफिक लिखते हैं.

मनुष्यके शरीरमें इतनी वस्तु हैं ।

कला७,आशय७,धातु७,उपधातु ७,सातों धातुओंके मल७,त्वचा, दोष३ हैंऔर शरीरमें मांस, हाड़, और मेद,इन सबके बांधनेकी नसें ९००हैं,और शरीरमें जोड२१०हैं,और कईएक आचार्योंके मतसे३०० हाड़ हैं,१०७मर्मस्थान हैं, शिदानसें१०७हैं,रसके बहानेवाली धमनी नाड़ी२४हैं,पेशी अर्थात् मांसकी पिंडी५००हैं,स्त्रियोंके मांसकी पिंडी ५२० हैं, सबसे बड़ी नाडी सबशरीरव्यापिनी १६ हैं, उन्हें कंडरा कहते हैं, इस मनुष्यके शरीरमें१०छिद्र हैं, स्त्रीकी देहमें१३ छिद्र हैं.

अथ कलाका स्वरूप लिखते हैं ।

धातु और आशय इनके बीच जो झिल्ली हैं जिसमें बाल रहते हैं उसे कला कहते हैं. वह कला७प्रकारकी है. मांस,रुधिर,मेद इन तीनोंके बीच एक२झिल्ली है३,इनके और फीहाके बीचमेंएकझिल्लीहै४,आंतोंके

बीच एक झिल्ली है ५, एक झिल्ली उदरकी अग्निको धारण कर रही है ६, एक झिल्ली वीर्यको धारण कर रही है ७,ये ७ कला कहिये.

अथ सात ७ आशय लिखते हैं ।

हृदयमें आशय नाम स्थान कफका घर १, हृदयके नीचे आमका स्थान२,नाभिके ऊपर बाईं ओर अग्निका स्थान३,अग्निके ऊपर तिल है,नाभिके नीचे पवनका स्थान ४, पवनके स्थानके नीचे पेडूमें मलका स्थान ५, पेडूके लगताही कुछ नीचे मूत्रका स्थान है, उसे वस्ति कहिये ६ हृदयके कुछ ऊपर जीवका और रुधिरका स्थान७है. ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषोंके आशय हैं. स्त्रीके आशय ३ अधिक हैं एक तो गतिका स्थान १, दो दूधके स्थान स्तन.

अथ सात धातु लिखते हैं ।

रस १, रुधिर २, मांस ३, मेद ४, अस्थि ५, मज्जा ६,शुक्र७, ये सातों धातु पित्तके तेजकर पचे हुए महीने एकमें वीर्यको पैदा करते हैं. चौथे चौथे दिन एक एक धातु पैदा होता है. जो अन्न पानी खाय सो पित्तके तेजसे पकि रसका रुधिर हो जाता है, इसीतरह सातोंधातु जान लीजे.

अथ सातों उपाधातु लिखते हैं ।

जीभका मल,नेत्रका मल,कपोल,(गाल)का मल, तीनों रसधातुके उपधातु हैं १, रंजक पित्त रुधिरका उपधातु हैं,कानके मलको उप-धातु जानिये ३,जीभ और दांतके मलको उपधातु जानिये४,बीसों नख (नखों) को हाडोंका उपधातु जानिये ५, नेत्रमें कीचड़ आवे उसे उपधातु जानिये ६, मुखऊपर चिकनापन और कालापन७,ये शुक्रके उपधातु हैं और स्त्रीके २ धातु और हैं एक तो स्तनोंमें दूध १, और एक स्त्रीधर्म २, ये दोनों समयमें होते और समयमेंही जाते रहते हैं और२भी सातों धातुसे जो पैदा होता हैं सो लिखते हैं. शुद्ध मांससे पैदाहुआ जो घृत उसे वसा कहिये ३,पसीना४,दांत५,केश ६

ओज७,ये सब शरीरमें रहते हैं,सो तो चिकने और शीतल हैं, शरीरमें बल और पुष्टताके करनेवाले हैं, ये भी सातो धातुओंसे पैदा होय हैं.

अथ सातो त्वचाओंको लिखते हैं ।

ऊपरकी त्वचा अवभासिनी नाम चिकनी है, और विभूतिका स्थान है १,दूसरी जिसमें तिल पैदा होते हैं २,तीसरी त्वचा सुपेद है,उसमें चर्मदल नाम रोग पैदा होता है३,चौथी त्वचा तांबेके रङ्ग-समान है,उसमें सुपेद कोढ पैदा होता है४,पांचवीं त्वचा वेदिनी नामक है उसमें सब कोढ़ पैदा होते हैं५,छठी त्वचा रोहिणी नामकी है,उसमें गुमड़ी,गण्डमाला दिक पैदा होते हैं६,सातवीं त्वचा, स्थूलनामक है उसमें विद्रधि रहती है ७,ये सातो त्वचा दो जवके प्रमाण मोटी हैं.

अथ तीनों दोषोंका स्वरूप लिखते हैं ।

वायु १, पित्त २, कफ ३, इनको दोष और मलभी कहते हैं सो एक एक पांच ५,पृथक्२स्थानोंमें रहते हैं.इन तीनोंमें वायु बलवान् है,सो यह वात शरीरमें सब वस्तुको विभाग कर सब शरीरमें नसोंके द्वारा सर्वत्र पहुँचा देता है, पित्त और कफ पंगुले हैं. यह वातही इस शरीरमें बलवान् हो सब रसादिकोंको सब देहमें पहुँचाता है, यह वायु रजोगुणमय,सूक्ष्म, शीतल,रूखा और हलका है, यह, वायु मलके आशयमें१,कोष्ठमें२,अग्निके स्थानमें३,हृदय ४, कंठ ५ इनमें रहता है. ये मुख्य स्थान हैं और यह सब शरीरमें रहता है,गुदामें तो इसका अपान नाम है१, नाभिमें इसका समान नाम है २, हृदयमें इसका प्राण नाम है ३, कंठमें उदान नाम है ४, जो सब-शरीरमें रहै उसका नाम व्यान है ५, इति वायुका स्वरूप है ॥

अथ पित्तका स्वरूप ।

पित्त गरम,पतला,सत्वगुणमय,तिखा तथा कडुवा है,और यह दग्ध हुआ खट्टा होता है,यह पांच स्थानोंमें रहता है,अग्न्याशयमें तिलप्रमाण यह अग्निस्वरूप हो रहता है१, त्वचामें यह कांतिका करनेवाला है,

११

नेत्रोंमें यह रहकर सब वस्तुओंको पचाय देता है और खाये रसको रुधिर करदेता है४ और हृदयमें रहता जो पित्त सो बुद्ध्यादिकको करता है५, पाचक१, भ्राजक२, रंजक ३, आरोचक ४, साधक ५, ये पित्तके नाम हैं.

अथ कफका स्वरूप ।

कफ चिकना, पिच्छिल, तमोगुणमय है. यह दग्धहुआ खारीहोतहै. आमाशय१, मस्तक२, कंठ३, हृदय४, संधि ये५, मुख्य स्थान है इनमें रहता है. और देहमें रहताहुआ देहकी स्थिरताको और सब अंगके कोमलपनेको करता है. स्वेदन१, स्नेहन२, रसन३, अवलंबन४, ये इसके नाम हैं.

अथ नसोंका स्वरूप ।

अथ मनुष्यके देहमें मांस, हाड़, मेद, इनके बांधनेके विषे स्नायुनाम नसें कहीं हैं.

अथ हाड़ोंका स्वरूप ।

देहके विषे ये आधार हैं, देह इन विना खड़ा नहीं रहता और देहमें सार येही हैं.

अथ मर्मस्थानका स्वरूप ।

जीवको धारनेवाला मर्मस्थान है.

अथ नसोंका स्वरूप ।

संधी २ इनसे बँधी है, और वायु, पित्त, कफ और धातुओंको भी यही नसें बहाती हैं.

अथ धमनीनाडीका स्वरूप ।

धमनीनाडी रस और पवनको बहती है.

अथ मांसकी पिंडीका स्वरूप ।

मांसकी पिंडी शरीरमें बलको करतीहै और शरीरको धारण कररही है

अथ कंडराका स्वरूप ।

सबमें बड़ी नसोंको कंडरा कहिये, सो वे १६ सब अंगोंको प्रमादमें और संकोच करती हैं.

अथ दस रंध्रोंका स्वरूप ।

नाकके दो, नेत्रोंके दो, कानोंके दो, हैं, लिंग, गुदा और मुखके एक२ छिद्र हैं. दशवाँ मस्तकमें. ये पुरुषोंके रंध्र हैं और स्त्रियोंके ३ अधिक हैं, दो स्तनोंमें एक गर्भाशयका और इस शरीरके रोम २ में सूक्ष्म अनंत छिद्र हैं, नाभीके पास बाई ओर फुप्फुस२हैं. उदानवायुका जो आधार उसे फुप्फुस२कहिये,और प्लीहानाम फीहा है और नाभीके पास दाहिनी ओर यकृत् है और रुधिरके बहानेवाली जो नसें उनका मूल प्लीहा नाम फीहा है और रंजक नाम जो पित्त उसका जो स्थान, उसके विषे जो रक्तका स्थान उसे यकृत् कहिये. नाभीके बायें भागके विषे आमाशयके ऊपर जो है वह तिल है सो जल बहानेवाली जो नसें उनका मूल है और वह तिल उसको ढँक और कोखमें जो दो गोले हैं, उन्हे वृक्क कहिये. वे दोनों जठरका जो मेद उसे पुष्ट करते हैं और वृषण जो पोता सो वीर्यको ले चलनेवाली जो नसें उनका आधार है. और यह पुरुषार्थको ले चलनेवाला है.और लिंग गर्भको देनेवाला है. वीर्य और मूत्रका घर है.और हृदय मन,चित्त, बुद्धि, अहंकार इनका स्थान है,और ओजका घर है.और नाभि जो धमनीको आदि ले नसें उनका स्थान है. और सब शरीरमें सब नसें फैल रहीं हैं,नाभीसे और हांयकी वायुके और सब धातुवोंके संयोगसे नाभीका वायु है, सो हृदयके कमलमें जाय उसका स्पर्श कर कंठके बाहर जाय और कुछ विष्णुपदका जो अमृत उसे पीनेको नासिकाके द्वारा जाता है. पीछे यह नासिकाका पवन आकाशके अमृतको पीकर फिर मुख नासिका आदिके द्वारा वेग करके उदरमें आय प्राप्त होत है. फिर यह संपूर्ण देहको और जीव और जठराग्निको पुष्ट करता है.शरीरके और हृदयके प्राणपवनका जो संयोग उसे आयुर्बल कहिये और किसी समय इन दोनोंका संयोग दूर हो उसे मरण कहिये. इस पृथ्वीके विषे कोई प्राणी अमर नहीं है इस कारण मृत्यु है सो निवारण नहीं किया जासकता है वैद्य रोगको दूर करता है.मनुष्यके रोग साध्य हैं और वह मनुष्य

पथ्यादिक नहीं करे तो उस मनुष्यको साध्यरोगही असाध्य हो जाते हैं. और वह असाध्यरोग कुपथ्यके करनेवाले मनुष्यको निश्चय मार डालता है. इस कारण चतुर मनुष्य रोगोंसे शरीरकी रक्षा करै. कर्मविपाकके जाननेवालेको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारोंका साधन कहा है, सो मनुष्यका शरीरही है, जो पुरुष इस मनुष्यशरीरको मारै वह सबको मारता है. और जो इस मनुष्य शरीरकी रक्षा करता है वह रक्षा करता है. सातो धातु और सातो धातुवोंका मल और वायु, पित्त, सबकी कफ ये सब बराबर शरीरमें रहनेसे शरीरको पुष्ट करते हैं और ये सब घटे बढ़े और कुपित हुए शरीरका नाश करते हैं. इति सातोंका कला आदिका विचार संपूर्ण।

अथ आहार और परिपाक और गर्भकी उत्पत्ति
और बालकके पोषणादिकका लक्षण।

जो भोजनादिक करै सो हृदयकी प्राणपवनसे प्रेरित प्रथम आमाशयमें जाय प्राप्त होता है, तब यही षट्रसका आहार मधुरपनेको और फेनभावको प्राप्त होता, तब फिर वही आहार पाचके प्रभावसे कुछ एक पका अम्लपनेको प्राप्त होता है, पीछे आहार नाभीके समाननाम पवनसे प्रेरित छठी ग्रहणी कलामें प्राप्त होता है, तब वह आहार कोष्ठकी अग्निसे ग्रहणी कलामें पचके कड़वा हो जाता है. पीछे वहां आहार कोष्ठकी अग्निसे पचके रस हो जाता है, और वह अच्छेप्रकार पचे नहीं और कच्चा रहे तो उसी आहारका आंव हो जाता है, और कोष्ठकी अग्नि बलवान् हो तो आहारका रस मधुर हो जाता है, तब वही मधुर होय चिकनेपनेको प्राप्त होता है फिर वही रस भलेप्रकार पकाहुआ संपूर्ण इस शरीरकी धातुओंको पुष्ट करता है, तब यह रस अमृतकी उपमाको प्राप्त होता है और यह आहाररस मंदाग्निसे दग्ध हो तो उदरमें कड़वा रस हो जाय. अथवा खट्टारस हो जाय. अथवा यही रस विषके स्वभावको प्राप्त हो. अथवा यही रस रोगोंके समूहको शरीरमें कर दे

और शरीर में सूजन कर दे और यही आहारका रस इस शरीरमें सार अर्थात् बल है. और सारहीन हो तो यह मल पतला हो जाता है सो अच्छा नहीं और पियेहुए जलके सारको नसोंके द्वारा वायु शरीरमें पहुँचा देता है.और इसके निस्सारको पेडूमें प्राप्त कर मूत्र कर देता है सो वह मूत्र लिंगके द्वारा बाहर निकलताहै.और उस आहारका जो रस सो नाभीके समान पवनसे प्रेरित मनुष्यके हृदयमें जाय प्राप्त होता है और पीछे वह रस पित्तकरके पचे तो लालरंगका होता है फिर वह रस रुधिर होजता है. सो वह रुधिर सब शरीरमें रहता है और वह रुधिर चिकना भारीहै और बलवान् मीठाहै और यह दग्ध हुआ पित्तकी तरह होताहै, एक धातु सवाचार दिनमें पैदा होता है. पुरुषके १ महीनेमें भोजन किया आहार वीर्य हो जाता है,और स्त्रियोंका भोजन किया आहार १ महीनेमें स्त्रीधर्मद्वारा रज हो जाता है.फिर स्त्री और पुरुष दोनों मिलमैथुन करते हैं तब स्त्रीकी भगका शुद्ध रुधिर और पुरुषका शुद्ध वीर्य ये दोनों उस समय स्त्रीके गर्भस्थानमें गर्भ हो जाते हैं, पीछे वह भगके द्वारा नवें महीने बाहर निकले तब उसे बालक कहिये और उस समय स्त्रीके रज अधिक हो तो कन्या हो और उस समय पुरुषका वीर्य अधिक हो तो पुत्र हो और उस समय स्त्री और पुरुष इन दोनोंके रज और वीर्य बराबर हो तो नपुंसक पैदा हो. फिर परमेश्वरकी जैसी इच्छा हो सोई हो लिखा नियम होय नहीं.

अथ बालकको औषध देनेकी मात्रा लिखते हैं।

१ महीनेका बालक हो तो दूध,सहत, मिसिरी, घृतके साथ १ रत्ती औषध दीजे,पीछे जैसे २ बालक बढ़ै तैसेही औषध एक वर्षतक बढाता जाय पीछे १ मासेऔषधि १६ वर्षतक दीजे.फिरऔषधमात्रा ७० वर्षतक इतनीही राखिये फिर बालककी तरह औषधकीमात्रा घटाय दीजे. यह विधि कल्क, चूर्णादिककी है और काढाकी तोल इससे चौगुनी जान लीजे और बालकके काजल,उबटन,स्नान,कराया.कीजे और मही-

नेके महीने बालकको वमन कराय दीजे,और हरड़े घिस उसकी घूंटी नित्य दे और अन्नका ग्रास पांचवें वर्ष दीजे,और जुलाब १६ वर्षके उपरांत दीजे और मैथुन २० वर्षउपरांत कराइये.इस विधिसे मनुष्य चले तो उसके कभी रोग होय नही और उसके क्षुद्र अवस्था व्यापे नहीं ३० वर्षतक शरीरका मोटापन रहे है ५० वर्षपर्यंत त्वचाका गाढापन रहेहै ६० वर्ष पर्यंत नेत्रकी ज्योति अच्छी तरह प्रकाशित रहता है,७० वर्ष पर्यंत मनुष्यके वीर्य शरीरमें अधिक रहता है ८० वर्षपर्यंत मनुष्यके शरीरमें पराक्रम अधिक रहता है ९० वर्षपर्यंत अच्छीतरह सान रहता है १०० वर्षपर्यंत बोलने और हाथ पगोंमे बल मूत्रका स्थान रहता है ११० वर्षपर्यंत स्मरणमात्रका स्थान रहता है १२० वर्षपर्यंत प्राणमात्र शरीर्में रहते हैं.यह मनुष्यका शरीर निरोग रहे तोआयुर्बलका प्रमाण १२० वर्षका है.

इति आहारका परिपाक गर्भकी उत्पत्ति और बालकके पोषणादिक संपूर्ण ॥

अथ वायुकी प्रकृतिका लक्षण लिखते हैं ।

छोटे केश हों और शरीर कृश और रूखा हो वाचाल मन हो आकाशमें रहनेवाले स्वप्न हों ये लक्षण हों तो वायुकी प्रकृति जानिये.

अथ पित्तकी प्रकृतिका लक्षण ।

युवा अवस्थामें सुफेद बाल आवें बुद्धिमान् होय, और पसीना बहुत आवे, क्रोधी हो, स्वप्नमें तेजी दीखे ये लक्षण हो, तो पित्तकी प्रकृति जानिये.

अथ कफकी प्रकृतिका लक्षण लिखते हैं ॥

जिसकी गंभीर बुद्धि हो, स्थूल अंग हो, चीकने केश हों, बलवान् हो स्वप्नमें जलाशय देखे ये लक्षण जिसमें होय उसे कफकी प्रकृति कहिये.

अथ मेदका लक्षण ।

कफ और तमोगुण अधिक होय तो मूर्छा होय और वायु, पित्त,

रजोगुण अधिक हो तो घुमेर और भ्रांति होय ३, कफ और तमोगुण अधिक हो तब भोर आवे, भ्रांति हो २, कफ वायु तमोगुण अधिक हो तो तन्द्रा हो ४ और बलजाता रहे तो ग्लानि हो, दुःख और अजीर्ण और खेद इनमें भी ग्लानि हो ५, और बल थके उत्साह नहीं हो उसे आलस्य कहिये ६इसे आदि ले बुद्धिमान् पुरुष और भी जान ले ७.इति शरीरका संक्षेप निरूपण संपूर्ण ।

दोहा—सप्त कलाशय धातु मल, उपधातु त्वच जान ॥
सप्त सप्त ये छह सदा, नरशरीर परिमान ॥ १ ॥

चौपाई—दोसै दस संधिको जाने,हाड तीनसौं३००गिनती ठाने ॥
एकसौ सात है मर्मस्थान, शिरा सातसै तनमें जान॥२।

दोहा—यह शारीरक मैं कह्यो,निजबुद्धी अनुसार ॥
पंडितजन सुदया करो, मेरा गुना गुना तिवार ॥३॥

संस्कृत जहां न होतही, भाषा छंद न होय ॥
इस प्रकार जो ग्रंथ है,वार्तिक जानो सोय ॥ ४ ॥

अरल्ल—कहना साधुरामसुखदासका,वार्तिक कर देवो छंद नही कामका॥
ताते हमैं विचार वार्तिक यह कांहीं,छंदग्रंथ हैं बहुत काजयाहीमेंसरही

अंग्रेज बहादुर राजमें, कियो ग्रंथ हम आन ॥
झाझरको है परगनो, रोहतक जिलो सुजान ॥६॥
दादूपंथी साधु हैं, माधोदास कह नाम ॥
वैद्यकमें परसिद्ध हैं, बसैं तलाबी गाम ॥७॥
पुनि बेरीमें बसत है, लोक हेत सब काम ॥
जो औषध चाहे, किसे, सो आवे मम धाम ॥८॥
यह ग्रंथ पूरण भया बहुगुणकी है खान ॥

जो चित देवे समझके, होवे सुख जस मान ॥९॥
संवत् १९५३ उन्नीसे तिरपन, श्रावण मास तहां जान ॥
शुक्लपक्ष द्वितीया तिथि, तादिन पूरण मान ॥१०॥

इति औषधिप्रकाश भाषाटीका संपूर्ण

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

हरिप्रसाद भगीरथजी.

कालिकादेवीरोड–रामवाडी–मुंबई.